अगोहा तीर्थ

सामाजिक चेतना का प्रगतिशील हिन्दी मासिक

वर्ष-22 | मार्च 1990 | अंक : 1

अतिथि सम्पादक

डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त

विशेषांक

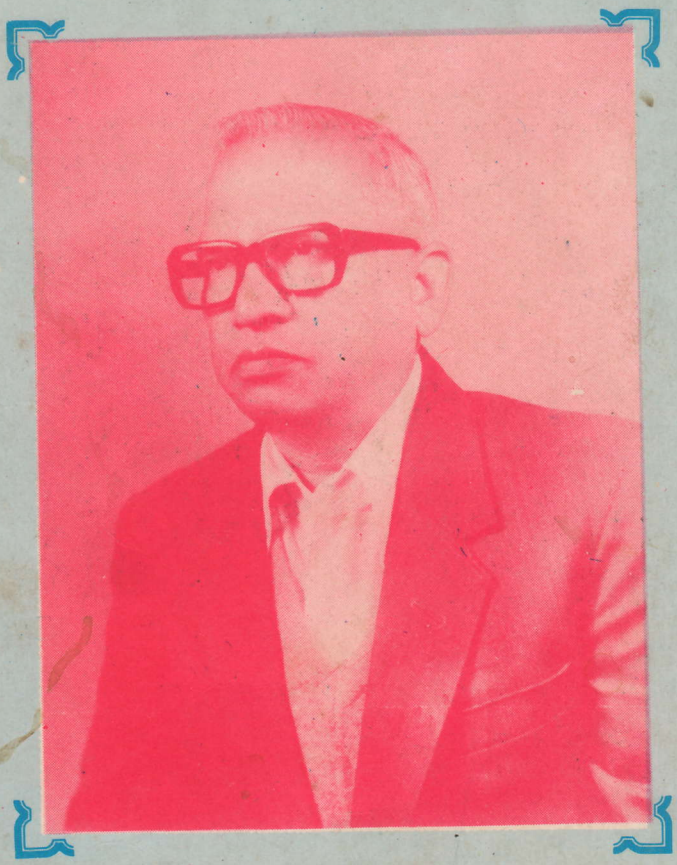

जन्मतिथि : चैत्र कृष्णा द्वादशी संवत् 1990 (12 मार्च 1934)

जन्म दिवस 24 मार्च 1990

कवितायें-उद्गार एवं गतिविधियाँ

With best compliments from:

**MOONBEAM MATTRESSES.
THEY'RE SO COMFORTABLE YOU JUST WON'T FEEL LIKE GETTING OFF.**

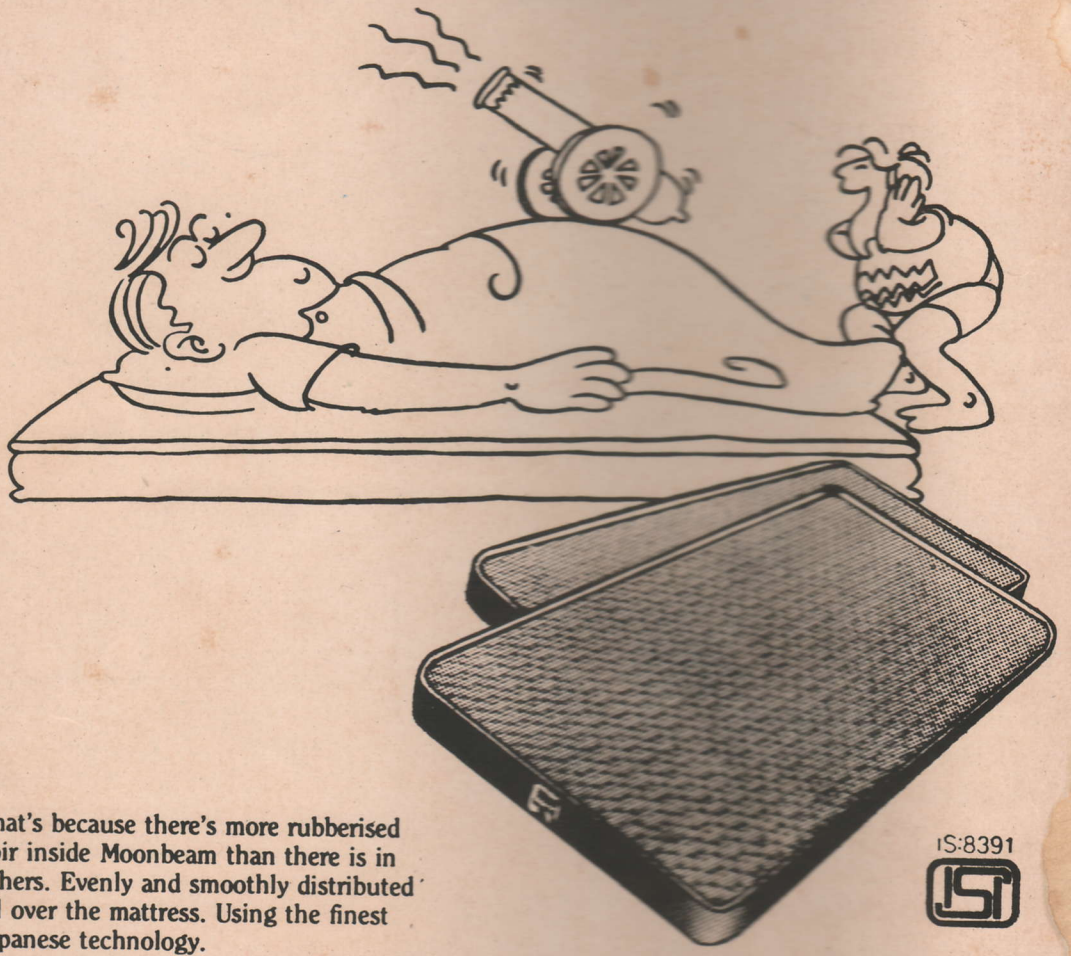

That's because there's more rubberised coir inside Moonbeam than there is in others. Evenly and smoothly distributed all over the mattress. Using the finest Japanese technology.
So why lose sleep over any other brand?

Buy a Moonbeam mattress. You'll sleep so soundly, you just won't feel like getting off.

IS:8391

Diamond Coir (India) Pvt. Ltd.
C-135, Mansarovar Garden
New Delhi-110015
Phone: 5414040

MOONBEAM
MATTRESSES, PILLOWS & QUILTS

संस्थापक :
स्व० मास्टर लक्ष्मीनारायण

☐ संरक्षक
श्री बनारसी दास गुप्ता
सेठ केदारनाथ मोदी
श्री गिरिलाल गुप्ता
श्री लालता प्रसाद गुप्ता

☐ परामर्शक
श्री घनश्याम दास गुप्ता
१०१-प्रिंस कालोनी, रामनगर
शाहजानाबाद, भोपाल (म. प्र.)
श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल, नि
अखिल चिट एण्ड फाइनैंस (प्रा
3993ए/2 (प्रथम मंजिल) र
चावड़ी बाजार, दिल्ली-6
फोन-2917733, 2912746

☐ परामर्शक सम्पादक
श्री सुदर्शन कुमार सवारा
ए-२/१०० सफदरजंग एन्क्लेव,
फोन : ६०८३५८

☐ अतिथि सम्पादक
डॉ० विष्णु चन्द्र गुप्त
१६१०/१४५ गणेशपुरा 'ए' त्रि
दिल्ली-११००३५
दूरभाष : ७१२५२६७

☐ संचालक व सम्पादक
श्री चन्द्रमोहन गुप्ता
२१/३३, शक्ति नगर, दिल्ली-७
आजीवन शुल्क : १५०/- रु
वार्षिक शुल्क : २५/- रु

अग्रोहा तीर्थ

सामाजिक चेतना का प्रगतिशील हिन्दी मासिक

अग्रसेन जयते

संस्थापक :
स्व० मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

☐ संरक्षक
श्री बनारसी दास गुप्ता
सेठ केदारनाथ मोदी
श्री गिरिलाल गुप्ता
श्री लालता प्रसाद गुप्ता

☐ परामर्शक
श्री घनश्याम दास गुप्ता
१०१-प्रिंस कालोनी, रामनगर
शाहजानाबाद, भोपाल (म. प्र.)
श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल, निदेशक
अखिल चिट एण्ड फाइनैंस (प्रा.) लि.
3993ए/2 (प्रथम मंजिल) रघुगंज
चावड़ी बाजार, दिल्ली-6
फोन-2917733, 2912746

☐ परामर्शक सम्पादक
श्री सुदर्शन कुमार सचारा
ए-२/१०० सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली
फोन : ६०८३५८

☐ अतिथि सम्पादक
डॉ० विष्णु चन्द्र गुप्त
१६१०/१४५ गणेशपुरा 'ए' त्रिनगर
दिल्ली-११००३५
दूरभाष : ७१२५२६७

☐ संचालक व सम्पादक
श्री चन्द्रमोहन गुप्ता
२१/३३, शक्ति नगर, दिल्ली-७
आजीवन शुल्क : १५०/- रु०
वार्षिक शुल्क : २५/- रु०

इस अंक में पढ़िये

☐ सम्पादक की कलम से-'जीवन परिचय'
☐ डॉ० बिष्णु चन्द्र गुप्त द्वारा रचित काव्य रचनाएं
☐ सन्देश ☐ उद्गार
☐ चित्रात्मक गतिविधियां
☐ पारिवारिक व प्रेरक मित्र एवं सहयोगियों के चित्र
☐ वैश्य इन्टरनेशनल परिवार – एक नजर में

खेद

दिसम्बर 89 तथा जनवरी व फरवरी 1990 अंक प्रकाशित नहीं हुए हैं अतः सदस्य इन अंकों को न मांगें। मार्च 90 का अंक आपके हाथ में है। असुविधा के लिये क्षमा चाहते हैं।

—सम्पादक

इन्द्रप्रस्थ भारती

हिन्दी अकादमी की त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

सम्पादक : डा० नारायणदत्त पालीवाल

यदि आप चाहते हैं कि बेहतर पढ़ने को मिले तो आपको

इस जरूरत को

'इन्द्रप्रस्थ भारती'

हिन्दी अकादमी की साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका पूरा करती है, जो महज़ एक पत्रिका नहीं पूरी किताब है।

जिसमें वर्ष भर में छः सौ पृष्ठों की साहित्यिक सामग्री उपलब्ध कराई जायगी।

जिसमें देश के जिम्मेदार लेखक हिस्सेदारी करेंगे।

यह पत्रिका समकालीन साहित्य का रचनात्मक मूल्यांकन और गति-विधियों को प्रस्तुत करती है। एक सौ बावन से अधिक पृष्ठ की इस पत्रिका के एक अंक का मूल्य पांच रुपये, वार्षिक बीस रुपये। आपका सहयोग हमें बेहतर सेवा के लिए और अधिक प्रोत्साहित करेगा।

वार्षिक शुल्क मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर द्वारा इस पते पर भेजें :—

सचिव,

हिन्दी अकादमी, दिल्ली

ए-26/27, सनलाइट इंश्योरेंस बिल्डिंग,

आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

सम्पादक की कलम से—

जीवन परिचय

डॉ० विष्णु चंद्र गुप्त

सम्पादक

अग्रवाल समाज के सुपरिचित कार्यकर्त्ता बहुमुखी जागरूक कवि व लेखक श्री विष्णुचन्द्र गुप्त हिन्दी साहित्य के कर्मठ, उत्साही योग्य सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में प्रसिद्ध हैं। आपका जन्म 12 मार्च 1934 में पल्ला ग्राम निवासी लाला हुकमचन्द जी के यहां हुआ। दिल्ली से हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आपने पंजाब विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। सन् 1953 में अध्यापन शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् आपने अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया तथा सम्प्रति राजकीय विद्यालय में अध्यापक हैं।

श्री गुप्त जी प्रारम्भ से ही सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि लेकर सक्रिय योगदान देते रहे हैं। 1953 में आपने समाज शिक्षा केन्द्र के माध्यम से प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का कई वर्षों तक सफल आयोजन किया। समाज शिक्षा केन्द्र में इन्चार्च रहकर एक महत्वपूर्ण संरचनात्मक कार्य किया तथा जगह-जगह प्रौढ़ शिक्षा कक्षायें प्रारम्भ कराई। वाद-विवाद ग्रुप के संयोजक रहे तथा दिल्ली की अन्तर-केन्द्रीय प्रतियोगिता में वाद-विवाद में द्वितीय पारितोषिक प्राप्त किया।

सन् 1958 में दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सदर बाजार मण्डल के मन्त्री बने तथा 1968 तक उस पद पर कार्य करते रहे। आपके द्वारा अनेक कवि सम्मेलन, हिन्दी व्यवहार प्रदर्शनी तथा हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिये एक सुसंगठित संगठन के साथ सराहनीय सेवा की गई आप हिन्दी प्रचार, प्रसार और व्यवहार के माध्यम से सदैव दृढ़ प्रतिज्ञ एवं अग्रगण्य रहे हैं।

सन 1959 में आर्य समाज सदर बाजार के सर्वसम्मति से मन्त्री चुने गये तथा सहयोग तथा परिश्रम का योगदान कर आर्य समाज की अभूतपूर्व सेवा की। सन 1967 में विश्व हिन्दू परिषद् सदर बाजार क्षेत्र के संयोजकत्व का भार आपको सुपुर्द किया गया। इस अवधि में आपने संगठन कार्य का विस्तार किया।

व्यक्ति समाज की ईकाई है, अतएव समाज के संरचनात्मक निर्माण में इस व्यक्ति का महत्वपूर्ण योगदान है। इसी धारणा की दृष्टिगत रखते हुए श्री गुप्त समाज से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। समाज के सभी वर्गों और क्षेत्रों में बिना किसी भेदभाव के कार्य करते हुए श्री गुप्त जी सर्वप्रिय रहे हैं। देश पर विदेशी आक्रमणों के अवसर पर नागरिक सुरक्षा कार्यक्रमों में भाग लेना, बाढ़ पीड़ितों की सहायता कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेना क्षेत्र निवासियों की सुविधा के लिये सफाई, जल तथा बितरण आदि कार्यों की व्यवस्था शीघ्रातिशीघ्र कराने में विशेष कुशल हैं, सामाजिक सुरक्षा के अन्तर्गत रायफल चलाना, अग्नि शमन, बचाव कार्य प्राथमिक चिकित्सा आदि में सिद्धहस्त हैं।

सन् 1962 में श्री गुप्त ने वैश्य संगठन सभा सदर बाजार के गठन के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया तथा वर्षों तक सहमन्त्री तथा मन्त्री रहे तथा सभा का कुशल संचालन किया और सभा को नई दिशा प्रदान की। सन् 1966 में

श्री अग्रसेन युवक मंडल का गठन कर युवकों में सामाजिक कार्य करने की प्रेरणा जागृत की तथा दहेज विरोधी अभियान मद्यपान तथा मंगड़ा के विरोधी कार्यक्रमों की संरचना की आप कई वर्षों तक इसके संचालक एवं अध्यक्ष रहे। इन्हीं दिनों आपने भारतीय स्वयं सेवक मण्डल के गठन में सहयोग दिया तथा मन्त्री पद को सुशोभित किया। मण्डल का पंजीकरण कराकर धार्मिक एवं सामाजिक अवसरों पर प्रबन्ध, व्यवस्था एवं सेवा कार्य हेतु युवकों को संगठित किया।

श्री गुप्त ने मौहल्ला पंचायत, सुधार समिति आदि जैसी अनेक छोटी-बड़ी समितियों और संस्थानों के माध्यम से जन सेवा कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 1968 में आप त्रिनगर में आये और यहां भी जन सहयोग कर भारतीय साहित्य संस्थान के मन्त्री पद पर रहकर समाज सेवा में लग गये। त्रिनगर (रामपुरा) अग्रवाल सभा के मन्त्री पद पर रहकर त्रिनगर के अग्रवाल समाज को संगठित कर समाज के असहाय बन्धुओं के लिए महत्वपूर्ण सहायता कार्य सम्पन्न किये जैसे - विधवाओं को सिलाई की मशीनें, निर्धन छात्रों को पुस्तकें, वर्दी तथा नौकरी दिलाने की व्यवस्था, निर्धन कन्या विवाह सहायता आदि। सभा के माध्यम से ही एक प्रेरक तथा संग्रहणीय स्मारिका का प्रकाशन किया। त्रिनगर के अग्रवाल संगठनों को एक मंच पर लाने के लिए किए गये प्रयत्नों में समर्पित भूमिका निभाई। इसके पश्चात श्री गुप्त जी अग्रवाल समाज त्रिनगर के संस्थापक सदस्य तथा उप-महामन्त्री रहे।

1975 में श्री विष्णु चन्द्र गुप्त ने अग्रवाल समाज को प्रकाशनों तथा रचनात्मक कार्यों से प्रेरित करने की दृष्टि से श्री अग्रसेन समिति, दिल्ली की स्थापना की। समिति के माध्यम से कई प्रकाशन आपने निकलवाये हैं जिनमें अग्रकाव्य भी सम्मिलित है। अग्रकाव्य अग्रवाल बन्धुओं की पहली काव्य पुस्तक कही जा सकती है। श्री अग्रसेन समिति के माध्यम से बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ स्व० डॉ० नरेश चन्द्र गुप्त तथा अन्य डॉक्टरों का सहयोग प्राप्त कर चिकित्सा शिविर का आयोजन किया।

कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री गुप्त जी समाज सुधार तथा अन्य सेवा कार्य करते हुए साथियों को प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि यदि अमुक कमियां या अभाव न होते तो संगठनों के बनाने की ओर विकास तथा कार्य करने की आवश्यकता ही क्या थी। वे करनी और कथनी में साम्य बनाये रखते हैं। किसी छोटे से छोटे कार्य, दरी बिछाने से लेकर मंच संचालन, भाषण तथा कविता व्यंग्य विनोद आदि बड़े-बड़े कार्यों को सम्पन्न करने की क्षमता रखते हैं।

समाज सेवा के साथ-साथ श्री गुप्त जी खेल-कूद तैराकी घुड़सवारी, ड्राईविंग, फोटोग्राफी, फायरिंग का शौक तथा अभ्यास रखते हैं। होम्योपैथिक चिकित्सा में भी आप रुचि रखते हैं तथा इसमें सेवा कर रहे हैं। हिन्दी इंगलिश, संस्कृत आपकी शैक्षिक भाषायें हैं। आपने गुरमुखी तथा उर्दू भी सीखी है। कवि, लेखक, अथवा समाज सुधारक योगी, प्राय: यायावर प्रकृति के होते हैं और होना प्राय: आवश्यक भी है क्योंकि बिना अनुरूप आभास के दूसरों के दर्दों का अनुभव होना प्राय: मुश्किल ही है, अतएव भ्रमण (घूमना) आपका प्रिय शौक है। मानव संकीर्तन मण्डल त्रिनगर के माध्यम से आपने यदा-कदा कीर्तन इत्यादि का भी आयोजन कर जनमानस का हृदय जीत लिया है। दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन में 1968 से ही आप कार्यकारिणी के सदस्य रहे हैं। साथ ही दिल्ली के प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन के आप कोषाध्यक्ष मंत्री तथा अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के गठन के समय से ही कार्यकारिणी के सदस्य रहे हैं।

वर्ष 1975 में त्रिनगर में दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन, दयानन्द मंडल का गठन किया गया और अब इसके सर्वसम्मति से मंत्री चुने गये। मंडल के माध्यम से क्षेत्र में कवि-सम्मेलन एवं हिन्दी व्यवहार प्रदर्शनी तथा साहित्यिक गोष्ठियां, तुलसी जयन्ती तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये निरन्तर कार्यरत हैं।

श्री गुप्त कजरारी (त्रैमासिकी) पत्रिका से दस वर्ष तक जुड़े रहे। पत्रिका ने 1981 में उनके सम्मान में विशेषांक प्रकाशित कर अभिनन्दन किया। आपके द्वारा रचित अग्रवाल झण्डा गान को अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन द्वारा मान्य घोषित घोषित किया गया। आपने लगभग 20 स्मारिका, परिचय पुस्तिका, अग्रकाव्य, अग्रगीतिका, अग्रोहा दर्शन, उपासना, आराधना, बजरंग बलि महिमा आदि का भी सफल सम्पादन लेखन एवं प्रकाशन किया है।

अग्रोहा तीर्थ हिन्दी मासिक के प्रकाशन में अतिथि सम्पादक के रूप में दस वर्ष से पत्रिका को सजाने, संवारने एवं दिशा देने में तत्पर रहे हैं। अग्रोहा तीर्थ पत्रिका आपके 57वे जन्म दिवस के अवसर पर विशेषांक प्रकाशित कर तथा उनका अभिनन्दन कर अपने को गौरान्वित अनुभव करती है। प्रस्तुत अंक में उनके द्वारा रचित कवितायें, प्रेरक मित्रों एवं सहयोगियों द्वारा उद्गार एवं चित्रात्मक गतिधिधियां प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। इस अवसर पर हम सभी विज्ञापन दाताओं एवं मित्रों का सहयोग के लिये आभार व्यक्त करना भी अपना कर्तव्य समझते हैं। सामाजिक कार्यकर्त्ताओं का सम्मान एवं अभिनन्दन समाज का अभिनन्दन है, प्रेरणा है, मार्ग दर्शन है। अग्रोहा तीर्थ परिवार उनकी दीर्घायु के लिये एवं सतत् समाज सेवा में लीन रहने के लिये हार्दिक शुभ-कामनायें करता है।

—चन्द्र मोहन गुप्ता

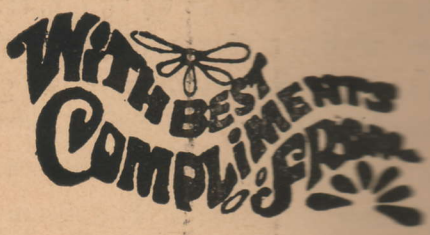

With Best Compliments From:

Garg Textiles & Co.

Wholesale Dealers in :

All kinds of Towels

4642/4, Mahabir Bazar, Cloth Market,
Delhi - 110006

Phones :
Offi. 2511447, 2526583 Resi. 2283684

★

Sister Concerns :

MUSADDI LAL ASHA RAM
ASHWANI YARN AGENCIES

Prop.
Ashwani Kumar Garg

बनारसी दास गुप्त
उप-मुख्य मन्त्री
हरियाणा, चण्डीगढ़

फरवरी 6, 1990

संदेश

प्रिय श्री गुप्ता जी,

पत्र आपका दिनांक 2-2-90 का प्राप्त हुआ। यह जानकर हर्ष हुआ कि हिन्दी मासिक अग्रोहा तीर्थ मार्च, 1990 का अंक 'डॉ० विष्णु चन्द्र गुप्त विशेषांक' के रूप में प्रकाशित होने जा रहा है। डॉ० विष्णु चन्द्र गुप्त से मैं भली-भांति परिचित हूँ। एक सफल कवि और साहित्यकार होने के नाते वे अपनी कविता द्वारा समाज को कुरीतियां त्यागने और संगठित बनाने में प्रेरित करते रहते हैं। मुझे अनेक बार समारोहों में उनको सुनने का अवसर प्राप्त हुआ है। मैं उनके विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ।

मेरी भगवान से प्रार्थना है कि श्री विष्णु चन्द्र गुप्त दीर्घायु हों ताकि वह लम्बे समय तक समाज की सेवा करते रहें।

आपका

ह०
बनारसी दास गुप्त

श्री चन्द्र मोहन गुप्ता
21/33, मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल मार्ग
शक्तिनगर, दिल्ली-110007

With best compliments from :

Atlas Transport Company (P) Ltd.

Regd. & Head Office :

9667/1, Sadar Thana Road,

Paharganj, New Delhi-110055

Phones : 517638, 529820, 777825

Admn. Office :

17, New Colony, Model Basti,

New Delhi - 110 005

Grams : 'ATLASTRANS' *Phone : 518520*

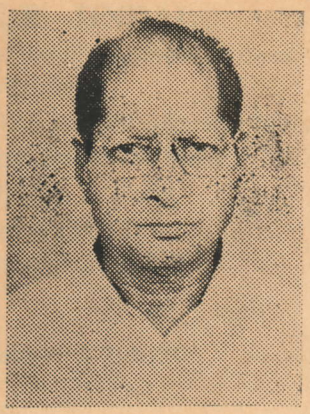

रामेश्वर दास गुप्त
संस्थापक- अ०भा० अग्रवाल सम्मेलन
डी-35, साउथ एसक्टैंशन भाग-एक
नई दिल्ली-110049
फोन-616351, 619125

समर्पित समाज सेवी : श्री विष्णु चन्द्र गुप्त

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त के साथ मेरा सम्पर्क लगभग तीस वर्ष पूर्व हुआ था। उस समय हम दोनों दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की बैठकों के कार्यक्रमों में आए दिन मिलते थे। मैं करौल बाग मण्डल की ओर से और श्री विष्णु चन्द्र गुप्त सदर बाजार मण्डल की ओर से सम्मिलित होते थे। आप हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए तन-मन-धन से निरन्तर लगे हुये हैं।

1975 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की स्थापना के बाद आप अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के साथ जुड़ गये। सम्मेलन में आपने अनेक पदों पर कुशलता-पूर्वक कार्य किया। दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन में भी आप अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

आप 12 मार्च 1990 को अपने जीवन के 56 वर्ष पूरे कर रहे हैं। अग्रोहा तीर्थ के सम्पादक श्री चन्द्र मोहन गुप्ता आपके सम्मान में विशेषाँक का प्रकाशन कर रहे हैं इसके लिये मैं उनकी सराहना करता हूँ, प्रशंसा करता हूँ।

श्री विष्णुचन्द्र गुप्त ने एक लेखक तथा कवि के रूप में अच्छी ख्याति प्राप्त की है। मैं परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह श्री गुप्त जी को सदा निरोग, स्वस्थ और सक्रिय बनाये रखें, जिससे वह समाज की निरन्तर सेवा करते रहें।

आपका

ह०
रामेश्वर दास गुप्त

श्री चन्द्र मोहन गुप्ता
21/33, मा० लक्ष्मी नारायण अग्रवाल मार्ग
शक्तिनगर, दिल्ली-110007

With best compliments from :

Gram : AMANEXPO
Telex : 31-61197 SKJ IN

Phones : 742469
742720

Mangla Exports Pvt. Ltd.

Factory :

A-88, Wazirpur Industrial Area,
Delhi - 110 052 (INDIA)

R. K. MANGLA
Mg. Director

J. R. JINDAL
Ex. Hony. Magistrate 1st Class
President :
Akhil Bhartia Agarwal Mahasabha
The Jindal Oil Mills
561, G. T. Road,
Delhi-110032
Phone : 2282227

Dated : 7-2-1990

MESSAGE

Dear Shri Chandra Mohan,

I thank you for your letter dated 2-2-1990 and appreciate that you are bringing out a Supplement to mark the 57th birthday of Dr. Vishnu Chander Gupta, Editor of 'Agroha Tirath' our Agarwals monthly News Bulletin.

Vishnu Chander ji has undoubtedly done a great service not only to the Agroha Tirath but to the entire community. His contribution for the welfare of community had been outstanding and in recognition of his services, therefore, your efforts to bring out Special Supplement is really commendable and I sincerely congratulate you at rhis occasion.

I am closely associated with the service to Agarwal community during the past several decades and have know the contribution made by Dr. Vishnu Chander ji. On his 57th birthday I wish him many returns to the day and pray to the Almighty to spare him for many more years to serve the community and particularly those who need our assistance and help. Please convey my blessings to Vishnu Chander ji who is nearly ten years younger to me.

With regards,

Yours sincerely,

Sd/-
J. R. JINDAL

Shri Chandra Mohan Gupta
21/33, M. Lakshmi Narain Agarwal Marg,
Shakti Nagar, Delhi-7

S. N. JINDAL
A. P. JINDAL

Phones : Resi. 518696
733463
Fac. 739663

DEEPAK BOX FACTORY

JINDAL PACKAGING INDUSTRIES

Manufacturers of :

★ Corrugated Sheets ★ Rolls ★ Printed Cartons and
★ Heavy Duty Containers

Office :
10954, Gali Mandir Wali,
Doriwalan, Karol Bagh,
New Delhi - 110005

Factory :
A-105, Shastri Nagar,
(Near Shastri Buth)
Delhi - 110052

जय नारायण खण्डलवाल (मेठी)
अध्यक्ष
अ० भा० खण्डेलवाल वैश्य महासभा
फोन-कार्यालय 2511674 274639
निवास-5715293 5729492
6/60 W.E A., करौलबाग
नई दिल्ली-110005

दिनांक : 15-3-1990

सन्देश

प्रिय श्री चन्द्र मोहन जी

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि समाज सेवी डॉ० विष्णु चन्द्र जी के सेवा कार्यों के लिये अग्रोहा तीर्थ हिन्दी मासिक डॉ० विष्णु चन्द्र गुप्त विशेषांक मार्च 1990 प्रकाशित कर रही है। डॉ० गुप्त काफी समय से हिन्दी सेवा करते रहे हैं। अग्रोहा तीर्थ हिन्दी मासिक का सम्पादन भी वे पिछले 10 वर्षों से करते हुये अग्रवाल समाज व वैश्य समाज की सेवा कर रहे हैं।

डॉ० गुप्ता साहित्य व कविता में अपना स्थान रखते ही हैं, साथ ही वे जो भी कार्य करते हैं समर्पित भाव से करते ही हैं। वास्तव में उनका अभिनन्दन करना समाज के गौरव की बात है।

इस अवसर मैं डॉ० विष्णु चन्द्र गुप्त को बधाई देते हुये शुभकामना करता हूँ कि वे समाज व राष्ट्र की सेवा करते हुये सतायु हों।

आपका

ह०
जयनारायण खण्डेलवाल

श्री चन्द्र मोहन गुप्ता
21/33, मा० लक्ष्मी नारायण अग्रवाल मार्ग
शक्ति नगर, दिल्ली-110007

With best compliments from :

SHYAM SUNDER GUPTA

Phone : 251 0117

SHIKHAR CHEMICALS

Dealers of :

Chemicals, Dyes, PVC Raw Materials

990, Gali Teliyan, Tilak Bazar,
DELHI - 110 006

प्रदीप मित्तल, महामन्त्री
अ०भा० अग्रवाल सम्मेलन
डी-57 साउथ एक्सटैंशन भाग-I, नई दिल्ली
दूरभाष : 624018, 694018

संदेश

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त को मैं गत 15 वर्षों से जानता हूँ। अग्रवाल समाज में इनका व्यक्तित्व सुपरिचित है। इनके द्वारा अनेकों युवा कार्यकर्त्ताओं को समाज सेवा की प्रेरणा एवं दिशा मिलती रही है। अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल सम्बन्धी साहित्य का खोजपूर्ण प्रकाशन आप करते रहे हैं। आपका सारा जीवन समाज सेवा के लिये समर्पित है। आप एक अच्छे कवि, लेखक, वक्ता एवं विचारक हैं।

आपके द्वारा रचित अग्रवाल झंडा गान को अखिल भारतीय स्तर पर अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन द्वारा मान्यता प्रदान की गई है। सभी जगह यह गान स्वीकार कर आयोजनों में गाया जाता है।

अग्रोहा तीर्थ के अतिथि सम्पादक के रूप में भी आपकी सेवा से समाज को मार्ग दर्शन मिला है। उनके अभिनन्दन में विशेषांक का प्रकाशन कर अग्रोहा तीर्थ परिवार ने एक उत्तम कार्य किया है। मैं श्री गुप्त जी की दीर्घायु की कामना करता हूँ।

भवदीय
ह०
प्रदीप मित्तल

श्री चन्द्र मोहन गुप्त
21/33, मा० लक्ष्मी नारायण अग्रवाल मार्ग,
शक्तिनगर, दिल्ली-110007

WITH
BEST
COMPLIMENTS
FROM

UPHAR TRADING & CHIT FUND (INDIA) PVT. LTD.

Regd. Office :

17/15, Mandir Wali Gali, Yusaf Sarai,

New Delhi - 110 016

Phones : Offi. 651748, 656691 Resi. 660604

Resi. : N-18, Green Park Extn., New Delhi-110006

Suresh Chand Gupta

रतन लाल गर्ग
अध्यक्ष : दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन

R-7, नेहरू एन्कलेव (कालका जी)
नई दिल्ली-110019
दूरभाष : 6435220, 6430284

सन्देश

डॉ० विष्णु चन्द्र गुप्त के बारे में एक विशेषांक प्रकाशित करने की आवश्यकता को अग्रोहा तीर्थ ने सोचा, इस महत्वपूर्ण विचार के लिए अग्रोहा तीर्थ पत्रिका को हार्दिकबधाई ।

डॉ० विष्णु चन्द्र गुप्त जी को मैं व्यक्तिगत रूप से पिछले 5-6 वर्षों से ही जानता हूँ । मैं इनके जितना पास आया हूँ उतना ही इनको समाज सेवा में अधिक गहराई में पाया है । जैसे किसी सोने-चांदी-हीरे की खान को अधिक गहराई से खोदा जाता है तो उतनी ही शुद्ध/साफ धातु प्राप्त होती है, उसी प्रकार डॉ० गुप्त जी के साथ जितना अधिक सम्पर्क बढ़ता है उनसे उतनी ही अधिक समाज सेवा की प्रेरणा मिलती है और इस प्रकार उनके प्रति श्रद्धा बढ़ती ही रहती है । इस विशेषांक रूपी यज्ञ में अपनी आहुती इस लेख द्वारा देकर न केवल अपना कर्तव्य ही पूरा करूंगा अपितु हार्दिक संतोष भी प्राप्त होगा ।

डॉ० विष्णु चन्द्र गुप्त जी ने अपना सर्वस्व जीवन बालकपन से ही समाज सेवा में लगाया है और अपने लेख, कविता, भाषणों के द्वारा अग्रवाल समाज के अन्दर जागृति लाने का अथक प्रयत्न किया है । ये न केवल 'दिल्ली प्रदेश अग्रवाल सम्मेलन' के मंत्री के रूप में अपितु अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के सर्वस्व आयोजनों में तन-मन-धन से सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं । महाराजा अग्रसेन, अग्रवाल झंडे गान के लिये इनके हृदय भेदक गान को अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन ने समस्त भारत से प्राप्त लेख, गानों में से चयन करके अपनाया तथा अधिकृत किया । ये गान न केवल भारत, अपितु दूसरे देशों में भी महाराजा अग्रसेन एवं अग्रवाल समाज के बारे में गाये जाते हैं ।

डॉ० गुप्त जी एक बीच की श्रेणी के परिवार में होते हुए तन-मन-धन से अग्रवाल समाज की सेवा करते रहे हैं । वे एक कर्मठ कार्यकर्ता, एक मधुर कवि तथा विचारक हैं । इनकी याद से स्व० मास्टर लक्ष्मीनारायण जी एवं श्री निरंजन लाल गौतम जी जैसे और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की याद आती है । ईश्वर डॉ० गुप्त जी को स्वस्थ, दीर्घायु, परिवार में कुशलता एवं समृद्धि प्रदान करें जिससे समाज को इनके अनुभव का अधिक से अधिक समय तक लाभ प्राप्त हो सके । अन्त में मैं डॉ० गुप्त जी को अपनी ओर से सम्मान प्रकट करते हुए हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ, तथा 'अग्रोहा तीर्थ' का इस शुभ कार्य के लिये धन्यवाद करता हूँ ।

भवदीय
ह०
रतन लाल गर्ग

श्री चन्द्र मोहन गुप्ता
21/33, मा० लक्ष्मी नारायण अग्रवाल मार्ग
शक्ति नगर, दिल्ली-110007

With best compliments from :

ANAND ASSOCIATES

Dealers and Commission Agents of :

All kinds of Chemicals, Dyes and Intermediates

234, Katra Peran, Tilak Bazar,
Delhi - 110 006

Phones : Offi. 2922524
Resi. 7214165, 744736

NIRANJAN GARODIA

प्रहलाद राय गुप्ता, प्रधान
श्री अग्रसेन इन्जीनियरिंग एण्ड
टैक्नीकल कालेज सोसाइटी अग्रोहा
1-हैली रोड, नई दिल्ली-110001
फोन-कार्या० 518520, नि० 3329056

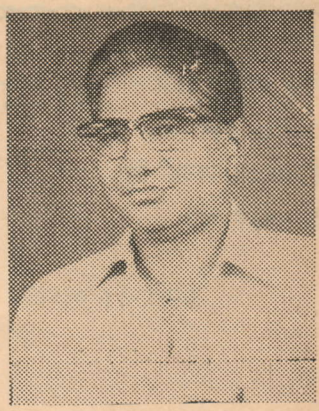

सन्देश

सम्पादक अग्रोहा तीर्थ

आपका पत्र मिला। आप कर्मठ समाजसेवी कवि एवं लेखक श्री विष्णु चन्द्र गुप्त के सम्बन्ध में विशेषांक प्रकाशित करने जा रहे हैं यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त को मैं गत 20 वर्षों से जानता हूँ। वे एक कुशल संगठनकर्ता, मिलनसार व्यक्तित्व वाले निःस्वार्थ समाज सेवी हैं। दिल्ली के अग्रवाल समाज के कार्यक्रमों में निरन्तर उपस्थिति तथा वैचारिक योगदान एवं पत्रकारिता के योगदान से इन्होंने समाज कार्य के लिए सम्पर्क सूत्र जुटाये हैं जो समाज की भावी योजनाओं के लिए आधार बने हैं।

मैं उनके दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन के लिए शुभकामना करता हूँ तथा 'अग्रोहा तीर्थ' पत्रिका को इस शुभ कार्य के लिए बधाई देता हूँ।

भवदीय
ह०
प्रहलाद राय गुप्ता

श्री चन्द्र मोहन गुप्ता
21/33, मा० लक्ष्मी नारायण अग्रवाल मार्ग
शक्ति नगर, दिल्ली-110007

With best compliments from :

Offi. 526109
772287
Resi. 2925545
2924654

Prem Metal & Hardware Store

Authorised Stockists :

Hindustan Aluminium Corp. Ltd.

5492, South Basti Harphool Singh,
Sadar Thana Road, Delhi - 110 006

SUNIL AGARWAL

बालेश्वर अग्रवाल
मंत्री
अग्रोहा विकास ट्रस्ट
6-एम भगत सिंह मार्किट,
नई दिल्ली-110001
फोन-344430

दिनांक 15-2-90

संदेश

बन्धुवर चन्द्रमोहन जी,

हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अग्रोहा तीर्थ की ओर से मार्च 1990 में डॉ० विष्णु चन्द्र गुप्त के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अवसर पर अग्रोहा तीर्थ का एक विशेषांक भी प्रकाशित किया जाएगा जिसमें उनकी काव्य रचनाएं रहेंगी।

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त से सामाजिक कार्यक्रमों में लगातार भेंट होती रही है। उनकी कुछ रचनाएं भी मैंने पढ़ी हैं और अनेक समारोहों में उनकी कविताएं भी सुनी हैं। वे एक कुशल कवि, साहित्यकार एवं निःस्वार्थ समाज-सेवी हैं। वे समाज सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ते जायें यही हमारी हार्दिक इच्छा है। हमें पूर्ण विश्वास है कि वे अपने इस कार्य में सदा यशस्वी होंगे।

स्नेहभाजन
ह०
बालेश्वर अग्रवाल

श्री चन्द्र मोहन गुप्ता
21/33, मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल मार्ग
शक्तिनगर, दिल्ली-110007

Cables : ENOPTICS
Delhi-110006

Phones : Shop 2512440, 2525662
Resi. 736567

NARESH OPTICS

Importers, Exporters and Manufacturers for
All kinds of OPHTHALMIC LENSES

267, Kandle Kashan Street, 1st Floor, Fatehpuri
DELHI - 110006

Leading wholesale house for all makes of photochromatic lenses

Sister Concorn :

Naresh Enterprises

Distributors of :
Resilens Plastic Spectacles Lenses

104-105, Kandle Kashan Street, Fatehpuri
DELHI - 110006

NARESH GUPTA

ज्वाला प्रसाद 'अनिल'
महामंत्री
अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासभा
एवं
सम्पादक-अग्रवाल सन्देश

कार्यालय : सुरेन्द्र नगर,
जनपद-अलीगढ़ (उ०प्र०)
फोन-6993

दिनांक : 14-2-90

सन्देश

भाई श्री चन्द्र मोहन जी

नमस्कार ।

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई किअग्रोहा तीर्थ पत्रिका के अतिथि सम्पादक श्री विष्णु चन्द्र गुप्त 12 मार्च को अपने जीवन के 56 वर्ष पूरे करने जा रहे हैं। मेरी भगवान से कामना है कि उन्हें दीर्घ जीवी करे ताकि वह पूर्ववत् समाज एवं पत्रिका की सेवा में कार्यरत रह सकें ।

भाई श्री विष्णु चन्द्र जी गुप्त बहुत ही सुलझे हुये मृदुभाषी एवं अच्छे समाज सेवी कार्यकर्ता रहे हैं, मुझे याद है कि आप त्रिनगर सभा में डॉ० नरेशचन्द गुप्ता अध्यक्ष त्रिनगर सभा के साथ कार्य किया करते थे और उस समय भी आपने त्रिनगर सभा को गति प्रदान की थी तथा त्रिनगर सभा की ओर से बहुरंगी स्मारिका का प्रकाशन भी किया करते थे। अग्रवाल झंडा गान आपकी बहुमूल्य कृति है ।

श्री गुप्त जी से अनेक बार मेरी अग्रवाल सम्मेलनों में भेंट होती रही है वह बहुत ही मिलनसार एवं अच्छे समाज सेवी हैं । अग्रोहा तीर्थ को सजाने एवं संभालने में उनका बहुमूल्य योगदान सदैव याद किया जाता रहेगा ।

मैं कामना करता हूँ कि श्री गुप्त जी शतायु हों और अपने जीवन के शेष भाग को भी समाज सेवा में अर्पित किये रहें । इनका आंगन खुशियों से भरा रहे और यह पीली सरसों की भाँति सदैव लहलहाते रहें ।

एक बार पुनः शुभकामनाओं सहित ।

आपका अभिन्न
ह०
ज्वाला प्रसाद अनिल

श्री चन्द्र मोहन गुप्ता
21/33, मा० लक्ष्मी नारायण अग्रवाल मार्ग
शक्ति नगर, दिल्ली-110007

With Compliments from

KRISHNA
BANGALI

RASGULLE WALE

• BANGALI • INDIAN SWEETS • NAMKEEN

Chhaina and Panir for Marriages and Parties

शादी व पार्टियों के शुभ अवसर पर छेना और पनीर आर्डर देने पर मिलता है।

❀

8233-34, Rani Jhansi Road,
Bara Hindu Rao, Delhi - 110 006
Phones : 773115, 775851, 528852

LACHHI RAM
Rasgulle Wale

CAUVERY HANDLOOM

★

GANGA FABRICS

Manufacturers of :

**Handloom Bedsheets, Curtains,
Pillow Covers and Towels**

**28/1, Ramakrishnapuram,
KARUR - 639001 (Tamilnadu)**
Phone : 20711

★

BANU FABRICS

**6th Cross, Sengunthapuram,
KARUR - 639002 (Tamilnadu)**
Phone : 20711

Phones : Off. : 521551, 516849
519113
Res : 7221933

Gupta Toys Corporation

Wholesale and All kinds of :
Toys, Games and Novelties

2847, Partap Market, Sadar Bazar,
Delhi - 110006

★

PANKAJ TOYS AGENCIES

PUMPY SQUEEZE TOYS & DOLLS

Manufacturers and Suppliers of :
PVC Toys and Mechenical Toys

5406/5, 3rd Floor Partap Market,
Sadar Bazar, Delhi - 110006

★

GUPTA NOVELTIES

Wholesale Dealers in :
Gift Articles and Novelties

5404-AB-15, 16, 2nd Floor Partap Market,
Sadar Bazar, Delhi - 110006

With best compliments from :

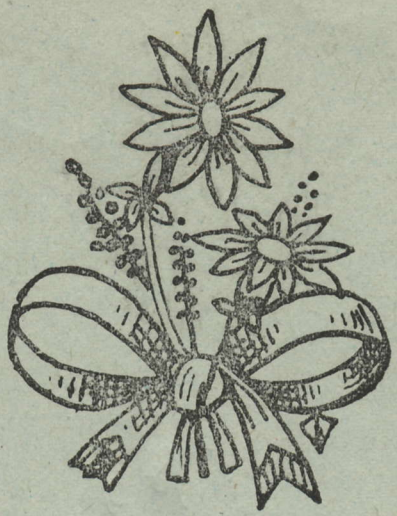

Write to.....

WRAPPERS INDIA

Specialist in :
Wrappers - Biscuit and Bread

4203, Pahari Dhiraj, Sadar Bazar,
Delhi - 110 006

Phones : 519485, 528885, 529686

Grams : 'PRINTPRESS'

With best compliments from :

Cable : 'ABIRAMI' Karur

Phones : Offi. 21415
Resi. 23248

ABIRAMI FABRICS

Specialists in :
Jacquard, Bedsheets

卐

AVANTHI TEX

77, Ranimangnmmal Street

KARUR - 639 001

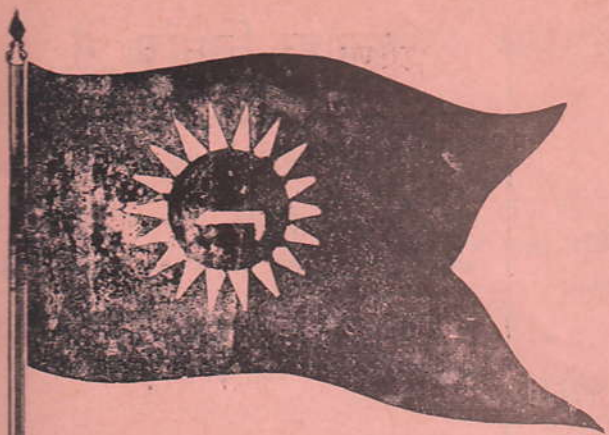

अग्रवाल झंडा गान

झँडा लहर लहर लहराए,
अग्रवंश को कीर्ति सुनाए।

❋ ❋

केसरिया रंग बहुत सुहाए,
त्याग भाव का पाठ पढ़ाए।
सहानुभूति व प्रम त्याग को,
हम सब जीवन में अपनाएं ॥१॥
झंडा ....

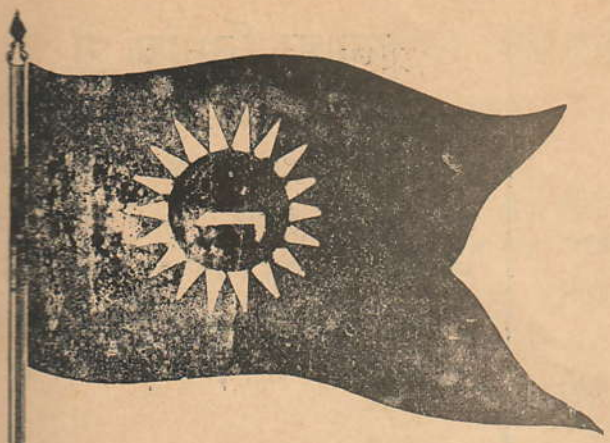

विष्णु चन्द्र गुप्त
१९१०/१४५, त्रिनगर, दिल्ली-३५

अग्रवाल झंडा गान

झँडा लहर लहर लहराए,
अग्रवंश को कीर्ति सुनाए।

केसरिया रंग बहुत सुहाए,
त्याग भाव का पाठ पढ़ाए।
सहानुभूति व प्रेम त्याग को,
हम सब जीवन में अपनाएं ॥१॥
झंडा ·····

अट्ठारह किरणों का गोला
गोत्रों की बोली है बोला,
राज्य व्यवस्था को बतलाकर,
अग्रसेन की याद दिलाए ॥२॥
झंडा····· ·····

एक रूपया संग ईंट जड़ो है,
इसमें समता बहुत बड़ा है।
समाजवाद की यही कड़ी है,
अग्रोहा को याद दिलाए ॥३॥
झंडा·····

ऊपर नीचे कूल बने है,
मिले बीच अनुकूल घने हैं।
ऊंच-नीच का भेद मिटाकर,
समता हम जीवन में लाए ॥४॥
झंडा·····

(अ भा. अग्रवाल सम्मेलन द्वारा मान्य)

अग्रोहा की कहानी उसी की जबानी

मैं हूं येह अग्रोहा की, नहीं कोई मेरा सानी ।
मेरे रज-कण में अंकित है गौरवमयी कहानी ॥

मेरे तन में छिपे हुए हैं, अद्भुत महल अटरियाँ ।
बीच नगर में शोभा पावे महालक्ष्मी मैया ॥

लम्बे चौड़े राजमार्ग चौपड़ की सड़कों वाली ।
अग्रसेन जी की अग्रोहा नगरी रही निराली ॥

नागराज महिधर की कन्या यहीं रही पटरानी ।
मेरे रज-कण में अंकित है गौरवमयी कहानी ॥

पापों की गठरी को मानव जब ढोता रहता था ।
सुख वैभव के सपनों में जब नित घुलता रहता था ॥
पशु बलि को त्याग यज्ञ में अहिंसा व्रत अपनाया ।
सहानुभूति व प्रेम त्याग का सुन्दर पाठ पढ़ाया ॥
अब भी मेरे रज-कण में गूंज रही वह वाणी ।
मेरे रज कण में अंकित है गौरव-मयी कहानी ।

गऊ ब्राह्मण की रक्षा करना परम धर्म बतलाया ।
सदा निरामिष भोजन करना वैश्य धर्म कहलाया ।

पर हितकारी जन हितकारी ऐसी रीति चलाई ।
दीन दुःखी को गले लगाया समझा सबको भाई ॥

अग्रजनों के आदर्शों की शोभा जग ने जानी ।
मेरे रज-कण में अंकित है गौरव-मयी कहानी ॥

एक लाख परिवार यहाँ पर मिल-जुलकर रहते थे ।
अट्ठारह गण प्रतिनिधि मिलकर यहां शासन करते थे
अग्रसेन ने अग्रोहा में ऐसी रीति चलाई ।
समता व बन्धुत्व भाव की सच्ची ज्योति जगाई ।

एक रुपये और एक ईंट की समता थी लासानी ।
मेरे रज-कण में अंकित है गौरवमयी कहानी ॥

अग्रोहा निर्माण में

निकल पड़ो मैदान में, अग्रोहा निर्माण में ।
दाग न लगने पाए कोई, अग्रवंश की शान में ॥

अग्रसेन के हम हैं बेटे जाने न देंगे ईमान ।
अग्रोहा की खातिर तन, मन, धन कर देवेंगे बलिदान ॥

नई चेतना भरनी है, अब अग्रवंश संतान में ।
दाग न लगने पाए कोई, अग्रवंश की शान में ।१ ।

एक रुपये और एक ईन्ट का जो आदर्श पुराना है ।
समता का आदर्श पाठ वह नित नित ही दुहराना है
प्रति व्यक्ति अब वही दान दे, अग्रोहा निर्माण में ।
दाग न लगने पाए कोई अग्रवंश की शान में ।२॥

अग्रोहा में अग्रसेन के मंदिर का करके निर्माण ।
महालक्ष्मी व सतियों को, देना है पूरा सम्मान ।
तीर्थराज बने अग्रोहा, अग्रवंश कल्याण में ।
दाग न लगने पाए कोई, अग्रवंश की शान में ।। ॥

ऋषि-मुनि व महाजनों की रीति सदा निभानी है ।
गौ-पूजा व यज्ञ अहिंसा, जीवन में अपनानी है ॥
पर हितकारी, जन हितकारी, अग्रवंश की शान में ।
दाग न लगने पाए कोई, अग्रवंश की शान में ॥४॥

श्री अग्रसेन स्तुति

जय हो ! जय हो ! जय हो !!
अग्रसेन महाराज आपकी जय हो !

अग्रवंश की जीवन धारा,
प्रेमपूर्ण व्यवहार हमारा ।
अग्रजनों के सदय हृदय मे,
सत्य, अहिंसा, क्षमा भरी हो ।।

सद्भावों को कीर्ति जगाकर,
न्यायपूर्ण व्यवसाय चलाकर ।
जीवन के निज स्वार्थ छोड़कर,
परमार्थ में लीन सदा हो ।।

सश्रम अर्जित शुद्ध कमाई,
निष्कपट सत्य व्यवहार भलाई ।
सादा जीवन उच्च विचार का,
निज जीवन में अभ्युदय हो ।।

दुर्गुण दुर्व्यसनों को त्यागें,
दीन-बन्धु का कष्ट मिटा दें ।
पीड़ित और असहाय जनों की,
सेवा में तन, मन, धन लय हो ।।

गोपालन, दानादि पहला,
दो व्यापार गृहस्थ व्यय तीजा ।
चार भाग में सम्पत्ति बांटे,
चौथा भाग सदा संचित हो ।।

अपनी संस्कृति और सभ्यता,
गो- पूजा गायत्री गीता ।
गंगा यमुना कृष्ण मुरारी,
जीवन का प्रेरक संबल हो ।।

प्याऊ, मन्दिर या गोशाला,
जनहित में निर्मित धर्मशाला ।
एक ईंट और एक रुपये का,
प्रेरक वह सहयोग प्रबल हो ।।

जय हो ! जय हो ! जय हो !!
अग्रसेन महाराज आपकी जय हो ।।

तीखा ! किन्तु सत्य

सामाजिक संगठन
केवल गठ बन्धन
न बनें !
पद लोलुपता के,
नेता व चौधरी बनने के।
कहना है तो कहें
सुनना है तो सुने !
पुकार—
गरीब असहाय भाइयों की,
दहेज के कारण
अनब्याही कन्याओं की !
अपना पेट भरने पर
सब सुखी होते हैं,
पर पड़ौसी के भूखे सोने पर
जिसको नींद नहीं आती—
वह मानव है,
सज्जन है,
और सामाजिक भी।

अग्रसेन आदर्श हमारे

नृप वल्लभ के राजदुलारे,
अग्रवंश के ध्रुव तारे।
अग्रसेन आदर्श हमारे,
हमको प्राणों से प्यारे॥

शौर्य-पराक्रम की प्रतिमा थे,
सत्य-अहिंसा के पालक।
साम्य योग के शिलाकार थे
मानवता के शुभ चालक।
समता के आधार बिन्दु थे,
अग्रवंश के ध्रुव तारे।॥

सिद्धांतों के मौन व्रती थे
रिद्ध-सिद्धियों के दाता।
अग्रवंश की दिव्य दृष्टि थे,
शुभ-संकल्पों के दाता॥
भीष्म पितामह आदर्शों के,
अग्रवंश के ध्रुव तारे।॥

अग्रोहा के शासक थे वे,
अग्रवंश के संस्थापक।
न्याय-नीति की गरिमा थे वे,
गोत्र-प्रथा उनकी व्यापक।
चिन्तन के अभिनव स्वरूप थे,
अग्रवंश के ध्रुव तारे॥३॥

अग्रोहा तीर्थ बनावें, हम अग्रोहा तीर्थ बनावें ।

भारत के कोने-कोने से, अग्रबन्धु मिल आवें।
अग्रसेन की गौरव गाथा घर घर में फैलावें ।।
एक रुपया और एक ईंट, आदर्श भाव अपनावे।
तन-मन धन, अर्पित कर, समता की ज्योति जगावें ।।
सूत्र एक में बन्धकर के, हम प्रबल शक्ति बन जावें।
हम अग्रोहा तीर्थ बनावें ।।

भारत की संस्कृति सभ्यता के हम ही रखवारे।
गौ पूजा, गायत्री, गीता हैं आदर्श हमारे ।।
निर्धन व असहाय जनों की पीड़ा को पहिचाने।
प्याऊ, मन्दिर व गौशाला जनहित में हम माने ।।
विद्यालय निर्माण करा कर ज्ञान की ज्योति जगावें।
हम अग्रोहा तीर्थ बनावें ।।

देश भक्ति के लिए सदा ही तन, मन, धन है वारा।
मोहन दास कर्मचन्द गान्धी, लाजपत राय हमारा ।।
भारतेन्दु व गुप्त, कवि रत्नाकर सब का प्यारा।
न्याय क्षेत्र में शादी लाल का चमका खूब सितारा ।।
भामाशाह की दानवीरता अग्रवंश अपनावें।
हम अग्रोहा तीर्थ बनावें ।।

अग्रवंश के गौत्र अठ्ठारह का क्या कोई सानी।
रक्त शुद्धता की खातिर आवश्यक माने ज्ञानी ।।
एक गोत्र में भाई बहिन हैं अन्य गोत्र असनाई।
विवाह-सूत्र बन्धन की कैसी अनुपम रीति बनाई ।।
गोत्र व्यवस्था अग्रवंश के सभी बन्धु अपनावें।
हम अग्रोहा तीर्थ बनावें ।।

छल-कपट द्वेष मांस मदिरा ले जो रहते हैं दूर।
सादा जीवन उच्च विचार का पालन करें जरूर ।।
दहेज दिखावा और प्रदर्शन को जो माने कूर।
अग्रसेन के बालक हैं वे अग्रवंश के नूर।
सद्गुण, सद्बुद्धि अपनाकर जीवन सफल बनावें।
हम अग्रोहा तीर्थ बनावें ।।

दहेज

दहेज क्या है ?
एक विवशता है
प्रतिस्पर्द्धा है
लड़की या लड़के को,
देने के बहाने,
अहं भाव का प्रदर्शन है।
दिखावे की होड़ में
पिस रहे हैं सभी
कुप्रथा है—दूर करो
कहते हैं सभी।
अपनी बारी आने पर
मौन हैं,
आने दो
फिर देखा जाएगा।
अयोग्य कन्याएं,
होने वाली गृह लक्ष्मियां
(दहेज) पैसे के अभाव में,
विवश हैं,—
अयोग्य, अशिक्षित, अनमेल
प्रौढ़ के पाणि-ग्रहण को।

दिखायेंगे न देखेंगे
बतायेंगे न पूछेंगे
नक़द राशि का हम बिलकुल
प्रदर्शन बन्द कर देंगे।

न होगी ईर्ष्या इससे,
न हानि भी रहे इससे,
व्यर्थ की खेंचा खेंची से,
सभी इज्जत बचायेंगे।

जिसमें है नहीं क्षमता
करे क्यों उससे निर्ममता
माया आनी जानी है,
गुणों की चाह रक्खेंगे।

नक़द जो बहुत चाहते हैं।
वधु अनमेल लाते हैं।
वधु सुयोग्य पाने को
लोभ हम बिलकुल त्यागेंगे।

दिखायेंगे न देखेंगे,
बतायेंगे न पूछेंगे।
नकद राशिका हम बिलकुल
प्रदर्शन बन्द कर देंगे

विवाह के सुअवसर पर

भंगड़ा व ट्विस्ट नाच बन्द करें

क्योंकि ?

—यह—

- बढ़ावा देता है,
  अशिष्टता को
  चोरी और जेब कटी को
  मदिरा - पान को

- नष्ट करता है
  धन को
  समय को पाबन्दी को
  मान—मर्यादा को
  अनुशासन को

- जन्म देता है,
  विवादों और झगड़ो को
  ईर्ष्या और द्वेष को

आह्वान

अग्रसेन की हम सन्तान,
करते हैं नित गौरव गान।
उनके आदर्शों को मान,
जीवन में हम बनें महान ॥१॥

मिल जुलकर हम प्रेम बढ़ावें,
द्वेष-भाव को दूर भगावें।
समता निज जीवन में लावें,
अहं भाव है झूठी शान ॥२॥

सादा जीवन उच्च विचार,
यह हो जीवन का आधार।
मन से कर आदर सत्कार,
यथा, शक्ति हम देवें दान ॥३॥

दहेज दिखावा या प्रदर्शन,
करते हैं जाति का मर्दन,
झुकती आज इसी से गर्दन
इससे जल्दी पावें त्राण ॥४॥

करनी व कथनी का अन्तर,
आदर्शों को कर छूमन्तर,
धधक रहा अन्दर से अन्तर,
उसको ध्वनि को लें पहिचान ॥५॥

संयम निज जीवन में लावें,
अनपढ़ता का पाप मिटावें,
वृक्षारोपण को अपनावें,
सुनें राष्ट्र का यह आह्वान ॥६॥

चर्चा अब बेकार है !

जाति के गौरव गीतों का गाना अब बेकार है।
वैश्य जाति के आदर्शों की चर्चा अब बेकार है॥
चर्चा अब निस्सार है॥

मांस और मदिरा सेवन से न जिनका कोई नाता था।
प्याज टमाटर, लाल दाल तक घर में नहीं सुहाता था॥
आज उन्हीं के मन को भाता मुर्गा और मुसल्लम भी।
होटल में खाने-पीने की बातें अब बेकार है॥
चर्चा अब निस्सार है॥

समता का आदर्श भाव जहाँ पहले-पहल मिला था।
पर-हितकारी जन-हितकारी भावों का मेल मिला था॥
आज असमता, भेद-भाव का बीज वहाँ पनपा है।
निधन-बन्धु का अब आने नहीं होता सत्कार है।
चर्चा अब निस्सार है॥

फर्मों के रिश्ते होते हैं लड़का-लड़की गौण है।
आज गुणों की चर्चा करना धन के कारण मौन है॥
दहेज दिखावा और प्रदर्शन नित ही बढ़ता जाता है।
जीवन-साथी की बात छोड़कर शादी बना व्यापार है॥
चर्चा अब निस्सार है॥

जिन की साखी सदा [illegible] [illegible] [illegible] थी।
राज्य व्यवस्था में जिनकी [illegible] [illegible] थी॥
भ्रष्टाचारी घूसखोर [illegible] [illegible] [illegible] है।
गिरते आचरणों के कारण नित होता [illegible] है॥
चर्चा अब निस्सार है॥

जाति के गौरव गीतों का गाना अब बेकार है।
वैश्य जाति के आदर्शों की चर्चा अब बेकार है।
चर्चा अब निस्सार है॥

यह देश है मेरा वीरों का,
है वीर प्रसूता यह भूमि ।

रामचन्द्र जी इस धरती पर पुरुषोत्तम कहलाते हैं ।
माता पिता बन्धु पत्नी का शुभ व्यवहार सिखाते हैं ।
राजा और प्रजा सम्बन्धों को वे हमें बताते हैं ।
धोबी मात्र के आक्षेप से, सीता को तज जाते हैं ।
भक्तों की है अभयदानी रामचन्द्र की यह भूमि ।।
यह देश है·····

कृष्णचन्द्र ने इस भूमि पर, अगणित खेल रचाया है ।
गीता में उपदेश अमर दे निर्भय हमें बनाया है ।
कर्म करो फल आप मिलेगा सबको यह समझाया है ।
अजर आत्मा, अमर आत्मा ऐसा रहस्य बताया है ।
जन-जन की कल्याणमयी है, कृष्णचन्द्र की यह भूमि ।।
यह देश है ...

जीवन मरण रोग के चक्कर में यह मानव उलझ रहा ।
भूल-भूलैयाँ की दुनियां में, धीरे-धीरे झुलस रहा ।
एक रात फिर इसी सोच में, घर से था प्रस्थान किया ।
जीएँ हम जीने दें सबको, ऐसा मंत्र महान दिया ।
बुद्धं शरणं गच्छामि की प्रेरक यह भारत भूमि ।
यह देश है ·····

छोटे बड़े सभी जीवों का एक समान है ।
सुख-दुःख की सबको अनुभूति होती एक समान है ।
कीट-पक्षी की बात न केवल पौधों में भी जीव है ।
अहिंसा परमो धर्म' हमारा इस जीवन की नींव है ।
महावीर के उपदेशों की साधक यह मेरी भूमि ।।
यह देश है ····

राम की चिड़िया खेत राम का, आओ और खा जाओ
सच्चा सौदा प्रेम त्याग का जीवन में अपनाओ ।
गुरुनानक की वाणी को इस दुनियाँ में फैलाओ ।
ऊँच नीच का चक्कर छोड़ो मानव को अपनाओ ।
देश धर्म के रक्षक गुरुओं की माता है यह भूमि ।।
यह देश है ·····

महाराणा प्रताप देश में योद्धा वीर महान हुए ।
हल्दी घाटी के रण आँगन में, शत्रु बड़े हैरान हुए ।
छोड़ राजसी ठाट बाट जब जंगल में आवास किया ।
घास मूल की रोटी खाई पृथ्वी पर, विश्राम किया ।
उस गर्वीले देश भक्त की जन्मदायिनी यह भूमि ।।
यह देश है··· ··

नाटे कद के वीर शिवा की गाथाओं पर गर्व हमें ।
देश भक्ति व गौ भक्ति की सेवाओं पर गर्व हमें ।
अफजल खाँ मक्कारी से जब उन्हें हराने आया था ।
समझ गये वे मक्कारी को, यमपुर उसे पठाया था ।
शेर शिवा की युद्ध कला की, कलामयी है यह भूमि ।
यह देश है·····

आर्य विश्व में श्रेष्ठ जाति है यह सबको समझाया ।
ईश्वर एक उसी को पूजो सत्य हमें बतलाया ।
पाखण्डों का खण्डन करके ज्ञान मार्ग बतलाया ।
ओम् ध्वजा को लिया हाथ में, वेद सत्य बतलाया ।
सत्यार्थ प्रकाश के अमर रचयिता दयानंद की यह भूमि ।
यह देश है ·· ··

रामचरित मानस' को रचकर जन-जन का कल्याण किया।
रीति-नीति व मर्यादा का सबको अद्‌भूत ज्ञान दिया।
पुरुषोत्तम श्री राम गुणों का सुन्दर सरस बखान किया।
हिन्दू मात्र के घर आँगन में हिन्दी को सम्मान दिया।
रामचरित' के अमर रचयिता तुलसीदास की यह भूमि। यह देश है .....

लोकमान्य गंगाधर जी का कौन भला जग में सानी।
उनके साहस ज्ञान गरिमा का भारत है अभिमानी।
जन्म सिद्ध अधिकार हमारा, हम स्वराज ले मानेंगे।
गणेश, शिवाजी उत्सव रच-रच देश भक्ति ले आएंगे।
अमर 'केसरी' के सम्पादक वीर तिलक की यह भूमि। यह देश है .....

यू इन्डियन के तिरस्कार पर जिसने थप्पड़ जमा दिया।
वेष बदल कर देश भक्ति हित जो भारत से निकल गया।
तुम दे-दो अपना खून तुम्हें आजादी मैं लेकर दूंगा।
दिल्ली चलकर लाल किले पर राष्ट्र ध्वजा फहरा दूंगा।
आजाद हिन्द सेना के नायक वीर बोस की यह भूमि। यह देश है.....

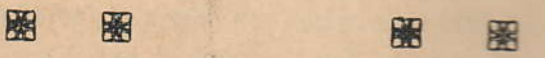

अग्रसेन महाराज की अग्रोहा राजधानी थी।
एक ईंट और एक रूपये की अद्‌भूत सत्य कहानी थी।
समाजवाद का ढोल न पीटा पर समता लासानी थी।
ऊँच नीच का भेद नहीं था नहीं कहीं मनमानी थी।
अग्रसेन जी का अग्रोहा, अग्रवाल की यह भूमि।
यह देश है मेरा वीरों का, है वीर प्रसूता यह भूमि। यह देश है .....

हम गौवध बन्द करायेंगे

हम व्रत धारे आज यहाँ,
गौवध को बन्द करायेगे ।"
गोपाल कृष्ण की भूमि का,
सब मिलकर नान बढ़ायेगे ।
इस देव भूमि भारत भर में,
गौरक्षा पक्ष मनायेगे ।।
हम गौवध ········

जो पृथ्वी का आधार बनी ।
सींगों पर भार सम्भाले हैं,
जिसके तन में कोटि कोटि,
देवों का देवालय है ।
उस देव मातृ की रक्षा को,
गौरक्षा पक्ष मनायेगे ।।२।।
हम गौवध········

जिसने तृण भूसा खा-खाकर,
है मीठा दूध दिया हमको ।
जिसका घृत मक्खन खा खाकर,
है अद्भुत शक्ति मिली हमको ।
उस शक्ति दायिनी माता की,
रक्षा का पक्ष मनाएगे ।।३।।
हम गौवध ·· ·····

जो गोबर देती बहुमूल्य हमें,
खेतों में खाद लगाने को ।
जो दूध दही मक्खन देती,
हम सबका पोषण करने को ।
उस सर्व पोषिका माता की,
रक्षा का पक्ष मनाएगे ।४।
हम गौवध ·· · ···

जिसके बेटे है बैल अरे
खेतों में जोते जाते है ।
रहट चरस और गाड़ी से,
जो अगणित सुख पहुंचाते हैं ।
उस बैल-दायिनी माता को,
रक्षा का पक्ष मनाएगे ।।५।।
जिसके उपहारों के बदले,
हम सौ सौ शृं गार बनाते हैं ।
जिसके वैभव की छाया में,
रंग रलियाँ खूब मनाते हैं ।
उस मातृ तुल्य गौ माता को,
रक्षा का पक्ष मनाएगे ।।६।।
हम गौवध········

गौ माता की रक्षा होवें
इस दृढ़ व्रत को अपनाएगे ।
गौ रक्षा पक्ष मनाकर के,
जनमत की विजय कराएगे ।
माँ की रक्षा के खातिर,
गौ रक्षा पक्ष मनाएगे ।।७।।
हम गौवध·······

संकल्प

हम अशिक्षा को जग से हटा जायेंगे।
होगा जीवन सफल जब पढ़ा जायेंगे ।।१।।

साक्षरता की फिर शान होगी बुलन्द।
जबकी शिक्षा को दुनियाँ में फैलायेंगे ।।२।

अब चलायेंगे शिक्षा का जब दौर हम।
पग अशिक्षा के जग से उखड़ जायेंगे ।।३।।

सारी शक्ति लगायेंगे इस काम पर।
शेष रख न कसर हम कोई जायेंगे ।।४।।

जब अविद्या अशिक्षा हटा देंगें हम।
ज्ञान विद्या का घर-घर में भर जायेंगे ।।५।

होगा भारत जहां का तब फिर से गुरू।
ज्ञान दीपक जब घर-घर जला पायेंगे ।।६।

*

शिक्षक : नये परिवेश में

नई सुबह का नया सवेरा, नई चेतना लाया है।
जागो जागो शिक्षक प्यारे, तुमको आज पुकारा है।।
तुम्हीं तो हो जिसके कारण
भारत गुरू कहाया था।
तुम्हीं ने तो ज्ञान विश्व को
पहले पहल सिखाया था।।
आज उसी की खातिर तुमको,
भारत ने ललकारा है ।।१।
जो भी कोई जब भी कोई,
देश पै काबू पाता है,
शिक्षक द्वारा ही आकर के,
उलट फेर करवाता है।
मैकाले ने भारत आकर,
शिक्षक को दुतकारा है ।।२।
अब भारत गणतन्त्र हुआ है,
उनकी आन निभाना है।
हर बालक के द्वारा तुमने,
घृणा भाव भगाना है।
प्रेम परस्पर बढ़े सभी में,
यह कर्तव्य तुम्हारा है ।।३।।
राष्ट्र एकता की भारत में,
तुमने नींव जमानी है।
भाषा प्रान्त के झगड़े जितने,
सबकी नींव डिगानी है।।
देश भक्त कर्तव्य परायण,
होकर ही निस्तारा है ।।४।।
राष्ट्रपति जी कभी गुरू थे,
आज गुरू पद पाया है,
भारत के जन-जन ने देखो,
कितना प्रेम दिखाया है।।
सम्मान देश में हो शिक्षक का,
सबने इसे विचारा है ।।५।।

जरा कुछ पढ़ लिख ल

यह जीवन बीता जाये, जरा कुछ पढ़-लिख लें।

विद्या पढ़े विनय को पावे।
विनय प्राप्त कर योग्य कहावे ॥

अयोग्य न रहने पाये, जरा कुछ पढ़-लिख लें ॥१॥

योग्य बने तो धन को पावे।
धन पावे तो सुख आ जावे।

निर्धन नहीं रहने पाये, जरा कुछ पढ़-लिख लें ॥२॥

हम पशु नहीं, अरे हम मानव।
हममें ज्ञान बुद्धि का गौरव।

यों कहता अवसर जाये, जरा कुछ पढ़-लिख लें ॥३॥

यदि जीवन का उपयोग करें।
तो सच्ची उन्नति प्राप्त करें ॥

फिर अवसर बीता जाय, जरा कुछ पढ़ लिख लें ।४॥

बढ़ायें जीवन में हम ज्ञान।
उसी में करें आत्म-बलिदान।

नहीं समय हाथ से जाय, जरा कुछ पढ़-लिख लें ॥५॥

हममें बढ़े प्रेम और प्यार।
जब हम सीखें दया अपार।

नहीं तो मानवता गिर जाये, जरा कुछ पढ़ लिख ले ॥६॥

दुःखियों के दुख दूर करें हम।
असहायों की पीर हरें हम ॥

फिर मानवता रह जाये जरा कुछ पढ़ लिख लें ॥७॥

सदा सत्य को प्यार करें हम।
सदा न्याय का ध्यान धरें हम ॥

अन्याय न होने पाये, जरा कुछ पढ़ लिख लें ।८॥

मधुर वचन की झड़ी लगा दें।
सबको अपना मित्र बना दें ॥

कोई शत्रु न रहने पाये, जरा कुछ पढ़ लिख लें ॥९॥

अज्ञानों को दूर भगावें।
एक नवीन प्रकाश दिखावें ॥

फिर पथ न भूलने पाये, जरा कुछ पढ़ लिख लें ॥१०॥

जीवन ध्येय हम अवश्य बनावें।
उस पर दिन और रात लगावें ॥

फिर विष्णु करें सहाय जरा कुछ पढ़ लिख-लें ॥११॥

जन्म-रहस्य

क्यों रोते हैं हम बार-बार, जब जाने अपने भेद सार।
पाँच तत्वों के ये भवन बने हैं, जिसमें नौ –नौ लगे द्वार।
क्यों रोते हैं हम बार-बार ॥१॥

इन भवनों के अन्दर आकर,
रहता एक मुसाफिर।
जड से चेतन उन भवनों को,
करता वही मुसाफिर। २॥

जब वह मुसाफिर उन भवनों को,
छोड कहीं है जाता।
चेतन मे फिर जड में,
उन भवनों का रूप बनाता। ३।

इसी रूप को बदल बदल में,
हम हैं रोते हंसते।
अज्ञानी हैं नहीं अकल हम,
समझ नहीं यह सकते। ४॥

दिन-२ बदले वस्त्र किन्तु हम,
समझ न कुछ भी पाते।
सही भेद है इस जीवन का,
क्यूं न समझ हम पाते ॥५।

यही भेद यदि समझ सकें,
तो सच्चा सुख हम पावें।
राग द्वेष और शोक सभी,
को मारे दूर भगावें ॥६॥

फिर सच्चा सब ज्ञान प्राप्त
कर ईश्वर के गुण गावें।
सच्ची श्रद्धा सच्ची भक्ति,
कर नित-नित इसे रिझावें ।७॥

इस घर मे जो बसा मुसाफिर,
वही है ईश्वर सच्चा।
यह जानों सब मिलकर,
समझो क्या बूढ़ा क्या बच्चा ॥८॥

रूह, आत्मा, सोल आदि हम,
देते नाम हैं इसको।
फिर नाम का अन्तर, दें हम,
दोष कहो किस-किसको ॥९।

कृष्ण मुरारी ने अर्जुन
को इसका भेद बताया।
नहीं शस्त्र से कटा अग्नि, से,
कभी नहीं जल पाया ॥१०।

विष्णु को है आज यही,
सब गीता रहस्य बताती,
पानी नहीं डुबोता इसको,
वायु न इसे सुखाती ॥११॥

जीर्ण वस्त्र की तरह आत्मा,
यह शरीर तज जाती।
नये वस्त्र की तरह आत्मा,
नयी देह है पाती ॥१२।

फिर क्यों रोते हैं हम बार-बार,
जब जाने अपने भेद सार।
पाँच तत्वों के ये भवन बने हैं
जिसमें नौ नौ लगे द्वार ॥१३॥

हम सैनिक हिन्दुस्तान के

हम सैनिक देश महान के,
हैं पक्के अपनी आन के ।
नहीं घुसपैठ को जानते,
हम शेर खुले मैदान के ।।

पाकिस्तानी घुसपैठ हो,
चाहे सैनिक आक्रमण ।
धुआँ-धार मचाकर के,
बढ़ रहे हैं हमारे सैनिक गण
शत्रु दौड़ा भाग के,
लो पड़ गये लाले जान के ।

धोखा फरेब के चक्कर,
हम तनिक नहीं भरमायेंगे ।
पास पड़ोसी देश समझ,
तुमको अब मार्ग दिखायेंगे ।
जान तुम्हारी लेकर के,
कर देंगे कब्रिस्तान के ।।

शर्मन पैटन टैंक तुम्हारे,
ध्वस्त सभी हमने करने ।
वायुयान या पैदल सेना,
तनिक नहीं देंगे बढ़ने ।
हम गोली उनको मार दें
जो आवें पाकिस्तान के ।।

तिथवाल या कारगिल हो,
चाहे दर्रा हाजीपीर ।
छम्ब, पूंछ कसूर क्षेत्र में,
रखेंगे हम पूरी धीर
तोप धड़ाके दे-देकर,
हम चढ़ते सीना तान के ।

श्रीनगर जम्मु फाजिलका,
अम्बाला व अमृतसर ।
फिरोजपुर व जोधपुर का,
बदला हम लेंगे डटकर ।
रावलपिंडी में कर देंगे,
दृश्य सभी श्मशान के ।।

चाऊ माऊ की सेना को भी,
पंख लगे हैं अब उगने ।
भेड़ भेड़ियों की चोरी के,
दोष लगा हम पर मढ़ने
ये झूठ झमेले के चक्कर हम,
सुलटें आगे आन के ।।

हम शेर खुले मैदान के ।
हम सैनिक हिन्दुस्तान के ।

समयान्तर में

आज विश्व में मची दुहाई ।
भाई को धोखा दे भाई, हिन्दी चीनी भाई भाई ।।

भारत में जब भी कोई आया,
धना मित्र सम्मान है पाया।
जिसने हमसे हाथ मिलाया,
हमने उसका साथ निभाया ।।
कष्ट कंटकों में भी पड़कर
ऊँची समझी सदा मिताई । १।।

विभीषण था रावण का भ्राता,
डाँटा फटकारा था जाता ।
शरण राम की जब वह आया,
अभय दान था उसने पाया ।।
हमने उसको मित्र मानकर
शरणागत को मान निभाई ।।२।।

मोहम्मद गौरी भारत आया,
सोलह बार उसे समझाया ।
किन्तु समझ न उसको आया,
हमने उलटा धोखा खाया ।।
ऐसे चक्करों में पड़ पड़कर
सीख चुके हम कटुरताई ।।३।।

लामा तिब्बत से यहाँ आए
शरण प्राप्त का मित्र कहाए ।
चाऊ ने जो दोष लगाए,
हमने सबही तुच्छ ठहराए ।।
शरणागत को शरण प्रदान कर
हमने अपनी आन निभाई ।।४।।

चाऊ जब भारत थे आए,
दशन पंचशील के पाए ।
जनता के जब सम्मुख आए,
हम हैं सच्चे मित्र बताए ।।
पंचशील के पथ पर चलकर
होंगे हम सब भाई-भाई ।५।।

आज भला कहाँ गई मिताई,
आक्रमण करते हो भाई ।
यह तो कोरी मक्कारी है,
मित्र शब्द को धिक्कारी है ।।
सीमा पर के वार देखकर
समझ चुके हम निष्ठुरताई ।।६।।

हिन्दी चीनी भाई-भाई,
कहते थे क्या लाज न आई ।
समझ हमें यूं भोला भाला,
गजब बहुत तुमने कर डाला ।।
मुकुट हमारा तुमने छूकर
आफत अपनी आप बुलाई । ७ ।

हम हैं मित्र भले लोगों के,
काल रूप विषधर लोगों के ।
दिखला देंगे क्या-क्या होता है,
मक्कार मित्र कितना खोता है ।।
अपमान देश का हुआ न सहकर
हो गए खड़े भारत के भाई ।।८।।

अपमान मुकुट का सह न सकेंगे,
कब्र तुम्हारी बना रहेंगे ।
सीमा से हम दूर करेंगे,
तुमको चकना चूर करेंगे ।।
देखो कैसे वीर भड़क कर
लोहा लेकर कर सफाई ।।९।।

ज्ञान के दोहे

करत-करत अभ्यास नित, मन्द बुद्धि हो भिज्ञ।
नित पाठन व श्रवण विद्, नहीं रहता अनभिज्ञ ॥१॥

सुख आलस्य को छोड़कर, करो नित्य अभ्यास।
करत-करत अभ्यास नित बुद्धि करे विकास ॥२॥

विद्या सुख की खान है, विद्या दे यशमान।
ज्ञानी का होता सदा, सभी जगह सम्मान ॥३॥

विनय, शीलता, पात्रता, विद्या ही के देन।
धन, यश, वैभव, मित्र की, यही बनावे चेन ॥४॥

गुण के ग्राहक अमित हैं, गुण का करो विकास।
सुख सुविधा मिलती सदा, न हों कभी निराशा ॥५॥

विद्याधन सबसे बड़ा जो विदेश में जाए।
विद्याधन रक्षा करें जब, मति भ्रमित हो जाए ॥६॥

विद्या की सामर्थ से, बढ़ जाता व्यवसाय।
देश विदेश की यात्रा, कठिन सरल हो जाए ॥७॥

विद्या विवाद को थोप कर शक्ति दे भरपूर।
ज्ञानी दानी नर बने, रक्षा करे जरूर ॥८॥

परिश्रमी विद्यार्थी, करे सफलता प्राप्त।
निश-दिन पाठन-पठन से, कठिन विषय हो ज्ञात ॥९॥

धर्म वही जो

धर्म वही जो धारण करने योग्य मार्ग बतलाता है।
कर्म वही जो सद्-भावों की सुन्दर राह दिखाता है॥

निर्भय होकर कर्म करो व प्राणी मात्र पर दया करो।
दीन-दुःखी को गले लगाओं समता का व्यवहार करो॥

ऋषि मुनि व महाजनों की वाणी का गुण-गान करो।
फल की इच्छा त्याग हृदय से सौम्य भाव से कार्य करो॥

सद्कर्मो सेवा भावों से, नर उत्तम फल पाता है।
धर्म वही जो धारण करने योग्य मार्ग बतलाता है॥

धर्म की रक्षा यदि करोगे, धर्म मार्ग दिखलाएगा।
सत्य, अहिंसा, प्रेम, त्याग का सुन्दर मार्ग बताएगा॥

महावीर गौतम गांधी को, अहिंसा को अपनायेंगे।
राम कृष्ण के कर्म मार्ग से जीवन में सुख पायेंगे॥

उत्तम करनी से नर जग में, उत्तम नाम कमाता है।
धर्म वही जो धारण करने योग्य मार्ग बतलाता है॥

पैसे का संसार

पसे का दर पैसे का घर, पैसे का संसार है।
ऐंठ रहा जिस पैसे पर, वह पैसा दिन दो चार है।
पैसे के हैं रूप अनेकों, पैसा सबका भाता।
धन, दौलत और माया यह सब पैसा ही कहलाता।
जितना जिस पर आज अधिक पैसा हो जाता है।
काली करतूतों का उसको लोप हुआ करता है।
बिन पैसे के आज जगत में, जीना भी दुश्वार है ॥१॥
ऐंठ रहा जिस पैसे पर ....

भाई-भतीजे और मित्र गण पैसे के साथी हैं।
मात-पिता व चाचा-चाची पैसे के नाती हैं।
पैसा है यदि पास सभी से मान मिलेगा।
बिन पैसे पत्नी से भी अपमान मिलेगा।
पैसे से ही आज जगत में मिलता देखा प्यार है ॥२॥
ऐंठ रहा जिस पैसे पर ....

पैसा जिसके पास बड़ा ज्ञानी कहलाये।
पैसा जिसके पास वही सज्जन बन जाये।
दादुर वक्ता बन जाता पैसे के कारण।
उसकी बातें सुने ध्यान से करते धारण
ज्ञानी का ज्ञान बिना पैसे रहता बेकार है ॥३॥
ऐंठ रहा जिस पैसे पर ....

नेता पैसे से बिकता है पैसा खूब कमाता।
पैसे से कुर्सी ले लेता जमकर रोब जमाता।
कोठी कार दूरभाष सब चुटकी में मिल जाता।
राजनीति में पैसे से ही अपनी पैठ जमाता।
वायुयान या रेल यात्रा पैसे से दरकार है। ४।
ऐंठ रहा जिस पैसे पर ....

आओ हम श्रमदान करें

आओ हम श्रमदान करें
भारत माता जननी हमारी,
हमको है प्राणों से प्यारी।
इसका हम सब ध्यान करें,
आओ हम श्रम का मान करें ॥१॥

देश हमारा है स्वाधीन,
जाने इसको रूस और चीन।
यदि चाहो सब सम्मान करें,
आओ हम श्रम का दान करें। २ :

देश की उन्नति है इससे,
हम कार्य करें अपने कर से।
कर्तव्य हमारा, मान करें,
आओ हम श्रम का दान करें ॥३॥

जो देश उठा अब तक ऊपर,
उसने है सेवा की भू पर।
सब मिल सेवा का मान कर,
आओ हम श्रम का दान करें ॥ ४॥

श्रम का ध्यान उठा मन में,
चचलता आई है तन में।
हम सब उसका आह्वान करें,
आओ हम श्रम का दान करें ॥५॥

श्रम के बल पर ही बचपन में,
चलना सीखें हम जीवन में।
सब सोचें इसका भान करें,
आओ हम श्रम का दान करें ॥६।

परिभाषा सज्जनता की

सज्जन की सज्जनता किसमें।
सज्जन की सज्जनता इसमें ॥१॥

मीठा बोले, सुख पहुंचाए।
दुःख न दे, प्राण चाहे जाए ॥२॥

नहीं करे विरोध किसी का भी।
चाहे हो बात विरोधी भी ॥३॥

सुनता वह बातें सबकी।
चाहे वह आस्तिक नास्तिक है ॥४॥

वह बातें अधिक न करता है।
वह सबको अवसर देता है ॥५॥

यदि वह अच्छा भी करता हैं।
तो मन में नहीं उभरता ॥६।

वह सबकी बात बताता है।
अपनी ही नहीं जताता है। ७॥

नीची बात न करता है।
उल्टे सबका मन हरता है। ८॥

अरिदल को मित्र बनाता है।
रूठे को स्वयं मनाता है ॥९।

जग कष्ट उसे पहुँचाता।
वह बदला नहीं चुकाता हैं ॥१०॥

यदि सुखी न सुख में होता है।
तो दुःखी न दुःख में होता है ॥११॥

सुख दुःख जो कुछ भी मिलता है।
कर्मों का फल ही मिलता है ॥१२॥

यदि कभी लड़ाई होती है।
तो खत्म तुरन्त ही होती है ॥१३॥

वह जब जो कुछ भी कहता।
अपने पर रख कर कहता है ॥१४॥

इन बातों पर जो चलता है।
वह सज्जन ही तो होता है ॥१५॥

भारत माँ

भारत माँ की हम सन्तान,
करते इसका गौरव गान।
महापुरूषों का जीवन ज्ञान,
लेकर हम सब बनें महान ॥१॥

सत्य, अंहिसा, प्रेम, त्याग का
पालन कर भारत सन्तान।
निर्भय होकर कर्म करे तो,
जीए सुख से सकल जहान ॥२॥

करनी व कथनी में समता,
आदर्शों में रखकर ममता।
जीवन में लावें कर्मठता,
तब हो हो सकता कल्याण ॥३॥

जीवन को हम सरल बनावे,
आडम्बर को दूर भगावे।
दीन-दुःखी की सुने पुकार
यथा-शक्ति हम देवें दान ॥४॥

दहेज, दिखावा और प्रदर्शन,
विवाह-सूत्र का करते मर्दन।
झुकती आज इसी से गर्दन,
इससे जल्दी पावें त्राण ॥५॥

अनपढ़ता का पाप मिटावे,
सीमित निज परिवार बनावे।
वृक्षारोपण को अपनावे,
सुने राष्ट्र का यह आह्वान ॥६॥

सादा जीवन उच्च विचार,
यह हो जीवन का आधार।
पर हितकारी, जन हितकारी,
सेवा को देवें सम्मान ॥७॥

तेरे प्रेम की प्रखर रश्मियों में, हिमागार सा मैं गला जा रहा हूँ

मिलेगा सहारा यह विश्वास लेकर,
शलभ ने दिये प्राण दीपक पे जलकर,
उसे क्या मिला था जो मुझको मिलेगा,
प्रणय पथ पे किन्तु बढ़ा जा रहा हूं ॥१॥

किया प्रेम चातक ने ऐसा घनों से,
पीऊँ बून्द स्वाति की गिरती घनों से,
अधर प्यास से हो ये प्यासे रहेंगे
मधु को पिपासा किये जा रहा हूं ॥२॥

थी चकवे ने अपनी प्रतिज्ञा निभाई,
रही चकवी चन्दा को देती दुहाई,
उसी प्रण को धारे किनारे-किनारे,
तेरी ओर को मैं चला आ रहा हूं ॥३॥

प्रणय की ये धड़कन हैं कितनी भयानक
बढ़ेगी हृदय में एक दिन अचानक
अचानक भयानक सी राहों में पड़कर
तेरी चाह में मैं घुला जा रहा हूं ॥४॥

बिना जल के मछली का जीवन नहीं है,
प्रणय शून्य हृदय में धड़कन नहीं है।
हृदय प्रेम रस में डूबोकर के अपना ॥
लता प्रेम की सी बढ़ जा रहा हूं ॥५॥

रही शुष्क धरती बिना जल के जब तक,
रहे जीव धारी हैं संकट में तब तक
प्रणय-शून्य संकट मिटाने की खातिर।
तेरी स्नेह ज्योति जगाता रहा हूं ॥६॥

उगे पुष्प कितने ही अब तक जमीन पर,
गई गन्ध उनकी है पड़कर धरा पर,
क्षणिक जिन्दगी का ये आभास पाकर,
तृषित सिसकियों से भरा जा रहा हूं ॥७॥

हिन्दी दिवस

एकता का सूत्र हिन्दी देश का सम्पर्क हिन्दी।
आओ मनाए आज मिलकर देश सारा दिवस हिन्दी ।।

देश के नेता मनीषी, जब हुए एकत्र सारे।
भावना थी एक सबमें, देश के चमके सितारे ।।
राष्ट्र भाषा देश की सम्मान पाए आज हिन्दी—
राष्ट्र का वह स्वर्ण क्षण जा नहीं सकता भुलाया।
हिन्द ने जब हिन्दी को अपना बनाया ।।
लोक प्रियता में पगी, अनुपम बनी आधार हिन्दी—
उदारता व ग्राह्यता के गुण संजोए।
एकता के सूत्र में सबको पिरोए ।।
स्वतंत्रता संग्राम की ज्योति है हिन्दी—
सन्तों, भक्तों और कवियों की ये वाणी।
देश भक्तों को लिए संग्राम में कूदी जवानी ।।
उच्च गुण व भावना को दे रही अभिव्यक्ति हिन्दी—
अंग्रेजी के मोह में आज हम सब खो गये।
अंकल, आंटी और डेडी आज घर-घर हो गए।
हो उपेक्षित देश में सिसके हमारी आज हिन्दी—
संसद भवन में यह दिवस मनता रहा है।
उच्च गौरव राष्ट्र का पाता रहा है।
आज देखो मन रहा इस हाल में यह दिवस हिन्दी—

नौक-झोंक

सड़क के बीचों बीच खड़े गधे को देखकर
ड्राइवर पति ने अचानक ब्रेक लगाया।
पत्नी ने कारण पूछा,
पति ने यूं समझाया,
तुम्हारा रिश्तेदार, बीचों बीच खड़ा है,
प्रिय जाओ, इसे हटा आओ।
पत्नी बोली मेरा तो वह जेठ लगता है।
मैं सामने नहीं जा सकती
और उन्हें नहीं हटा सकती
कृपया आप ही जाइए
और उन्हें हटाइए

त्याग-पत्र

कुछ लोगों ने,
एक नेता का किया घेराव, और कहा-
हम चाहते हैं कि आप अपने पद से त्याग-पत्र
दे दीजिए।
कुछ देर सोचकर नेता ने कहा-
त्याग, यह तो मेरे जीवन का अंग रहा है
और पत्र (वे कुछ शरमाए) लिखने का अब
जमाना नहीं रहा।

चिड़िया नीली

चिड़िया नीली, चिड़िया नीली

उन्माद तेरी रग-रग में है, तन मन में भरी जवानी है।
हैं सुन्दर स्वर्णिम पंख तेरे, और चाल तेरी तूफानी है।
क्या उपमा दूं तुझको जग में, तू, तू ही है लासानी है।
ये सब कुछ गुण तो है तुझ में, पर दिल तेरा पाषाणी है।
तन कोमल में पाषाण हैं मन, ये अजब तरह की तबदीली।।१।।

मैंने मन मानस में अपने, तस्वीर सजाई तुम्हारी थी।
मन्दिर और मस्जिद की झाँकी, तेरे ही तन में निहारी थी।
चिर चिन्ता की कड़ियां सारी, तेरे ही सहारे बिसारी थी।
हमने तुम्हें डोर समझ अपनी, अम्बर में भरी उड़ारी थी।
हम उड़े कल्पना पर ज्यों ही, तुमने खींची डोरी ढीली।।२।।

क्या शिकवा और करें किससे, सब तरह से हम हैं दीन हुये।
मुख मण्डल का छिन गया तेज, हम बिन पानी को मीन हुये।
हम थोड़ा सा उड़ लेते थे, पर आज तो पंख विहीन हुये।
आकर लौट के देख तो लो, ये आँख मेरी गीली-गीली।।३।।

तेरी तस्वीरों से जालिम, अब भी दिल को बहलाते हैं।
तू आयेगी तू आयेगी, अब भी दिल को बहलाते है।
आंसू खारी पी लेते है, गम को गम से खा लेते हैं।
तूने बरसात दी आँसू को, हमने मृदु आसव कर पी ली।।४।।

फिल्मी परौडी

तेरी काली-काली सूरत पे
पाउडर तो असर न करे
राख मल दूं।

यूं न मटकती फिरा करो
कुनजरों से बचा करो
भैंस से ज्यादह भारी हो
तुम चाल सम्भल कर चला करो

देखा न करो तुम आईना
कहीं खुद की नजर न लगे
राख मल दूं।

एक झलक जो पाता है
कन्नी काट भग जाता है

देख के तेरा रुप रुपहला
अफ्रीकी शर्माता है
जुल्फों को हटालो गालों से
कहीं रंग में रंग न मिले।
राख मल दूं।

क्या वे तैयार है ?
गुप्ता जी की बीमारी पर
मित्र लोग घर मिलने आए
सभी ने स्वस्थ होने के
नुस्से सुझाये
किसी ने दवाओं के नाम बताए
तो किसी ने डाक्टर के नाम सुझाए
पर शर्मा जी बोले—
मंगला जी को भी यही रोग था
उनका उपचार भी सरल था
पत्नी को पास बैठाते थे
मीठी मीठी बातें करते थे
बस ठीक हो गये।
गुप्ता जी बोले—
ठीक है शर्मा जी
आप जैसा कहते है
वैसा ही करूंगा

उपचार सरल हैं
ऐसा ही करूंगा

मुझे क्या एतराज है
आप मंगला जी की पत्नी से पूछें
क्या वे तैयार हैं।

मर्द का पार्ट करूँगा

सर्कस के सीन में
खुले शेरों के बीच में,
एक सुन्दरी आई
उसने अपने होठों पर लिपिस्टिक लगाई
और शेर के सामने खड़ी हो गई।

शेर ने इधर-उधर ताका
फिर सुन्दरी के होठों को चाटा
जनता ने तालो बजाई।
तभी उद्घोषक ने आवाज लगाई—
है कोई जो ऐसा करेगा,
उसे रुपया पाँच सौ मिलेगा।

एक युवक उठा और बोला
मैं यह पार्ट करुंगा।
उद्घोषक ने युवक को लिपिस्टिक थमाई
और बोला
लिपिस्टिक लगाओ और शेर के सामने जाओ
युवक बोला
श्रीमान मैं मर्द हूँ,
मर्द का पार्ट करूंगा शेर का नहीं
सुन्दरी को लाओ
यह लिपिस्टिक पहले
की तरह उसी को थमाओ

समता का त्यौहार है होली...

समता का त्यौहार है होली।
ममता का त्यौहार है होली।
आयु का बन्धन नहीं माने।
लिंग भेद कुछ भी नहीं जाने।
जेठ बहू संग खेलै होली।
समता का त्यौहार है होली।
धर्म जाति के बन्धन तोड़े।
ऊंच-नीच की बातें छोड़।
आपस में मिल गावें होली।
समता का त्यौहार है होली।
ब्राह्मण-हरिजन भेद मिटाकर।
विद्वान-मूर्ख को गले लगाकर।
दोनों बन जाते हम जोली।
समता का त्यौहार है होली॥

शायद पति मिल जाये

नेता की पत्नी साड़ियों की दुकान पर आई
दुकानदार ने अनेक साड़िया दिखाई
और पूछा कौन-सी पसन्द आई।
नेता की पत्नी बोली मैं साड़ी नहीं देख रही हूं
मैं तो अपने पति की राह देख रही हूं।
उनके आने तक समय बिता रही हूँ।
दुकानदार बोला मैं सभी साड़ी दिखा चुका हूं
तीन चार शेष हैं वह भी दिखाता हूं।
शायद कुछ बात बन जाए
उन्हीं में आपका पति मिल जाए।

उसे ढूँढ़ रहा हूँ

कवि सम्मेलन के लिए
खचाखच भरे हाल में
कविगण तरन्नुम से
कविता-पाठ कर रहे थे।
हास्य और व्यंग्य से
मर्माहत कर रहे थे।
जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि
की उक्ति को चरितार्थ कर रहे थे।
शृंगार की गहराइयों में वनिता को आंक रहे थे
सहसा एक हृष्ट पुष्ट बूढ़ा
हाथ में डंडा लिए
हाँफता और काँपता
दर्शकों को फाँदता
मंच के करीब आया
बूढ़े ने डंडा घुमाया
और मंच का चक्कर लगाया
यह देख कवि जो का सिर चकराया
उन्होंने कविता-पाठ बन्द कर
सम्भावित वार की ओर ध्यान लगाया।
यह देख बूढ़ा भांप गया।
कविता-पाठ के व्यवधान को जांच गया
वह बोला
रूको नहीं
डरो नहीं
कविता पढ़ो श्रीमान
आप हैं हमारे मेहमान
मैं तो विशेष काम से घूम रहा हूं
जिसने तुम्हें बुलाया है उसे ढूंढ रहा हूं।

With best compliments from :

As good as everyone thought
For Accurate Dispensing

SUPROL
LENSES

PHOTO GRAY
EXTRA

PHOTO BROWN
EXTRA

SUN BHARAT
EXTRA

available at all leading wholesaler's

THE INDIAN OPTICAL CO.

the leading in photo Cromic and tined lenses

111, Model Basti, New Delhi-110005 (India)

Phones : 770775, 773251, 735111

Cable . OPTIKINDIA *Telex : 031-66155 RKOGIN*

☐ **INDIAN TRADE INTERNATIONAL**
Bahadurgarh and New Delhi

☐ **RKG OPTICS (PVT.) LTD.**
New Delhi

With best compliments from :

Mas Services Pvt. Ltd.

AB-4, Safdarjung Enclave,
New Delhi-110029

Bharat Furnishing Co. (Regd.)

Class I Approved Govt. Contractors

Furnishers and Interior Decorators

卐

42, Defence Colony Market,
New Delhi - 110024

Phones : Offi. 623881 Works 697056

With best compliments from :

LET
YOUR MONEY
GROW
MORE & MORE

Dhir Singh
Director
Phone : Res. 7216777

Anil Kumar
Mg. Director
Phone : Res. 7112743

RAGHU CHITS (PVT.) LTD.

B-44, Mool Chand Colony, Rama Road,
Adarsh Nagar, Delhi - 110033

Phone : 7111564

सज्जन पुरुष श्री विष्णु जी

इन्द्रराजसिंह अग्रवाल

मैं श्री विष्णु जी को 20-25 साल से जानता हूं। बड़े परिश्रमी हैं। नम्र स्वभाव के हैं। घमण्ड कभी छुआ नहीं। मैं इस बात से खुश हूं कि एक साधारण अध्यापक होते हुए समाज में अपना स्थान बनाया है। कवि और लेखक के अतिरिक्त सामाजिक सेवा भी करते हैं। मैं उनको सज्जन पुरुष समझता हूं कभी किसी से झगड़ते नहीं देखा। 57वी वर्षगांठ पर अग्रोहातीर्थ जो उनके ऊपर विशेषांक प्रकाशित कर रहा हैं मेरी शुभकामनायें। यह दीर्घायु हों हम इसी तरफ समाज सेवा में सफल रहें।

यह विवाद से दूर रह कर खुश मिजाज हैं। इसी राज के कारण यह अभी तक स्वस्थ जीवनयापन कर रहे है। भगवान से प्रार्थना है कि वह इनको दीर्घायु प्रदान करें। स्मारिका प्रकाशन के मेरी शुभकामनायें स्वीकार हों।

महामन्त्री
महाराजा अग्रसेन अग्रवाल आश्रम हरिद्वार
48, माडल बस्ती, नई दिल्ली-5
फोन : 520877

कर्मयोगी श्री विष्णु चंद्र जी

विनय भूषण गुप्ता

श्री विष्णु चन्द्र गुप्ता लगभग 4 वर्ष पूर्व मेरे सम्पर्क में आये। अब वे मेरे सहयोगी के रूप मे अध्यापन कार्य कर रहे है। वे अनुभवी, निपुण परिश्रमी तथा लगन शील अध्यापक हैं। वे मित भाषी हैं और सबके साथ स्नेह तथा सहयोग पूर्वक कार्य करते हैं। कवि हृदय होने के कारण विद्यालय की सभाओं में समय-समय पर स्वरचित कविताएं सुना कर अपने भाव व्यक्त करते रहे हैं। गरीब तथा पिछड़े वर्ग के छात्रों की उन्नति में विशेष रूचि रखते हैं। इस सम्बन्ध में उन्होंने एक ऐसा कार्य किया जो भुलाया नहीं जा सकता। 2 वर्ष पूर्व छठी कक्षा में लगभग 160 विद्यार्थी थे। उनमें से 54 विद्यार्थी ऐसे थे जो ब्लाक बोर्ड पर हिन्दी में लिखे हुए शब्द को पढ़ भी नहीं सकते थे। गुप्ता जी ने उन्हें हिन्दी सिखाने के लिए अतिरिक्त समय देकर पहली कक्षा की पुस्तक पढ़ाई ओर उन्हें अक्षर का ज्ञान कराया। जिससे उनमें से अधिकांश कशा में उतीर्ण हो सके अन्यथा बार-बार फेल होकर पढ़ाई छोड़ देते।

वे सामाजिक कार्य कर्त्ता भी है। विद्यालय के बाद उनका समय समाज सेवा में व्यतीत होता है। वे निः स्वार्थ भाव से कार्य करते हैं। अतः यदि उन्हें कर्म योगी कहा जाये तो कुछ अनुचित नहीं होगा। मैं कामना करता हूं कि वे दीर्घायु हों और इसी लगन से समाज की सेवा करते रहे।

(उपप्रधानाचार्य) सी-378, समस्वती विहार, दिल्ली-34 फोन : 7273369

जैसा मैंने उन्हें जाना

शिव प्रकाश गुप्ता

यह बहुत हर्ष की बात है कि 'अग्रोहा तीर्थ' अपने अतिथि सम्पादक श्री विष्णु चन्द्र गुप्ता के सम्पादन कार्य के दस वर्ष पूर्ण होने पर उनके सम्मान में 'डा। विष्णु चन्द्र गुप्त विशेषांक' प्रकाशित कर रहा है। इसके लिए पत्रिका सम्पादक श्री चन्द्र मोहन गुप्ता धन्यवाद के पात्र हैं।

श्री विष्णु जी से मेरा परिचय लगभग 30 वर्ष पुराना है। हमने बहुत समय समय तक सामाजिक साहित्यिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में साथ-साथ काम किया है और कर रहे हैं। वे एक सीधे सरल स्वभाव वाले, चेहरे से हंसमुख परन्तु विचारों से गम्भीर व्यक्तित्व वाले समाज सेवी व्यक्ति हैं। धैर्य तथा कर्मठता तो उनमें कूट-कूट कर भरी है। प्रत्येक कार्य को पूरे दायित्व, तत्परता लगन एव निष्ठापूर्वक सम्पन्न करने का उनका स्वभाव ही बन गया है।

दूरदर्शिता श्री गुप्ता जी का विशेष गुण रहा है। जिस भी संस्था से वे सम्बद्ध रहे, वहां अपने कार्यकाल में कर्त्तव्यनिष्ठ कार्यकर्त्ता तैयार करके उस संस्था को स्थायित्व प्रदान किया।

मैं उनकी सम्पादकीय प्रतिभा का भी उल्लेख करना अ ना कर्त्तव्य समझता हूं। उनके द्वारा सम्पादित सामग्री उनकी चयन शक्ति, कलात्मक रुचि, साहित्यिक सूझबूझ तथा सामाजिक चिन्तन की द्योतक है। उनके द्वारा अब तक की सम्पादित सामग्री संग्रहणीय रही है, ऐसा कहना अतिश्योक्ति नही होगा।

श्री गुप्ता जी एक अग्र कवि के रूप में भी विख्यात है। उन्होंने अग्रवाल समाज, महाराजा अग्रसेन तथा अग्रोहा सम्बन्धित अनेक प्रेरक कविताओं की रचना की है। उनके द्वारा रचित 'अग्रवाल झंडा गान' को अखिलभारतीय अग्रवाल सम्मेलन ने सर्वोत्तम मानकर अखिल भारतीय मान्यता प्रदान की है।

होम्योपेथिक चिकित्सा प्रणाली में भी उनकी गहन रुचि है। पंजीकृत चिकित्सक के नाते वे बीमार व्यक्तियों की निःशुल्क सेवा करते हैं।

संक्षेप में मैंने श्री विष्णु जी को एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न, कुशल नेतृत्व के धनी एवं उत्साह से ओतप्रोत कार्यकर्त्ता के रूप में जाना है। आलोचना से अविचलित रहते हुए, उसके साकारात्मक पहलू को ग्रहण करने की क्षमता उनके सम्पर्क में आने वाला कोई भी व्यक्ति उनकी कर्त्तव्यपरायणता तथा प्रेम की छाप से अछूता नहीं रह सकता।

मैं उनकी दीर्घायु एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

महामन्त्री
दि. प्रा. अग्रवाल सम्मेलन दिल्ली
फोन : 526148, 522785

नम्र तथा मिलनसार समाजसेवी

छाजू राम सिंहल

डा. विष्णु जी ने अपनी मंजी हुई एवं ओजस्वी लेखनी द्वारा जिस प्रकार निस्वार्थ भाव से पिछले एक दशक से समाज सेवा की है तथा समाज में चर्तमुखी चेतना का प्रार्दुभाव किया हैं, वह सराहनीय है। ऐसे नम्र तथा मिलनसार समाज सेवी पर विशेषांक प्रकाशित करने के निश्चय पर मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूं तथा इसकी सफलता हेतु आपको शुभ कामनायें भेज रहा हूं। इस प्रकाशन से हजारों नवयुवकों को समाज सेवा की लगन हेतु अवश्य ही प्रेरणा मिलेगी। धन्यवाद सहित।

प्रधान वैश्य मित्र मण्डल
करोल बाग, नई दिल्ली-5
फोन : 5711411

वैश्य संगठन सभा के संस्थापक मंत्री

अशोक गोयल

डा. विष्णु चन्द्र गुप्त एक कवि, सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं समाज सेवी हैं। आपने अपने जीवन काल में अनेक समाज सेवा के कार्य किए तथा बचपन से ही सामाजिक कार्यों में संलग्न रहे। आप जब सदर बाजार क्षेत्र में रहते थे तब आपने सन् 1962 में क्षेत्र में समाज को संगठित करने के लिए कुछ समाज सेवियों को उत्साहित कर वैश्य संगठन सभा का गठन किया तत्पश्चात यह सभा उत्तरोत्तर उन्नति के पथ में वैश्य संगठन अग्रसर है। आज सभा का नाम सारे देश के अग्रवाल समाज में जाना पहचाना सा लगता है। आप इस सभा के संस्थापक सदस्य एवं मंत्री रहे हैं। सभा को इस बात पर गर्व है।

सदर बाजार क्षेत्र से जाने के बाद भी आप इस वैश्य संगठन सभा से जुड़े रहे तथा सभा के नित्य प्रति होने वाले कार्यों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते रहे।

डा. विष्णु चन्द्र गुप्त जी की आरम्भ से ही साहित्य एवं काव्य में रूचि रही है। आपने महाराजा अग्रसैन जी की जीवनी के बारे में काफी कुछ अनुसधान किया जिससे समाज के लोगों को महाराजा अग्रसैन जी के प्राचीन इतिहास के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ। आपने महाराजा अग्रसैन की जीवनी के बारे में कई स्तुति, कविता एवम् लेख आदि लिखे हैं। आप दहेज विरोधी अभियान में भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते रहे हैं।

मेरा व सभा के सभी सदस्यों का डा. विष्णु चन्द्र गुप्त जी से कई वर्षों से व्यक्तिगत सम्पर्क रहा है। डा. विष्णु चन्द्र गुप्त जी एक धार्मिक, कर्मठ समाज सेवी एवं महान कवि हैं।

मंत्री वैश्य संगठन सभा (पंजीकृत)
सदर बाजार, दिल्ली-6
फोन : 771901

धर्मवीर

दीर्घायु मंगलकामना

विष्णु तो विष्णु ही है। समाजसेवी भी है। अध्यापक भी है। कुशल पिता है और भाई भी है। सुपुत्र भी है कल्याणकारक भी है, क्या कहूं उनको वे सच्चे स्वयं-सेवक, विवेकशील वानप्रस्थी होते हुए युवक भी हैं। कविता जब करते हैं तो स्वतन्त्र निर्भीक विचारक भी हैं। वे बढ़ें, चढ़ें, दीर्घायु हों, ऐसी मंगलकामा भी है।

महामन्त्री
अखिल भारतीय आयुर्वेद विशेषज्ञ (स्नातकोत्तर) सम्मेलन
320 नरेला, दिल्ली-40

होनहार बिरवान के होत चीकने पात

डा. विष्णु चन्द्र जी को मैं बचपन से ही भली भांति जानता हूं। हम साथ-साथ पढ़े और साथ-साथ खेले हैं। मैंने और उन्होंने एफ. ए. और बी. ए. का अध्ययन साथ-साथ ही किया है। यह भी संयोग की बात है कि हम दोनों अध्यापन करके सेवा काल में एक ही दिन प्रविष्ट हुए थे। मेरा और डा. गुप्ता जी से निरन्तर घनिष्ठ सम्पर्क रहा। अतः मुझे उनको बारीकी से देखने का अवसर मिला।

मैंने देखा कि गुप्ता जी प्रारम्भ से ही समाजसेवी रहे। वे जन सम्पर्क बनाते रहते थे और लोगों से सहयोग करते रहते थे। भांति-भांति की विचार धारा के लोग उनके सान्निध्य में आए। उन्होंने सबके साथ मेल-मिलाप और तालमेल किया। कभी किसी को रुष्ट होकर अपने पास से नहीं जाने दिया। विचारों की स्वच्छन्दता में उनका पूर्ण विश्वास रहा। उन्होंने अपने विचारों को किसी पर बलात् नहीं थोपा अपितु आदान-प्रदान के द्वारा अपनी बात अथवा सिद्धान्त को मनवाया। सरस्वती के वरद पुत्र होने के कारण काव्य रचना में उनका स्थान अग्रणीय रहा। हास्यरस की कविताओं द्वारा उन्होंने लोगों का मनोरंजन क्या विद्यालय, क्या सार्वजनिक स्थल, और क्या साहित्य सम्मेलन आदि में किया। मार्मिक और चुटीला हास्य उनकी प्रतिभा के निखार का अनूठा प्रमाण है।

ओम दत्त गुप्ता

गुप्त जी एक विशिष्ट समाज सेवी रहे हैं। अतः उनका सम्पर्क अनेक धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं से रहा है। वे धार्मिक एवम् सामाजिक समारोहों में उन्मुक्तरूप से भाग लेते रहे हैं तथा तन मन और धन से सहायता भी करते रहे हैं। वे हिन्दी प्रचार के लिए सतत प्रयत्नशील रहे हैं। वे कई वर्ष तक साहित्य सम्मेलन से जुड़े रहे हैं। अपने क्षेत्र में कई वर्ष तक मंत्रित्व पद का भार भी संभाला है।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह ऐसे गौरवशाली व्यक्ति को दीर्घजीवी बनावे जिससे वे समाज और देश की सेवा करते रहें। अपने चुम्बकीय व्यक्तित्व से युवा पीढ़ी को प्रेरणा देते रहे तथा अपने सकवयस्क साथियों को जीने की कला सिखा कर उत्साह बढ़ाते रहे।

अन्तरंग मित्र एवं समाज सेवी
सी. ए. 55/2 टेगोर गार्डन नई दिल्ली-27

अनवरत समाजसेवी

केदारनाथ अग्रवाल

डा. विष्णुचन्द्रजी गुप्त युवा जीवन से ही कई धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं से जुड़े रहे हैं। जैसे वैश्य सगठन सभा सदर बाजार के कई वर्षों तक मंत्री रहकर सभा की उन्नति की ओर ले जाने में आपका विशेष योगदान रहा है। दिल्ली प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन में आपके सराहनीय कार्य को सदैव याद किया जाता है। आपकी कार्य शैली एवं लगन से अनेकों कार्य कर्ताओं को प्रेरणा मिली है। आज देश और समाज को ऐसे ही कर्मशील व्यक्तित्व की आवश्यकता है। परमपिता परमात्मा गुप्त जी को शक्ति एव चिर आयु प्रदान करें जिससे आप देश व समाज की अनवरत सेवा करते है। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

महामन्त्री हिन्दूपर्व समारोह समिति
22 साउथ बस्ती हरफूल सिंह, सदर थाना रोड, दिल्ली-6
फोन : 524082, 513172

सुपरिचित कार्यकर्त्ता

बलराज प्रेमी

डा. विष्णु चन्द्र गुप्त विशेषांक प्रकाशित करने से केवल उनका सम्मान ही नहीं होगा अपितु अग्रवाल समाज की प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी। श्री विष्णु जी से मेरा पिछले लगभग 25 वर्षों से परिचय ही नहीं अपितु हम दोनो ने एक दूसरे के साथ कधे से कंधा मिलाकर एक दूसरे के सहयोगी के रूप में समाज सेवा भी की है।

आज देश में कौन ऐसा अग्रवाल बन्धु है जो डा. विष्णु चन्द्र गुप्त जी के नाम से परिचित नहीं है। उन्होंने अग्रध्वज गान लिखकर ध्वज को जो सम्मान दिया है एवं अग्रबन्धुओं को जो चेतना प्रदान की हैं वह अद्वितीय है। इसके साथ-साथ उन द्वारा रचित सम्पादित अग्रकाव्य, 'अग्रोहादर्शन' पुस्तकें अग्रगीतिका अग्रवाल समाज में अपना एक विशेष स्थान रखती है। इन रचनाओं ने समाज मे ज्ञानवर्धन के साथ-साथ एक नया जोश व स्फूर्ति भी उत्पन्न की है।

कर्मठ समाज सेवी डा. विष्णु चन्द्र गुप्त को महान कार्यों के लिए इस शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूं।

मन्त्री
वैश्य अग्रवाल सभा (पश्चिम) आउटर रिंग रोड
6/215, सुन्दर विहार, दिल्ली-41 फोन : 5473813

सतीशचन्द्र 'कमलाकर'

शुभकामनायें

पत्र मिला प्रभु आपका 'कमलाकर' के नाम।
विनय भाव से स्वीकारें सादर मेरा प्रणाम॥
सादर मेरा प्रणाम, हुई सुखमय अनुभूति।
विष्णु चन्द्र गुप्ता की बोल रही है तूती॥
दीर्घायु हों, हिन्दी का झण्डा फहरायें।
पत्रकारिता, काव्य क्षेत्र में, सुयश कमायें॥

हास्य कवि
7093, शिवाजी पार्क, दिल्ली

कर्त्तव्य परायण व्यक्तित्व

गणेश द्विवेदी

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री विष्णु चन्द्र गुप्ता जी का सम्पर्क अनेक संस्थाओं के माध्यम से हुआ और मैंने उनमें एक कर्तव्यनिष्ठ, उत्साही, लगनशील, सूझबूझ वाले समर्पित व्यक्ति के रूप को देखा। अपने दायित्व का बोध उन्हें है तथा स्वीकारे गए काम को पूर्ण रूप से निभाना उनकी सहज विशेषता है—

इस प्रकार के कर्त्तव्य परायण एवं धर्मनिष्ठ व्यक्ति जो अपने दायित्व को विशेष महत्व देते है - बहुत थोड़े ही होते हैं।

हिन्दी और हिन्दी साहित्य सम्बन्धी गतिविधियों धार्मिक समारोहो में आवश्यकतानुसार आपकी सेवायें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन में एवं त्रिनगर मण्डल के मन्त्री के रूप में हिन्दी के प्रति की गई आपकी सेवायें सराहनीय हैं 3-4 वर्ष पूर्व श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर लेखू नगर में आयोजित तुलसी जयन्ती समारोह की साहित्यिक संयोजना का कार्यक्रम इनकी आयोजन कुशलता का परिचय देने को पर्याप्त हैं।

श्री विष्णुचन्द गुप्ता जो एक सफल लेखक एवं कवि के रूप में हिन्दी साहित्य के प्रति निष्ठावान् सेवक के रूप में समर्पित हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में आपने यश अर्जित किया है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है अग्रोहा तीर्थ हिन्दी मासिक। अग्रोहातीर्थ ने श्री विष्णुचन्द्र गुप्ता जी की सेवाओं के प्रतीक रूप में विष्णु चन्द्र गुप्त विशेषांक प्रकाशन की योजना के द्वारा जहां गुप्ता जी के प्रति आभार व्यक्त करने का काम किया है वहीं ऐसे व्यक्तित्व के सम्बन्ध में सामग्री प्रकाशित कर पत्र स्वयं गौरवान्वित हुआ है।

मैं श्री विष्णुचन्द्र गुप्ता जी की और अधिक सक्रियता के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता हूं।

महामन्त्री
श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव समिति
मानस मन्दिर, करोलबाग नई दिल्ली-5

शुभकामना

अर्जुन कुमार

''अग्रोहा तीर्थ'' हिन्दी मासिक पत्रिका पिछले 12 वर्षों से डा. विष्णु चन्द्र गुप्त सम्पादक द्वारा प्रकाशित की जा रही है। इस पत्रिका के माध्यम से अग्रवाल समाज में जो जागृति पैदा हुई वह अद्वितीय है। डा. विष्णु चन्द्र गुप्त ने समाज के कार्यों में गहन रूचि लेकर कार्य किया, अनेक कविताओं व लेखकों की रचना की और साथ ही सामाजिक धार्मिक कार्यों में अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए।

हम डा. विष्णु चन्द्र गुप्त की दीर्घायु की कामना करते हैं तथा आपके जीवन में सफलता मिले ऐसी भगवान से प्रार्थना करते हैं तथा आपके अग्रोहा तीर्थ के लिए भी शुभकामनायें भेजते हैं।

मंत्री—अग्रवाल विवाह समिति
8233-34 रानी झांसी रोड,
बाड़ा हिन्दुराव, दिल्ली-6
फोन : 775354

डा. विष्णु चंद्र गुप्त : एक संस्था चलती-फिरती

भाई विष्णु चन्द्र गुप्त, त्रिनगर दिल्ली में साहित्यिक सांस्कृतिक एव सामाजिक मतिविधियों के केन्द्र तो रहे ही हैं। साथ ही अग्रवाल जाति के लिए वे स्वयं में एक सस्था के रूप में उभरे हैं। सम्पादन की कला में निपुण, लोगों को एक साथ लेकर चलने में कुशल, सहनशील और मृदुभाषी विष्णु जी अकेले ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन दयानन्द मंडल को भी चला रहे हैं। वे उसके महामन्त्री है और आज तक किसी ने उनके इस पद पर उंगली नहीं उठाई। सर्वसम्मति से बार-बार चुने जाते हैं और पूरी संस्था को अपने बल पर लेकर चलते हैं। धनाभाव उन्हें कभी खलता नहीं। इस कोष को कभी खाली नहीं होने देते और खाली हो भी जाए तो उसे पहले भरने का यत्न करते हैं।

विष्णु जी कवि है, समाज सेवी है, अपनी ब्रदरी के अनुभवी कार्यकर्त्ता हैं। हजारों बड़े छोटे औद्योगिक लोगों से उनका सम्पर्क है।

उनके इस (अग्रोहा तीर्थ) विशेषांक के लिए मैं अपनी हार्दिक बधाई देता हूं। ईश्वर उन्हें शक्ति दें कि स्वस्थ रहकर साहित्य समाज एवं अपनी जाति की सेवा में संलग्न रहे।

—मुरारी लाल त्यागी

प्रधान सम्पादक
कुल्पान्त साप्ताहिक
1962 त्रिनगर दिल्ली-35
फोन : नि. 7128997 आ. 7114869

डा. विष्णु चन्द्र गुप्त एक प्रेरक व्यक्तित्व

—ब्रजभूषण गुप्त

श्री विष्णु चन्द्र जी से मेरा प्रथम परिचय सन् 1978 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की एक बैठक में हुआ, वहां महाराजा अग्रसेन पर इनका कविता पाठ भी हुआ था। प्रथम परिचय में ही इनके मित भाषी एवं सौम्य स्वभाव ने मुझे काफी प्रभावित किया। उसके बाद तो दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन की बैठकों में तथा दिल्ली की अग्रवाल सभाओं द्वारा आयोजित अनेकानेक अग्रसेन जयन्तियों तथा अन्य समारोहों में इनका सांन्निध्य बराबर प्राप्त होता रहा। मार्च 1986 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के ताल कटोरा स्टेडियम नई दिल्ली में हुए अधिवेशन में मुझे श्री विष्णु जी के साथ प्राय: 8-10 दिन तक कार्य करने का अवसर मिला। वहां भी इनकी मधुरवाणी व कार्य प्रणाली का एक अलग ही प्रभाव रहा।

श्री विष्णु चन्द्र जी के पिताजी ला. हुकमन्दचन्द जी व ताऊजी श्री नानक चन्द जी हकीम जी से तो मैं पिछले लगभग 45 वर्षों से परिचित था। श्री हकीम जी से सन् 1943 से आर्य वीर दल के सक्रिय कार्यकर्त्ता के नाते मेरा घनिष्ठ सम्पर्क था, उनकी गिनती आज भी एक सिद्धांतवादी आर्यसमाजी के रूप में की जाती है पिछले वर्ष ही वैश्य मित्रमंडल करोल बाग की ओर से एक अधिवेशन में उन्हें सम्मानित किया गया। श्री हकीम जी के 85 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित यज्ञ पर मुझे जाने का अवसर मिला वहाँ श्री विष्णु चन्द्र जी की उपस्थिति तथा इन से बात करने पर ज्ञात हुआ कि ये श्री हकीम जी के अनुज श्री हुकमचन्द जी के सुयोग्य पुत्र हैं।

यूं तो इनका परिवार (हरलाल गर्ग परिवार) एक समाज सेवी परिवार के रूप में माना जाता है किन्तु डा. विष्णु चन्द्र जी विशेष रूप से अग्रवाल समाज में एक लग्न शील एवं उत्साही कार्यकर्त्ता के साथ-साथ एक अच्छे कवि एवं लेखक के रूप में भी जाने जाते हैं। आपके द्वारा अग्रवाल समाज संबंधी कविता सग्रह 'अग्रकाव्य' तथा अन्य अनेक छोटी-छोटी समाजोपयोगी पुस्तिकाएं प्रकाशित की जा चुकी हैं। पत्रकार के रूप में भी आपका योगदान सराहनीय है। आपका सम्बन्ध हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा अनेक धार्मिक संस्थानों से भी रहा है।

हम परमपिता परमात्मा से डा. विष्णुचन्द्र गुप्त के स्वस्थ एवं दीर्घजीवन की कामना करते हैं जिससे समाज को उनका मार्ग दर्शन निरन्तर प्राप्त होता रहे।

मन्त्री—अग्रवाल सभा विवेकानन्द पुरी, दिल्ली-7
190, विवेकानन्द पुरी, दिल्ली-7

सद्भाव पुरुष

रघुवीर सिंह गुप्ता

मैं. डा. विष्णु चन्द्र जी को पिछले 15 वर्षों से जानता हूं। मद्रास से दिल्ली तबादला होने पर मेरा इनके चाचा स्व. लक्ष्मी नारायण जी द्वारा इनसे परिचय हुआ। मैंने पाया कि यह बहुत ही कुशल लेखक व सद्भाव पुरुष हैं। इनकी कवितायें पढ़ने से पता चला कि इनमें अग्रवाल समाज के लिए कितना अगाध प्रेम है। मैं अग्रवाल भवन ट्रस्ट शक्ति नगर दिल्ली का महामन्त्री रहा और इनके सहयोग से अग्रवाल समाज के लिए काफी कार्य किये। उनके सम्पादन में अग्रवाल भवन के स्वर्ण जयन्ती अवसर स्मारिका भी प्रकाशित की थी जो कि अपने आप में एक बहुत ही मूल्यवान स्मृति स्मारिका थी। मैं भगवान से इनकी दीर्घायु की कामना करता हूं और आशा करता हूं कि यह आगे भी इसी प्रकार से समाज सेवा करते रहें जैसा कि अब तक करते आये हैं।

अध्यक्ष—वैश्य इन्टर नेशनल परिवार (रजि.)
21/20 शक्ति नगर, दिल्ली-7
फोन : 7118968

सादा जीवन उच्च विचार के धनी

लालता प्रसाद गुप्ता

1. मुझे श्री विष्णु चन्द्र गुप्त जी के कई बार निवास पर जाने का अवसर मिला। वे बड़ी सादगी से रहते है। उन्होंने "सादा जीवन उच्च विचार" नामक मुहावरे को अपने जीवन में पूर्णतः उतार लिया है।
2. वे Homoepathic के अच्छे अनुभवी डा. भी हैं। और सभी की निस्वार्थ सेवा करते हैं।
3. वे "श्री अग्रसेन स्तुति" के रचियिता हैं। आपने "अग्र काव्य" का सम्पादन किया है। आजतक अग्रोंहा अग्रसेन व अग्रवालों के ऊपर इतना अच्छा सुन्दर काव्य देखने को नहीं मिला है। वे अग्रोहा तीर्थ के लगभग 10 वर्षों से अतिथि सम्पादक हैं। उनकी समय-समय पर दिये गये अनुभवों से इस पत्रिका ने काफी तरक्की की है। उनके अनेक लेख व कवितायें समय-समय पर स्मारिकाओं आदि ग्रन्थों में छपती रहती हैं। बहुत ही समयानुकूल होती है। उन्होंने कई स्मारिकाओं का सम्पादन कार्य भी किया है।
4. वे सुलझे हुए व्यक्ति, कर्मठ समाज सेवक, मिलनसार न अत्यन्त सहयोगी प्रवृत्ति के है। वे 12 मार्च 90 को 57वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। बधाई है, मै उनकी शतायु की कामना करता हूं। और आप मार्च 90 का "डा. विष्णु चन्द्र गुप्त विशेषांक" के रूप में प्रकाशित करने जा रहे हैं। इसलिए आपको भी अनेक अनेक धन्यवाद।

संरक्षक—अग्रोहा तीर्थ, देहली
ई-4/375, अरेरा कालोनी भोपाल-462016
फोन : 65917

साफ सुथरे सामाजिक कार्यकर्त्ता

—शिव दत्त गुप्ता

श्री विष्णु जी वैश्य समाज के एक साफ सुथरे सामाजिक चरित्र को उजागर करते हैं। आपने अनेक कवितायें लिखकर अपने आपको कवियों की अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा किया है। आप स्पष्ट राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत हैं और द्वेषभाव से ऊपर उठकर आप राष्ट्रीय स्तर का चिन्तन भी करते हैं। मैंने आपकी अनेकों रचनायें महाराजा अग्रसेन जी से सम्बन्धित सुनी है जो बहुत ही प्रेरणादायक हैं। आपके अतिथि सम्पादन में अग्रोहा तीर्थ पत्रिका को अमूल्य योगदान मिला है।

प्रभु से प्रार्थना है कि आपकी दीर्घायु हों। तथा निरन्तर इसी प्रकार वैश्य समाज व राष्ट्र की चेतना को जागृत करते रहें। भारतीय संस्कृति को भी आपने अपनी कविताओं के माध्यम से सुशोभित किया है।

कोषाध्यक्ष :
महाराजा अग्रसेन अग्रवाल आश्रम हरिद्वार
9-डी कमला नगर, दिल्ली

डा. विष्णु चंद्र गुप्त मेरी नजर में

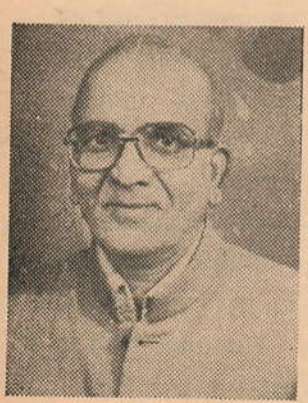

एन० सी० जैन

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त मेरे सम्पर्क में सन 1965-66 से हैं। इन 24 वर्षों में किसी को भी बहुत अच्छी तरह समझा, परखा और जाना जा सकता है, इतना कि जितना सम्भवत: वह खुद को भी न जानता हो।

समाज एक ऐसा समुदाय होता है जिसमें नि:स्वार्थी व स्वार्थी, सहयोगी व असहयोगी, बुद्धिजीवी व बुद्धिहीन, शिक्षित व अशिक्षित, सभ्य व असभ्य, त्यागी व लोभी। अवसरवादी आदि सभी प्रकार के व्यक्ति होते हैं। समाज हित में दो चार व्यक्ति ही रचनात्मक कार्य करते हैं अन्यथा अधिकांशत: आलोचना और टीका टिप्पणी करना ही अपना समाजहित का सर्वोपरि कार्य समझते हैं। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में कोई रचनात्मक कार्य करना कितना बड़ा युद्ध जितना होता है इसे आप स्वयं समझ सकते हैं।

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त ऐसे ही रचनात्मक कार्य करने वालों में से एक कर्मठ कार्यकर्ता हैं जिन्होंने विभिन्न परिस्थितियों में संतुलन बनाये रखकर परस्पर सहयोग और सौहार्द्र को हर पल बढ़ावा दिया है। कवि सम्मेलन हों या साहित्यिक गोष्ठियां, विष्णु जी का संचालन अपने आप में एक आकर्षण रखता है।

स्पष्ट वक्ता श्री विष्णु चन्द्र गुप्त को उनके 57वें वर्ष में प्रवेश करने पर मैं उन्हें अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूं और परमपिता परमात्मा से कामना करता हूं कि वे सदा स्वस्थ, मस्त और व्यस्त रहें।

सम्पादक : मुद्रण परिवार
1203/81 त्रिनगर, दिल्ली-35

पत्रिका के गौरव श्री विष्णु जी

घनश्यामदास गुप्ता
परामर्शक - अग्रोहा तीर्थ

जहां तक मुझे स्मरण आता है, सन् 1960 के आसपास स्व. मास्टर लक्ष्मी नारायण जी अग्रवाल द्वारा जब वे अ. भा. अग्रवाल महासभा के महामन्त्री थे, 'अग्रोहा' मासिक का जन्म हुआ था। पत्रिका के प्रथम अंक से ही मैं उससे जुड़ गया था और आज पर्यन्त प्रतिनिधि संवाददाता, सहसम्पादक और वर्तमान में परामर्शक के रूप में उससे जुड़ा हुआ हूं।

प्रारम्भ में सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री विद्यालंकार जी के सम्पादन में पत्रिका का स्वरूप बना और अच्छी प्रगति हुई। उस समय देश में अग्रवाल समाज की कुछ ही गिनी चुनी पत्रिकायें निकलती थी श्री विद्यालंकार जी के पश्चात् अच्छे सम्पादक के अभाव में पत्रिका कुछ अनियमित हो गई। आदरणीय मास्टर जी भी काफी वृद्ध हो चले थे। अब पिछले दशक में 'अग्रोहा तीर्थ' ने जो प्रगति की है वह उल्लेखनीय है। भाई विष्णु चन्द्र ने न केवल इसके कलेवर को ही संजोया और संवारा है, वरन् अच्छी सामग्री से भी इसे समृद्ध किया है। उनके अथक परिश्रम, लगन एवं समाज प्रेम का ही परिणाम है कि आज पत्रिका अपने अतीत गौरव को पुनः प्राप्त कर देश की प्रमुख पत्रिकाओं में अपना विशेष स्थान बना सकी है। इसके लिए उनकी सेवाओं की जितनी सराहना की जाए कम है।

दिल्ली यात्रा के अवसर पर भाई विष्णु जी से शक्ति नगर कार्यालय पर 2-3 बार भेंट का अवसर मुझे मिला। श्री विष्णु जी सरल स्वभाव, निष्काम और स्वार्थ रहित समाज सेवा भाव से काम करते रहना उनकी विशेषता है। अच्छे कवि और लेखक होने के कारण साहित्य जगत में उनका सम्मान है। अपने लेखों व गीतों के कारण उन्होंने अग्र-साहित्य के भडार को भरा है। हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्थापित कराने में वे जी-जान से जुटे हुए हैं जैसाकि इस विषय पर समय-समय पर प्रकाशित उनके लेखों से स्पष्ट होता है। दिल्ली में त्रिनगर क्षेत्र के अग्रवाल समाज को सुसंगठित करने में उनका विशेष योगदान रहा है।

मैं भाई श्री विष्णु चन्द्र जी गुप्त के और अधिक उज्जवल भविष्य एवं दीर्घायु की कामना करता हूं। आशा है आने वाले अनेक वर्षो तक 'अग्रोहा-तीर्थ' उनकी सेवाओं का लाभ उठाता रहेगा।

101, प्रिंस कालोनी, राम नगर
शाहजहांनाबाद, भोपाल
फोन 542413

साहित्यकार समाज सेवी

कविवर डा. सत्यप्रकाश 'बजरंग'

अगस्त माह 1960 की घटना है कि मैं राजधानी में उत्तर प्रदेश कासगंज जिला एटा से दिल्ली में आया था ओर तब मैं यहां भटक रहा था इस हेतु कि कोई सुहृदयी मिले ओर मुझे अग्रसर होने का सुअवसर प्राप्त हो। सौभाग्य से सदर टिम्बर मार्केट में हिन्दी साहित्य सम्मेलन सदर बाजार मण्डल की ओर से डा. हरिवंशराय बच्चन जी की अध्यक्षता में एक भव्य हिन्दी कवि सम्मेलन था। उस दिन मैं मात्र श्रोता ही था कि अचानक वहीं मेरा प्रथम परिचय संयोजच सुकवि श्री विष्णुगुप्त जी से हुआ और उनके द्वारा विवश किए जाने पर मेंने प्रथम बार उस मंच से काव्य पाठ भी किया। उनकी प्रेरणा से मुझे हिन्दी साहित्य सम्मेलन दिल्ली प्रदेश से जुड़ने का अवसर मिला। बहुत समय बाद कुछ समय के लिए मैं भी 'अग्रोहा-तीर्थ' पत्रिका का सम्पादक बना तब भी उन्होंने रचनाओं द्वारा मेरा सहयोग किया यदि मैं श्री विष्णु चन्द्र गुप्त जी को साहित्य-तीर्थ कहूं तो अत्युक्ति न होगी। उन्होंने साहित्य व समाज को सदैव कुछ न कुछ दिया है लिया कुछ भी नहीं। आपने साहित्य प्रेमियों की रुचि का परिष्कार किया है।

वैश्य अग्रवाल संगठन, अखिक भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, प्रान्तीय अग्रवाल महासंघ आदि सभी में सामाजिक संगठन-कौशल का अभूतपूर्व परिचय श्री विष्णु चन्द्र जी ने सदैव दिया है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन सदर बाजार मडल के तो वे वर्षों तक मंत्री एवं प्रदेश प्रतिनिधि रहे हैं। शिक्षकों के संगठन के लिए भी उन्होंने प्रयास किए तथा इन्होंने सभी हिन्दी आन्दोलनों में क्रियाशील होकर भाग लिया। कवि-सम्मेलन अग्रवाल सम्मेलन दिल्ली राज्य में महाराजा श्री अग्रसेन जी की विशाल शोभा यात्रा हरिद्वार में अग्रवाल सभा द्वारा स्थापित धर्मशाला आदि सभी में श्री विष्णु चन्द्र जो के प्रयास की छाया आज भी देखने को मिलती है।

आज समाज में श्री विष्णु चन्द्र गुप्त एक ऐसे ज्वलन्त उदाहरण हैं जिन्होंने स्व. मास्टर लक्ष्मीनारायण जो के अधूरे कार्यों को पूरा करने में अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया है। उनको प्रशस्ति उन प्रयासों व उस प्रतिभा की वास्तविक आरती उतारना हैं जो समाज में और अधिक क्रियाशील युवकों को समाज, देश, जाति संगठन एवं साहित्य को सम्मुन्नत बनाने हेतु सक्षम हो सकेगी।

डी-47 महाकाली मदिर, भजनपुरा,
शाहदरा दिल्ली-53

मानवता संतरी

कविवर, डा० सन्त हास्यरसी

(1) 'पल्ला ग्राम', हल्ला भयो, हुकमचन्द गर्ग घर,
रवि का उजाला लिए, 'लल्ला' एक आया है।
सुनाम धन्य, विष्णु चन्द्र गुप्त, अनुरक्त नभ,
धरती ने लोरियां दे अंक में, झलाया है।
मन्त्री जी, प्रधान, महामन्त्री, 'अध्यक्ष-कोष',
'मानवता सन्तरी' का पद भी निभाया है।
छप्पन को पा किया, जाति का उद्धार किया,
सत्तावनवाँ (जन्म दिन) आपका मनाया है।

(2) सत्य के उपासक, विनाशक कुरीतियों के,
मानव हितार्थ, नव-सृजन प्रेणता हैं।
धर्म की धुरी को मान, करते कल्याण रहे,
ज्ञान के विज्ञान के वे हिन्दी-अध्येता हैं।
मृदुभाषी, विश्वासी, सरलस्वभाव लिए,
'हास-मुस्कान' के विक्रेता अरुकेता हैं।
दूध से विचारों में निमज्जित हैं 'विष्णु जी',
कलिकाल में भी आप द्वापर हैं त्रेता हैं।

(3) 'अग्रोहा तीर्थ' को सुतीर्थ में बदल दिया,
कर्मठ समाजसेवी, सुधि पाठशाला आप।
कवि गोष्ठी का रंग, सम्मेलन उमंग,
मन-मन-मनके की मणि, मोतिन की माला आप।
सूरा की सारंगी, मीराबाई के नुपुर बोल,
'संत-भक्त' कवियों में अष्टछाप बने आप।
'वीर भूमि प्रसूता' के विज्ञ-त्राण छाड़ रहे,
अग्रसेन-अग्रवाल-अग्रोहा पहचान आप।

(4) सागर गहराई, शैल-शृंग सो ऊंचाई लिए,
मानव की चेतना का आपका साहित्य है।
जन-जन की है पीर, धीरज अधीर को है,
शब्द-शब्द आपका प्रभात का आदित्य है।
सुमन का सौरभ है, भावना का गौरव है,
क्षमा का अजस्र श्रोत, बहता जहाँ नित्य है।
कवि, कृति, लेखनी को कोटिशः बधाई,
भाई लम्बी होवे उम्र, यह संत का औचित्य है।

4087, रामगर (लोनी रोड़)
दिल्ली-110032

चिर परिचित समाज सेवी

—श्यामलाल गुप्ता

श्री विष्णु जी को मैं बहुत ही लम्बे अरसे से जानता हूं। संघ के कर्मठ कार्यकर्ता रहे हैं और बड़ी निष्ठा के साथ कार्य करते रहे हैं। उनमें यह विशेषता है कि समाज के लिए और हिन्दी काव्य क्षेत्र में बहुत ही सराहनीय कार्य किए हैं। मैंने जब भी उनकी कविताओं को सुना व पढ़ा है उनके धार्मिक, देशभक्ती से समाज संगठन की झलक मारती है। अक्सर जब भी किसी समारोह में मिलते हैं तो सभी पर अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं और कविता आदि से उपस्थित समूह को आनन्दित कर देते हैं।

भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनकी यह अमिट छाप दिन दूनी बढ़ती ही रहे और वह दीर्घायु हों।

सेन्ट्रल होजरी फैक्टरी
526 सदर बाजार दिल्ली-6
फोन : 771647 घर 590091

गीतकार एवं कवि

कविवर जय प्रकाश शर्मा 'जय'

अग्रोहा तीर्थ हिन्दी मासिक के अतिथि सम्पादक डा. विष्णु चन्द्र गुप्त एक प्रभावशाली व्यक्ति हैं। कार्य-तत्परता, विशेषज्ञता, कार्य कुशलता है आदि कई श्रेष्ठ गुणों के साथ-साथ आप राष्ट्रीय चेतना, देश प्रेम, महाराजा अग्रसेन जी व अग्रोहा समाज पर लिखने वाले और कवि सम्मेलनों तथा कवि गोष्ठियों में पढ़ने वाले गीति कवि भी है। आप अग्रोहा समाज और अन्य विधाओं पर भावना प्रधान व प्रेरणा से पूर्ण लेख लिखने वाले लेखक भी हैं। राष्ट्र भाषा हिन्दी की आप तन, मन, धन, की सेवा कर रहे हैं। आपने सर्वदा मातृ भाषा हिन्दी का शख बनाया है और ध्वज लहराया है। इन के गुणों से समाज प्रभावित होता रहा है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन (दयानन्द मण्डल) व 'अग्रोहा तीर्थ' मासिक के संचालन में आप पिछले कई बर्षो से जुड़े हुए है। आप उत्तम, पूर्ण कुशल तथा कर्मठ हिन्दी और अग्रोहा समाज सेवी हैं। आप की दृष्टि से न तो कोई व्यक्ति उपेक्षित रहता है और न ही कोई कार्य भाग छुटता है। आप की बोल चाल मनोहारी रही है। बातचीत करने में बड़े संयम से काम लेते हैं और व्यवहार कुशलता के आदर्श प्रतीत होते रहे हैं। आप स्वच्छ विचारों, साधारण जीवन जीने वाले साहित्य व काव्य जगत में अपने लेखों व कविताओं के माध्यम से प्रेरणावान लेखनी के धनी हैं।

उनके सम्मान में 57वें वर्ष में प्रवेश पर "अग्रोहा तीर्थ" विशेषांक के रूप में प्रकाशित होने जा रहा है जो उनको उनके जन्म दिन पर आगामी वर्ष पर समर्पित होगा पाठकों के लिए यह अंक प्रेरणा का श्रोत हागा।

[गीति कवि]
18, आदित्य सदन, अशोक रोड, नई दिल्ली-1
फोन : 386488

कुशल सम्पादक श्री विष्णु चंद्र गुप्ता

कविवर शिवकुमार शर्मा
(बाबा भरमाय)

श्री गुप्त जी का मेरे साथ गत 15 वर्षों से सम्बन्ध है, एक सामाजिक, धार्मिक व्यक्ति हैं, अपना जीवन अध्यापन कार्य से प्रारम्भ किया और आज भी अध्यापक हैं, अपने इस काल में गुप्त अध्यापन के साथ-साथ अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। अपने को सामाजिक कार्यों में समर्पित कर रखा है न केवल अग्रवालों के सामाजिक समारोहों में तन, मन, धन से पूर्ण सहयोग देते हैं अपितु दिल्ली व आस-पास की अन्य धार्मिक समाज व कवि समाज में अपने आपको पूर्ण समर्पित करते देखा गया है। अनेक पत्र पत्रिकाओं में लेख देना तथा सम्पादन का कार्य बहुत ही सुन्दर ढंग से करते आ रहे हैं। अभी 1989-90 की एक स्मारिका स्वर्ण जयन्ती समारोह बड़ौदा (राजस्थान) को मैंने देखी उसका सम्पादन श्री गुप्त द्वारा ही उच्च कोटि का है। हमारे राजधानी कवि समाज दिल्ली के सक्रिय सदस्य हैं समय समय पर हमारे सम्मेलनों में आकर अपनी रचना सुनाते हैं। इस प्रकार गुप्त जी का जीवन सदैव हीं अपने समाज और संस्था के लिए उदारता पूर्ण रहा है। इनके 57वें वर्ष के प्रवेश पर मैं इनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूं। ईश्वर इन्हें सदैव प्रसन्न व खुश रखें।

राजधानी कवि समाज
178, शारदा निकेतन, सरस्वती विहार, दिल्ली-34

शुभ कामनायें

श्री विष्णु जी को मैं करीबन 1962 से जानता हूं इन्होंने ही एक नई संस्था (वैश्य संगठन सभा) सदर बाजार की स्थापना की थी तब से इनका मेरा परिचय है यह गली ब्राह्मण में रहते थे। हम मॉडल बस्ती में रहते थे मगर इनके काम निडर व स्पष्टवादिता से बहुत प्रभावित हुआ फिर इनके लेख पत्रिका व कार्य ऐसा है कि अकेले ही चले जैसे गांधी जी ने चलाया भगवान इनको लम्बी उम्र दें और समाज का काम और भी अच्छा करें मेरी यही कामना है।

—गणपत राय गुप्ता

प्रबंधक अग्रवाल पंचायती धर्मशाला
चेरिटिवेल डिस्पैन्सरी
मॉडल बस्ती, दिल्ली-5

कर्मठ समाजसेवी श्री विष्णु जी

—रघुवरदयाल अग्रवाल

एक सामाजिक कार्यकर्ता होने के नाते हमें ऐसे समाजसेवियों की तलाश रहती है जो कि हमे समाज सेवा के कार्यकलापों में सहयोग एव मार्गदर्शन प्रदान कर सकें। अपनी इसी खोज में हमारा लगभग 6 वर्ष पूर्व समाज की लोकप्रिय पत्रिका 'अग्रोहा तीर्थ' के द्वारा उसके अतिथि सम्पादक डा. विष्णु चन्द्र गुप्त से परिचय हुआ, वे एक सुमझे हुए एवं कर्मठ समाजसेवी, लेखक व कवि हैं। 'अग्रोहा तीर्थ' का ऐसा कोई अंक नहीं होता है जिसमें उनके धार्मिक, सामाजिक एवं साहित्यिक कार्यकलापों का उल्लेख नहीं होता। 'अग्रोहा तीर्थ' के द्वारा उन्होंने समय-समय पर समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के परिचय प्रकाशित करके इस पत्र को उपयोगी बनाया है। इस प्रकार उन्होंने इस पत्रिका के स्वरूप को एक नई दिशा प्रदान की है।

ऐसे धर्म प्रेमी व साहित्य सेवी लेखक—कवि एवं कर्मठ समाजसेवी के 57वें जन्म-दिन पर हम परमपिता परमात्मा से उनके दीर्घ जीवन, अच्छे स्वास्थ्य एवं मंगलकल्याण की प्रार्थना करते हैं जिससे हम जैसे सामाजिक कार्यकर्ताओं को उनका सहयोग एवं मार्गदर्शन निरन्तर प्राप्त होता रहे।

प्रबन्धक, पुस्तकालय
पो. अगरयाला (मथुरा)

सौम्य मूर्ति श्री विष्णु गुप्त

दिवानचन्द वैश्य

डा. विष्णु चन्द्र जी गुप्त जिन्हें मैं और मेरे साथी श्री बी. एल. टिण्डल, प्रचार मन्त्री, अ. भा. अवधवाल वैश्य महा सभा, बड़े आदर और स्नेह से अक्सर विष्णु जी कहकर पुकारते है, पिछले अनेकों वर्षों से शक्ति नगर, अशोक विहार, शास्त्री नगर, गुजरांवाला टाऊन, सिविल लाईन, लाल किला मैदान, दरिया गंज, चाँदनी चौक, सदर बाजार, महाराजा अग्रसेन नगर, माडल बस्ती में सम्पन्न सामाजिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक सम्मेलनों और समारोहों में कविता पाठ और भाषण करते हुए एवं विशिष्ट अतिथि गणों द्वारा, उनकी लोक सेवाओं के लिए सम्मानित एवं पुरस्कृत होते अनेकों बार उनके दर्शन किए है।

आप मिलनसार, अतिसरल स्वभाव, सौम्य मूर्ति मधुर भाषी, नम्र, ओजस्वी, वक्ता और अनेकों गुणों के धनी और माननीय व्यक्ति हैं। इस सुअवसर पर उन्हें बधाई देते हुए उनके स्वास्थ्य एवं चिरायु की मगल कामना करता हूं।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
अ. भा. वैश्य एकता परिषद (पं.)
8 डुप्लेक्स फ्लैटस, गुड़मण्डी
दिल्ली-7

शुभकामनायें

नन्द किशोर गर्ग

आपके द्वारा सम्पादित मासिक 'अग्रोहा तीर्थ' पिछले कई वर्ष से पढ़ने का सुअवसर मिल रहा है। आपके पत्र द्वारा ज्ञात हुआ कि आप मार्च मास में एक विशेषांक निकाल रहे है जो कि पूरी तरह अग्रोहा तीर्थ के अतिथि सम्पादक डा. विष्णु चन्द्र गुप्त की काव्य रचनाओं एवं सामाजिक गतिविधियों पर आधारित होगा भाई विष्णु जी को मैं पिछले 20 वर्ष से जानता हूं। उनकी हिन्दी के प्रति असीम श्रद्धा एवं अग्रवाल समाज के संगठन में निष्ठा अनुकरणीय हैं। मैं विशेषांक की सफलता की कामना करता हूं और अग्रोहा तीर्थ परिवार को अपनी शुभकामनायें प्रेषित करता हूं।

सदस्य, प्रापर्टी टेक्स कमेटी
दिल्ली प्रशासन, दिल्ली
फोन : 536666, 502674

प्रेरणा स्रोत श्री विष्णु जी

श्याम लाल गर्ग

माननीय विष्णु जी से मेरा सम्पर्क अनेक वर्षों से निरन्तर रहा हैं। यह तो उनका स्वभाव ही बना हुआ है कि जिससे सम्पर्क बना तो निरन्तर और अटूट बना। देश सेवा का एक माध्यम आपने मातृभाषा हिन्दी के प्रसार को माना और उसमें जिस लगन एवं व्यय के साथ लगे हैं न केवल त्रिनगर व दिल्ली राज्य अपितु सम्पूर्ण देश में "हिन्दी साहित्य सम्मेलन" में अग्रसर रहकर क्या व्यास जी और क्या सत्य नारायण बंसल आदि अनेक महानुभावों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर राष्ट्र सेवा में बाल पन से रहे।

अग्रवंश में उत्पन्न होने के कारण जातीय स्वाभिमान तो उनकी शैली बनी है। वैश्य समाज के लिए तन-मन-धन समर्पित कर अनेक अग्रवाल संगठनों में कार्य करने का सौभाग्य रहा है। वैसे देश का कोई भी अग्रवाल संगठन अपने किसी उत्सव में श्री विष्णु जी की उपस्थिति को अनिवार्य मानता है। अग्रवाल-अग्रसेन और अग्रोहा पर श्री विष्णु जी की काव्य रचनाओं से समाज को गर्व है।

हिन्दू मन्दिर निर्माण, मूर्ति स्थापना, रामलीला आदि कार्यों में बढ़ चढ़ के भाग लेना और उन संस्कारों को जनमानस तक पहुंचाना मानों उन्होंने नियम बनाया है। त्रिनगर की अनेक संस्थाओं से आपका गहरा सम्बन्ध है। सामाजिक कार्य में अपने आपको सलग्न रखने के कारण आपसे यहां का बच्चा-बच्चा परिचित है।

पूर्व महानगर पार्षद
3861 त्रिनगर, दिल्ली-35
फोन : 7127227

आस्थाओं के प्रति दृढ़ डा. विष्णु जी

सत्यनारायण बंसल

आप श्री विष्णुचन्द्र गुप्त के सम्बन्ध में अपना विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं, यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। श्री विष्णुचन्द्र गुप्त से मेरा परिचय लगभग 25 वर्ष पुराना है। दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन में उनसे निकट संपर्क आया। अग्रवाल सभा आदि अनेकों सार्वजनिक संस्थाओं के वे अनथक कार्यकर्त्ता रहे हैं। निष्काम भाव से समाज सेवा के आदर्श पर वे हमेशा चले हैं अपनी आस्थाओं के प्रति दृढ़, निर्भीक चरित्रवान एवं तेजस्वी सामाजिक कार्यकर्ता के नाते उनकी ख्याति है। भगवान से मेरी प्रार्थना है कि वे उन्हें दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन प्रदान करें, जिससे वे सदैव अग्रसर रह कर समाज सेवा करते रहें।

पू. अध्यक्ष स्थाई समिति, दिल्ली नगर निगम
6479, कटरा बड़ियान, फतेहपुरी,
दिल्ली-110006
फोन : 239273

कर्मठ व समाज सेवी व्यक्तित्व

अग्रबन्धु लक्ष्मी नारायण अग्रवाल

अग्रोहा तीर्थ पत्रिका अपने अतिथि सम्पादक डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त के सम्मान में विशेषांक का प्रकाशन कर एक सराहनीय कार्य कर रही है। श्री विष्णु जी से मेरा गत छः वर्षों पूर्व महाराज अग्रसेन आश्रम हरिद्वार के कार्यक्रमों से सम्बन्ध जुड़ा। यह एक अच्छे कवि, पत्रकार, अग्रवाल समाज के लिए निष्ठावान कार्यकर्त्ता हिन्दी के लिए समर्पित व्यक्तित्व के रूप में उभरे हैं। कार्यक्रम की योजना और संचालन में यह सिद्धहस्त हैं।

वैश्य इन्टरनेशनल परिवार के प्रत्येक कार्यक्रमों में मैंने उनकी क्षमता को भली भाँति अनुभव किया है।

आशा है आपका यह विशेषांक अन्य समाज सेवियों के लिए भी प्रेरणा प्रदान करेगा। मैं उनके सुखद भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाये करता हूं।

संस्थापक
वैश्य इन्टरनेशनल परिवार (रजि.)
19/7 शक्ति नगर, दिल्ली-7
फोन : 7111709

वैश्य समाज के विदुर

—पुरुषोत्तम गर्ग

विष्णु जी वर्तमान वैश्य समाज के विदुर हैं। ऐसे व्यक्ति के सम्मान में विशेषांक प्रकाशित करना सूर्य को दीपक दिखाना है। श्री विष्णु जी अग्रवाल समाज के कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेते हुए देखे जाते हैं। चाहे वे कार्यक्रम हरिद्वार में हो, इन्दौर में हो, हरियाणा या दिल्ली में हों। वे एक मृदुभाषी और मिलनसार समाज सेवी है। विष्णु जी शतायू हों। विशेषांक की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

सी-4/7, मॉडल टाउन, दिल्ली-9
फोन : 7128283

अंतरंग मित्र डा. विष्णु जी

डॉ० रमेशचन्द्र गुप्त

"श्री विष्णु चन्द्र गुप्त विगत बीस वर्षों से मेरे अन्तरंग मित्रों में रहे हैं। वे एक कुशल अध्यापक, अनयक सामाजिक कार्यकर्ता, विचारक और लोकप्रिय कवि हैं। अग्रवाल जाति के उत्थान और कुरीतियों के निवारण के लिए वे धहर्निश प्रत्यनशील रहते हैं। दिल्ली के विभिन्न मंचों से उन्होंने अनेक अवसरों पर अपने विचार व्यक्त किये हैं जो समाज-सुधार और जातीय मनोबल के विकास में प्रेरक रहे हैं। कवि रूप में भी उन्होंने इस दृष्टि से अपने दायित्व को समझा है और ऐसी सशक्त रचनाएं प्रस्तुत की हैं जो सुनने वाले का केवल मनोरंजन ही नहीं करती वरन् उसे कुछ संस्कार और विचार-मंथन की दिशा दे कर जाती हैं। छन्दोबद्ध रूप में सहज भाषा शैली में लिखी गई उनकी कविताएं श्रोताओं को प्रभावित करती है और जब वे मंच पर उनका सस्वर पाठ करते हैं तब तो सहृदय झूम ही उठते हैं।

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त 'अग्रोहा तीर्थ' के अतिथि सम्पादक के रूप में पिछले दस वर्षों में अपनी पत्रकार प्रतिभा और जागरूकता का भी परिचय देते रहे हैं। यह उचित ही है कि 'अग्रोहा तीर्थ' के विशेषांक का प्रकाशन उनके सम्मान में किया जा रहा है। इस अवसर पर श्री विष्णु जी को मैं हार्दिक बधाई देते हुए उनके दीर्घायुष्क की मंगल-कामना करता हूं जिससे वे ऐसी ही कर्मठता, सरजता, समपर्ण भावना और निःस्वार्थ दृष्टि से समाज-सेवा और लेखन व पत्रकारिता से जुड़े रहें।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के किसी कविता में ये उद्‌गार व्यक्त किये थे — "वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।" इस मायने में श्री विष्णु चन्द्र गुप्त वास्तव में मनुष्य हैं, उनका व्यक्तित्व प्रेरक है, वाणी में निश्छलता है औरे व्यवहार में किसी प्रकार का दुराव-छिपाव नही। समाजोपयोगी कर्म करते हुए वे शतायु का संस्पर्श करें, यही कामना है।

प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
पी. जी. डी. ए. वी. कालिज (सांध्य)
एवं पूर्व सदस्य, एकेडेमिक काउंसिल
दिल्ली विश्वविद्यालय
फोन : 5727968

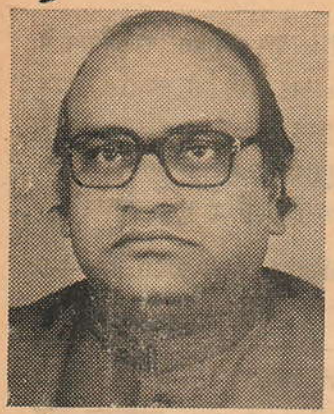

श्याम सुन्दर गुप्ता

शुभकामना

अग्रोहा तीर्थ के विशेष अंक प्रकाशन पर हार्दिक बधाई। यह अंक डॉ. विष्णु चन्द्र गुप्त जैसे कर्मठ समाज सेवी के सम्मान में प्रकाशित हो रहा है यह विशेष हर्ष की बात है। डा. गुप्त हिन्दी-हिन्दु-हिन्दुस्तान की भावना को सार्थक करने के भागीरथी प्रयास में सफल हों यही कामना है। मैं उनके स्वस्थ जीवन व दीर्घायु की शुभ कामना करता हूं। समस्त अग्रोहा तीर्थ परिवार को मेरी हार्दिक बधाई।

संगठन मन्त्री
दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन
937, गली तेलियान, तिलक बाजार, दिल्ली-6
फोन : 2510117

सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के प्रेरक डा. विष्णु जी

प्रहलाद अग्रवाल

सामाजिक कार्यकर्ताओं के प्रेरक अद्भुत संगठनात्मक शक्ति के स्रोत, सरल एवं सात्विक जीवन के प्रेरणादायक आदरणीय श्री विष्णु चन्द्र जी गुप्त से मेरा व्यक्तिगत परिचय लगभग 22-23 वर्ष पूर्व अग्रसेन युवक मंडल दिल्ली के स्थापना काल में हुआ। अन्य सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं की तरह आप इस मंडल के भी संस्थापक एवं प्रधान रहे।

अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रयोग कराते हुए आपने अपने एवं समयानुकूल विचारों से युवकों की उच्छृंखल प्रकृति का समाज एवं देश के प्रति सदुपयोग कराते हुए उन्हें जिस प्रकार समाज के एक प्रहरी के रूप में खड़ा किया उस सबकी सोच से मेरा मन रोमांचित हो उठता है।

मुझ में जैसे-जैसे सामाजिक सोच की चेतना बढ़ती गई वैसे-वैसे आपसे समय-समय पर विचारों के क्रियान्वन में मतभेद भी कभी-कभी प्रकट हुए। मुझे याद है कि अपनी उस समय की प्रकृति के अनुसार जब भी मेरी आवाज में तेजी आई आपने हंसकर नम्रता की वर्षा कर मेरी तेजी को भड़कने नहीं दिया। और कमाल तो यह रहा कि कभी भी अपने विचारों को थोपा नहीं बल्कि हमारे विचारों को बड़ी सूझ-बूझ से समयानुकूल ढाला।

आपके इस विलक्षण व्यक्तित्व कि छाप हमारे दिलों पर हमेशा तरो ताजा रहती है। आपके आनन्दमय, सफल पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन और दीर्घ आयु की कामना करते हुए दयावान प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि आपका आर्शीवाद एवं मार्गदर्शन यथावत मिलता रहें।

भू. पू. मन्त्री
अग्रसेन युवक मंडल
4585, गली नत्थन सिंह
पहाडी धीरज, दिल्ली-6

कुशल संगठक विष्णु चन्द्र गुप्त

राधा कृष्ण गुप्त

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त एक कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता हैं। मैंने उन्हें वैश्य संगठन सभा सदर बाजार, दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा श्री अग्रसेन समिति में कार्य करते हुए निकट से देखा हैं। श्री विष्णु चन्द्र गुप्त जिस किसी कार्य को हाथ में लेते है उसे पूरी तत्परता और लगन के साथ पूरा करते हैं उनके मन में कभी स्वयं अपने मान-सम्मान अथवा पद इत्यादि की बात नहीं आई परन्तु जिन संस्थाओं में उन्होंने कार्य किया उनके कार्य-कर्त्ताओं की ही यह प्रबल इच्छा हुई कि विष्णु चन्द्र जी उनका नेतृत्व करें।

जब श्री अग्रसेन समिति की स्थापना हुई और मुझे उसका प्रधान पद संभालने की बात आई तो विष्णु चन्द्र गुप्त ही एक ऐसे व्यक्ति दिखाई दिये जो महामन्त्री के रूप में कार्य करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त थे। बाद में उनके कार्य ने इस धारणा की पुष्टि की, कोई भी कार्य विष्णु चन्द्र जी के सुपुर्द किया जाए तो फिर उस ओर से निश्चित ही रहा जा सकता है। कार्य-क्रमों की रूप रेखा तैयार करने और उसे व्यावहारिक रूप देने में वे सिद्धहस्त हैं।

श्री अग्रसेन समिति ने प्रारम्भ में स्मारिका प्रकाशन कार्य अपने हाथ में लिया और मुझें यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि इस कार्य का श्रेय प्रमुख रूप से श्री विष्णु चन्द्र गुप्त को ही जाता है। 1978 में समिति की ओर से सम्पूर्ण दिल्ली के स्तर पर अग्रसेन जयन्ती का एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें महाराजा अग्रसेन के जीवन से सम्बन्धित एक नाटक का भी मंचन हुआ। इसके अतिरिक्त वैश्य/अग्रवाल सांसदों, महानगर पार्षदों व निगम पार्षदों के परिचय एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करने तथा अग्रवालों से सम्बन्धित कविताओं का एक संग्रह प्रकाशित करने की योजना हाथ मे ली गई थी। विष्णु चन्द्र गुप्त ने इनका सम्पादन किया और इन प्रकाशनों की पूरे भारत वर्ष में सराहना की गई।

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त एक अच्छे कवि भी है और उन्होंने अनेक विषयों पर कवितायें लिखी हैं। दिल्ली के अनेक स्थानों पर होने वाले अग्रसेन जयन्ती समारोहों में विष्णु चन्द्र जी ने अध्यक्ष और विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लिया है और अन्य कई अवसरों पर मच संचालन तथा कविता पाठ भी किया है।

मेरी परम-पिता-परमात्मा से यही प्रार्थना है कि श्री विष्णु चन्द्र गुप्त दीर्घ-जीवी हों तथा वे इसी प्रकार समाज सेवा के कार्य में अग्रणी रहें।

प्रधान श्री अग्रसेन समिति, दिल्ली
111, माडल बस्ती
नई दिल्ली-5
फोन : 770775, 773251

रघुनन्दन शर्मा

लौहपुरुष डा. गुप्त जी

"अग्रोहा-तीर्थ" मासिक के अतिथि सम्पादक श्री विष्णु चन्द्र गुप्त के पत्रिका के साथ 10 वर्ष जुड़े रहने तथा 12 मार्च को उनके जीवन के 57 वें वर्ष में प्रवेश पर मैं अतीव हार्षित हूं। मार्च 90 में पत्रिका द्वारा उनसे प्राप्त सम्पादकीय सहयोग के विनियम में इसके द्वारा डा. विष्णु चन्द्र गुप्त विशेषांक के प्रकाशनोत्सव पर मैं विकट अभिलाषित हूं। दो कारण हैं एक तो वे मेरे अभिन्न हैं और दूसरे उनके द्वारा किये गये विविध-आयामी प्रतिभा के कारण भी। श्री गुप्त की धर्मिता बहुमुखी है। वे अग्रवालों से सम्बन्धित काव्य-प्रणेता, धर्म एवं अध्यात्म में सर्व-सुरूचि पूर्ण मन, यज्ञ में आस्था लिए आपाद-मस्तक कृतज्ञ व समाज के प्रति अपना देय दायित्व निभाते लौह पुरुष हैं। श्री गुप्त निश्चित ही अभिनन्दनीय हैं।

सम्पादक
कजरारी (हिन्दी) अर्द्धवार्षिकी
ए-2/10ए केशवपुरम्, दिल्ली-35

सर्मपित समाज सेवी डा. विष्णु जी

दुली चन्द गुप्ता
(समाजसेवियों के प्रेरक)

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त के परिवार से मेरा सम्बन्ध एवं सम्पर्क बाल अवस्था से ही है। श्री गुप्त जी को समाज सेवा की प्रारम्भिक दिशा एवं प्रेरणा अपने ही परिवार से प्राप्त हुई। बाल्यकाल से ही धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने के कारण, समान जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने की क्षमता एवं योग्यता बढ़ती गई। अपने सामाजिक जीवन के उत्तरदायित्व को भली भांति निभाने के लिए, पारिवारिक जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अध्यापन कार्य अपनाया। विद्यालय के समय के अतिरिक्त शेष सारा समय समाज सेवा के लिए समर्पित है।

श्री विष्णु चन्द्र जी ने साहित्य के क्षेत्र में भी सराहनीय सफलता प्राप्त की है। अनेक विषयों पर आपके विचार गहन अध्ययन एवं चिन्तन पर आधारित होते है। अपने अथक परिश्रम के फलस्वरूप ही आपकी वीर रस एवं हास्य रस की कवितायें समाज में विशेष स्थान प्राप्त किए हुए है। आपके द्वारा रचित अग्रवाल झण्डा गान को अग्रवाल सम्मेलन में मान्यता प्राप्त हुई हैं -

अग्रोहा तीर्थ मासिक पत्रिका में अतिथि सम्पादक के नाते आपका योगदान अत्यन्त सराहनीय है। इस पत्रिका ने समस्त अग्रवाल समाज को जागृत करने तथा अपने प्राचीन वासं स्थल अग्रोहा की जानकारी उपलब्ध कराने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।

श्री विष्णु चन्द्र जी का आदर्श जीवन अनुकरणीय एवं प्रेरणादायक है। मैं उनके सामाजिक जीवन में पूर्ण सफलता की मंगल कामना करता हूं।

4626, गली बहुजी
पहाडी धीरज, दिल्ली-110060
फोन : नि. थ21572, का. 739758

सामाजिक उत्तरदायित्व एक दृष्टि में :

1910/145, त्रिनगर, दिल्ली-110035

दूरभाष : 7125267

डॉ० विष्णु चन्द्र गुप्त

वर्तमान में— **मन्त्री :** दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन दयानन्द मण्डल, त्रिनगर

महामन्त्री : श्री अग्रसेन समिति, दिल्ली ।

मन्त्री : दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन ।

: श्री हरलाल गर्ग परिवार संघ ।

: दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन ।

सदस्य कार्यकारिणी : अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन ।

: श्री धार्मिक लीला कमेटी एवं माधव संकीर्तन मण्डल ।

पूर्व में— **मन्त्री :** वैश्य संगठन सभा, सदर बाजार एवं आर्य समाज, सदर बाजार ।

: दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन, सदर बाजार ।

: भारतीय स्वयं सेवक मण्डल ।

: त्रिनगर (रामपुरा) अग्रवाल सभा ।

: भारतीय साहित्य संस्थान, त्रिनगर शाखा ।

उप महामन्त्री : अग्रवाल समाज त्रिनगर ।

संयोजक : प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, वाद विवाद ग्रुप, ईदगाह रोड ।

: विश्व हिन्दू परिषद् सदर क्षेत्र, नागरिक सुरक्षा ।

संरक्षक एवं प्रधान : श्री अग्रसेन युवक मण्डल, सदर बाजार ।

प्रकाशित साहित्य : अग्रकाव्य, अग्रगीतिका, अग्रोहा दर्शन, उपासना, आराधना बजरंग बली महिमा एवं 20 स्मारिकाओं का सम्पादन ।

रुचियाँ : कवितायें, लेख, तैराकी, ड्राईविंग, घुड़सवारी, खो खो, कबड्डी, पर्यटन आदि ।

नागरिक सुरक्षा : फायर फाइटिंग तथा रायफल चलाना, प्राथमिक सेवा होम्योपैथिक धर्मार्थ चिकित्सक, मंच संचालन/भाषण आदि ।

With best compliments from :

SUSHIL GUPTA
Director

PANKAJ FINANCE & LEASING LTD.

101-102, Magnum House-II,
Commercial Complex (Opp. Milan Cinema)
Karam Pura, New Delhi - 110015

Phone : 533761, 5411413
Telex : 31-76106 PFL IN

With best compliments from :

Ajanta Paper Mart

Deals in :

All kinds of Paper and Board

3645, Pahari Dhiraj, Bara Hindu Rao,
Delhi - 110006

Phones :
Shop 778537 Resi. 514879

GANPAT LAL

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :

विजय टिम्बर ट्रेडर्स

सागवान कट साईज, आर्डर सप्लायर एवं समस्त प्रकार की इमारती लकड़ी

B-105, वेयर हाऊसिंग स्कीम कीर्ति नगर, नई दिल्ली

फोन : आफिस-5416797, निवास-7125461, 7229769

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :

जन क्रान्ति का अग्रणी हिन्दी साप्ताहिक

कल्पान्त

1962-त्रिनगर, दिल्ली - 110035

☐ सम्पादक—विनोद उलियान ☐ प्र० सम्पादक—मुरारी लाल त्यागी

☐ सहयोगी - नरेश कुमार त्यागी

With best compliments from :

N. P. GUPTA

HPPI

Hindustan Petroleum Products India (Regd.)

Dealers in :

All kinds of Petroleum Products, Chemicals & Empty Drums

61, Ashoka Park Main, Rohtak Road,
Delhi - 110 035
Phone : 5418151

With best compliments from :

SHYAM PLASTICS

Manufacturers of :

All kinds of PVC Footwears & Dunlop Sports Shoes

J. K. Plastic Products

B-10/5, Wazirpur Industrial Area,
Delhi - 110052

Phones : 7119065, 7123497, 7127334

BHARAT PACKAGING

Manufacturers of :

All kinds of Corrugated Boxes

A-11, Rohtak Road Industrial Complex,

Nangloi, Delhi-110041

Phones : 5471339, 5418691

चिलात्मक गतिविधियां : डॉ0 विष्णु चन्द्र गुप्त

अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर अग्रवाल समाज त्रिनगर के मंच पर भाषण देते हुए उप-महामंत्री श्री विष्णु जी।

14 सितम्बर को हिन्दी दिवस पर आयोजित शोभा यात्रा में मध्य में हिन्दी अकादमी के सचिव डॉ. नारायण दत्त पालीवाल, चन्द्र मोहन गुप्ता व विष्णु चन्द्र गुप्त (टोपी पहिने हुए।)

हिन्दुस्तान दैनिक के सम्पादक श्री मिश्र द्वारा हिन्दी साहित्य सम्मेलन त्रिनगर की हिन्दी स्मारिका का विमोचन कराते हुये श्री विष्णु जी।

कजरारी त्रैमासिक के श्री विष्णुचन्द्र गुप्त सम्मान विशेषांक का विमोचन करते हुये श्री सत्यनारायण बंसल पूर्व अध्यक्ष स्थायी समिति दिल्ली नगर-निगम साथ में सम्पादक श्री रघुनंदन शर्मा एवं श्री विष्णु गुप्त।
(नवम्बर 1981)

कलपान्त पाक्षिक के सम्पादक श्री मुरारी लाल त्यागी दयानन्द मण्डल के कवि-सम्मेलन का उद्घाटन भाषण करते हुये साथ में पूर्व प्रधान स्व० डॉ. नरेशचन्द्र गुप्ता एवं मन्त्री श्री विष्णु जो गुप्त।

सन् 1967 में सभा के मन्त्री श्री विष्णु चन्द्र गुप्त महाराजा अग्रसेन जयन्ती आयोजन पर मंच संचालन करते हुये।

तुलसी जयन्ती के अवसर पर दायें से सर्वश्री विष्णु चन्द्र गुप्त, गोविन्द प्रसाद अग्रवाल, रामभक्त स्व० श्री कपीन्द्र जी, हास्यकवि गोपाल प्रसाद व्यास, रामायण सभा के महामन्त्री त्रिलोक मोहन जी।

भारतीय साहित्य संस्थान के मंत्री श्री विष्णु जी महापौर स्व० लाला हंसराज गुप्त का स्वागत करते हुये।

अग्रवाल प्रदर्शनी के आयोजक श्री विष्णु जी पूर्व उपराष्ट्रपति श्री बी.डी. जत्ती जी को प्रदर्शनी दिखाते हुये।

卐

दयानन्द मंडल त्रिनगर द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन के अवसर पर उपाध्यक्ष श्री सोमदेव शर्मा के साथ श्री विष्णु जी हास्य मुद्रा में।

राजर्षि टंडन जयन्ती के अवसर पर (1 अगस्त 80) नई दिल्ली नगर-पालिका के रंगायन में मंच संचालन करते हुये श्री विष्णु जी, बैठे हुये श्री जुगल किशोर चतुर्वेदी (जयपुर) व श्री नारायण चतुर्वेदी जी।

महाराजा अग्रसेन अग्रवाल आश्रम ट्रस्ट हरिद्वार के मंगल-मिलन कार्यक्रम के अवसर पर बायें से सर्वश्री चन्द्र मोहन गुप्ता, श्यामलाल गर्ग, विमल विभाकर, विष्णु जी एवं नन्दकिशोर गर्ग भोजन का आनन्द लेते हुये।

कवि सभा दिल्ली द्वारा डॉ. संत हास्यरसी के जन्म दिवस पर कवि सम्मेलन में बायें से सर्वश्री डॉ. बजरंग, विष्णु गुप्त, चन्द्रमोहन गुप्ता संत हास्यरसी एवं विमल विभाकर।

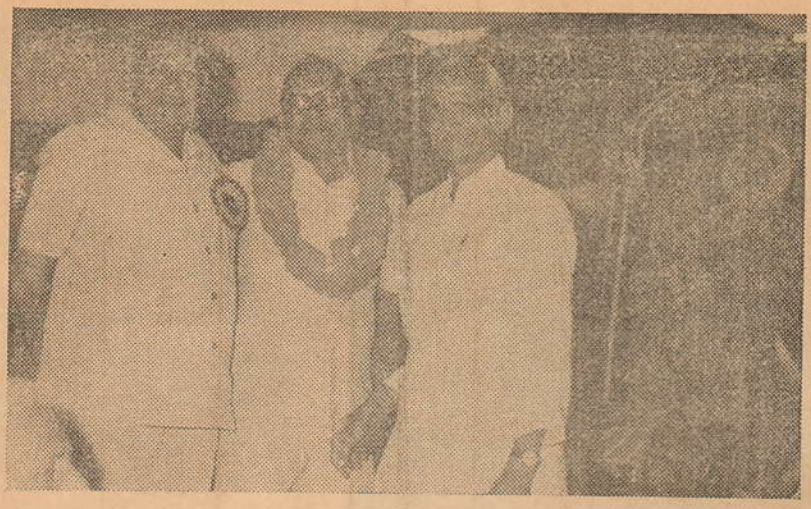

अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर अग्रवाल सभा विवेकानन्द पुरी के मंत्री श्री बृजभूषण गुप्ता श्री विष्णु जी का माल्यार्पण द्वारा स्वागत कर रहे हैं। बाएं श्री भगवत स्वरूप गुप्ता खड़े हैं।

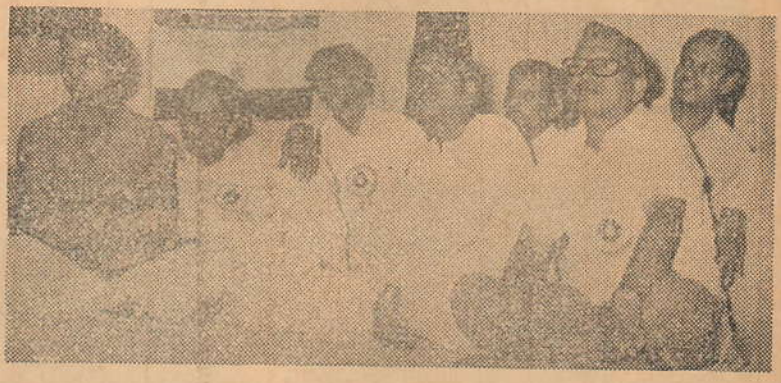

त्रिनगर जैन समाज कवि सम्मेलन के संयोजक श्री विष्णु जी अन्य कवि बायें से—सर्वश्री अशोक चक्रधर, अल्हड़ बीकानेरी, मुरारी लाल त्यागी, श्री कृष्ण मित्र के साथ बैठे हुये।

अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर अग्रवाल धर्मशाला ट्रस्ट करौल बाग के सहमंत्री श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल श्री विष्णु जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुये।

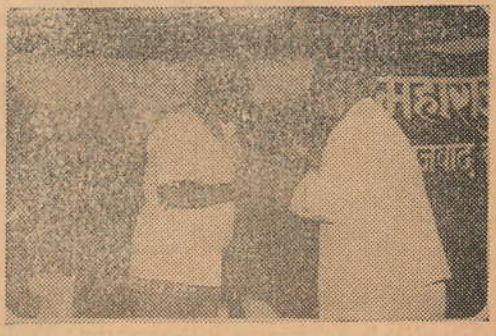

अग्रवाल धर्मशाला ट्रस्ट करौल बाग द्वारा आयोजित जयन्ती के अवसर पर पूर्व प्रधान श्री जगन्नाथ गुप्त श्री विष्णु जी का स्वागत करते हुये।

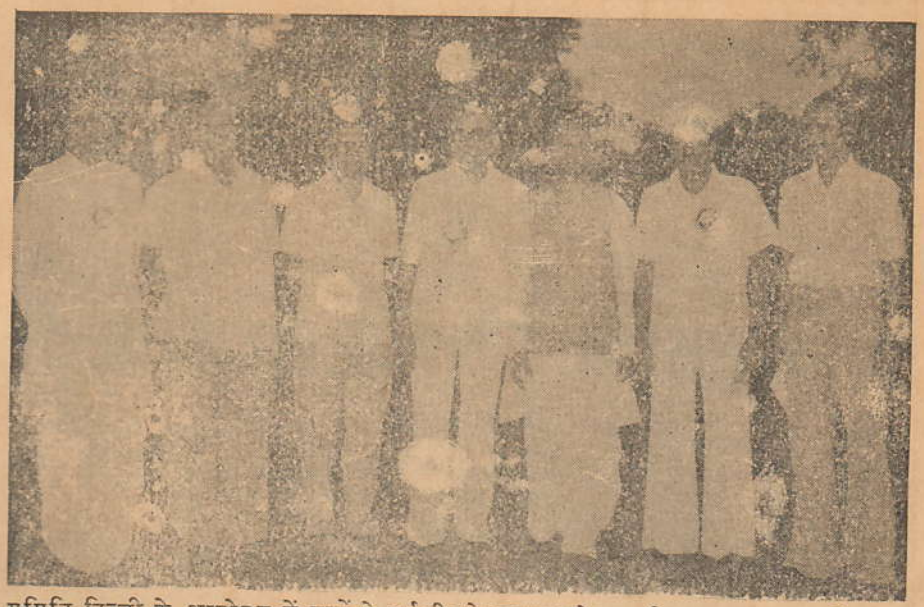

अग्रसेन समिति दिल्ली के आयोजन में बायें से सर्वश्री ओमप्रकाश गोयल, शिवप्रकाश गुप्ता, विष्णु चन्द्र गुप्त, राधाकृष्ण गुप्ता, रामेश्वरदास गुप्त, स्व. डॉ. नरेश गुप्ता एवं गौरी नन्दन सिंघल ।

सामाजिक प्रेरक एवं मित्र—

श्री बिशन स्वरूप पटवारी

डॉ० नारायण दत्त पालीवाल

कविवर दुलीचन्द शशि

With best compliments from :

ANKUR ENTERPRISES

Deals in :

All kinds of Chemicals

278, Katra Pedan, Tilak Bazar,
Khari Baoli, Delhi - 110006

Phones :
Offi. 2915100 Resi. 01272, 22010

With best compliments from :

B. R. & SONS

(A house of chemicals)

289/2, Katra Peran, Tilak Bazar,
Khari Baoli, Delhi - 110006

Phones :
Offi. : 2911228, 2926713
Resi. : 2910207, 2248296

RAKESH GOEL

57वें जन्म दिवस पर
हार्दिक शुभ कामनाओं सहित :

शिवदत्त गुप्ता

9-डी, कमला नगर, दिल्ली - 110007

दूरभाष : कार्यालय-739121 निवास-2919438

शुभ कामनाओं सहित :

गोयल एन्टरप्राइजेज

केमीकल्स इम्पोर्टर तथा एक्सपोर्टर

4378/4, मुरारी लाल स्ट्रीट, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110002

दूरभाष : आफिस-3261720, 3270481
निवास-7112518, 7122927

WITH
BEST
COMPLIMENTS
FROM

Offi. : 5725434
Phones : Res. : 511656
773735

FURMATS INDIA

Dealers in :

Furnace Material Viz, Ferro Alloys, Iron Scrap
Refractories Etc.

405-Partap Chamber Gurdwara Road,
Karol Bagh, New Delhi-110005

57वें जन्म दिवस पर
हार्दिक शुभ कामनाओं सहित :

दूरभाष : दुकान : 529580
निवास : 779201

सिंघल प्लास्टिक भण्डार

सभी प्रकार के प्लास्टिक दाने के विक्रेता एवं सभी प्रकार के
प्लास्टिक के रंगाई कर्त्ता

3078-बी, बहादुरगढ़ रोड, दिल्ली-110006

सम्बन्धित फर्म :

सिंघल प्लास्टिक्स

प्लास्टिक व रबड़ के हर किस्म के पाउडर की रंगाई का एकमात्र केन्द्र

7054-बी, गली टंकी वाली, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-110006

दूरभाष : फैक्टरी-779903, निवास-779201

Tel : 'GEMINI'

Phones : Offi. 23001
24001
Resi. 23002
24002

P. M. KARUPPANNAN

□

PANIYAN TEXTILES

WEAVING FACTORY

9-D/3, R. K. Puram, P. B. No. 93

KARUR - 639001

Agents :

Standard Textiles Agencies

25/125, Shakti Nagar, Delhi-110007

Phone : 7116415

पारिवारिक परिचय

डॉ० विष्णु चन्द्र गुप्त

चैत्र शुक्ल द्वादसी सम्बत् 1990

श्री विष्णुचन्द्र गुप्त का जन्म चैत्र कृष्णा द्वादशी सम्वत् 1999 (12 मार्च, 1934) को फरूखनगर, जिला गुड़गाँव में हुआ। आप बी.ए. एवं प्रभाकर पास हैं। संप्रति राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक हैं।

आपके पिता का नाम लाला हुकमचन्द गुप्ता, माता का नाम श्रीमती गंगादेवी हैं। नाना का नाम स्वर्गीय लाला मुन्शीराम (फरूख नगर) जिला गुड़गांव निवासी, दादा का नाम स्वर्गीय लाला बन्सीलाल और पड़दादा का नाम स्वर्गीय लाला हरनन्द राय था। आपके पूर्वज ग्राम पल्ला (दिल्ली) के निवासी थे।

आपका विवाह 10 दिसम्बर 1954 को गुड़गांव छावनी में हुआ। आपकी पत्नी का नाम श्रीमती रामेश्वरी गुप्ता है, पत्नी के पिता का नाम स्वर्गीय लाला झारिया मल था।

आपके तीन पुत्र हैं, श्री महेश चन्द गुप्ता-31 वर्ष, पत्नी श्रीमती सत्या गुप्ता सुपुत्री लाला गौरी शंकर, माउण्ट आबू की हैं। श्री दिनेश चन्द्र गुप्ता-24 वर्ष, पत्नी श्रीमती नेहा गुप्ता सुपुत्री लाला सत्य नारायण जिन्दल, शीदी पुरा, दिल्ली की हैं। चि० नरेन्द्र कुमार गुप्ता की आयु 22 वर्ष है, वह अविवाहित है।

आपके तीन भाई हैं, श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता-50 वर्ष, हिन्दुस्थान कॉपर में कार्यरत हैं। आपकी पत्नी श्रीमती शान्ति देवी सुपुत्री लाला रामानन्द, पंचगांवा की हैं। श्री प्रेमनारायण गूप्ता-47 वर्ष, कपड़े का व्यवसाय है, आपकी पत्नी श्रीमती शकुन्तला गुप्ता, सुपुत्री लाला डीगराम, माछरौली की है। श्री चन्द्र गुप्त-42 वर्ष कपड़े का व्यवसाय है। आपकी पत्नी श्रीमती सुशीला देवी, सुपुत्री लाला तुलसी राम सिंहल कालका जी, दिल्ली की हैं।

आपकी दो पुत्रियां हैं, श्रीमती नीलम गोयल-29 वर्ष, धर्मपत्नी श्रीमती राम निवास गोयल, त्रिनगर दिल्ली। श्रीमती प्रोमिला गोयल-27 वर्ष, धर्मपत्नी श्री आनन्द कुमार गोयल, शोरा कोठी, सब्जी मण्डी, दिल्ली।

आपकी बहिन श्रीमती पुष्पा गुप्ता की आयु 39 वर्ष है, उनके पति का नाम श्री विनोदकुमार गुप्ता है, वह मॉडल बस्ती, दिल्ली में रहते है।

श्री विष्णु चन्द्र गुप्त की वंशावली
९वीं पीढ़ी तक

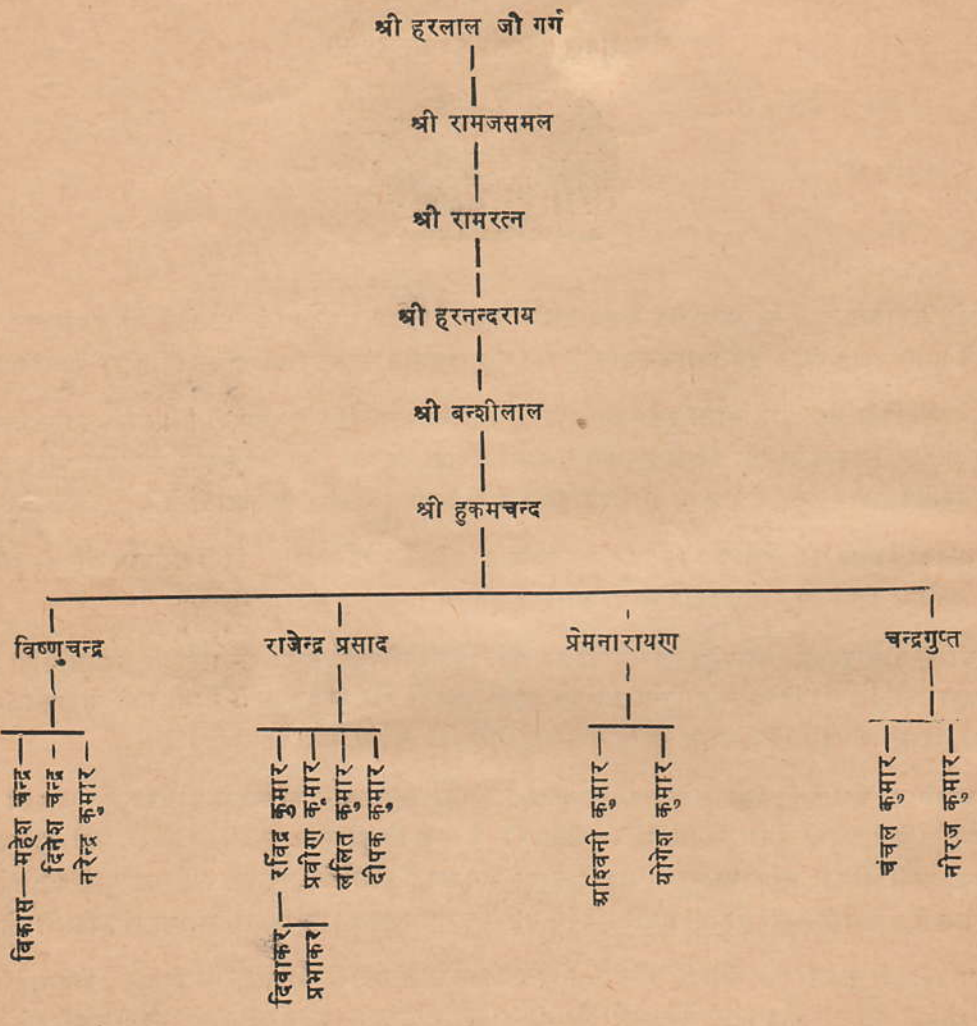

डॉ० विष्णु चन्द गुप्त परिवार

ला० हुकमचन्द गुप्ता पिताजी

डॉ० विष्णु चन्द्र गुप्त (स्वयं)

श्रीमती रामेश्वरी गुप्ता (धर्मपत्नी)

महेश चन्द्र गुप्त (पुत्र)

दिनेश चन्द्र गुप्त (पुत्र)

नरेन्द्र कुमार गुप्त (पुत्र)

श्री राम निवास गुप्त, दामाद

श्री आनन्द कुमार गोयल, दामाद

श्री विनोद कुमार गुप्ता, बहनोई

बाएं से खड़े हुए —डा० विष्णु जी, भाई राजेन्द्र प्रसाद गुप्त, प्रेमनारायण गुप्त व चन्द्र गुप्त
बैठे हुए —पिता जी ला० हुकमचन्द गुप्त, माता जी श्रीमती गंगा देवी

हकीम नानक चन्द, ताऊजी

डा० कुल भूषण गुप्ता, भाई

श्री रघुवीर सिंह अग्रवाल, चाचा

श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, भाई

श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, साडू

श्री सत्यनारायण जिन्दल, समधी

सहयोगी—

राम किशन गुप्ता

नरेश पाल गुप्ता

अनिल कुमार गुप्ता

राजेन्द्र गुप्ता

जयकरण सिंघल

सुनील अग्रवाल

नरेश चन्द गुप्ता

सुरेश चन्द गुप्ता

राजेश कुमार

सामाजिक प्रेरक एवं मित्र—

जयनारायण खण्डेलवाल

प्यारे लाल गोयल

गौरी नन्दन सिंघल

बिशन दयाल गोयल

रामेश्वर दास गुप्ता

हरकिशन लाल गुप्ता

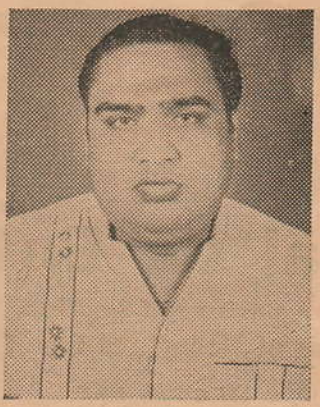

रामफल गुप्ता

कविवर विमल विभाकर

दुलीचन्द बंसल

With best compliments from :

PREM CHAND & SONS

Chemicals and Kirana Merchants

275, Katra Peran, Tilak Bazar,
Delhi - 110 006

Phones :
Off. 252 9192, 291 7058
Res. 251 7378, 252 9168

P. C. JAIN

With best compliments from :

Phones : *Offi. 2513059, 2513700*
Resi. 505420, 5415023

Chemical de Enterprises

Dealers and Stockists :
All kinds of Heavy and Fine Chemicals

Stockists :
Titanium Di-oxide, Gold Bronze Powder,
Hydro Sulphite of Soda

180-A, Tilak Bazar,
Delhi - 110006 (India)

Rajender Gupta
Virender Gupta

सामाजिक प्रेरक एवं मिल–

चिरन्जी लाल अग्रवाल

स्व० तिलक राज अग्रवाल

स्व० निरंजन लाल गौतम

सुदर्शन कुमार सवारा

साधूराम सिंघल

सुनील अग्रवाल 'चंचल'

With best Compliments from :

Central Hosiery Agency

Wholesale Hosiery Merchants & Commsion Agents

526, Sadar Bazar, Delhi-110006

Phones : O-771647, R-590091

Agents of :

CENTURY BANIAN

Charu Textile Mills

30-D, Khalat Babu, Lane,
Calcutta-37
Phone : 554935

FINLAY BANIAN

New Empire Hosiery Mills

21, Adhar Chandra Das Lane
Calcutta-700067
Phone : 353221

With best compliments from :

IDEAL CHEMICALS

Manufacturer and Dealer of :

ISI Grade Paraffin Wax

Factory :
Khasra No. 308, Village Mundka
Delhi-110041

Residence :
21/20, Shakti Nagar,
Delhi-110007

Phones :
Fac. 87-662 p p. *Resi. 711-8968*

दक्षिण एशिया में प्रथम रोमांचित पार्क

'एसेलवर्ल्ड' का उदघाटन

बम्बई-अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री सुभाष गोयल द्वारा निर्मित 'एसेलवर्ल्ड' पार्क के क्लब का उद्घाटन महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री श्री शरद पवार के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

दक्षिण एशिया में सर्वप्रथम धड़कन थमा देने वाला रोमांचित करने वाला मनोरंजन व शैक्षणिक पार्क, जो कि बम्बई पर्यटकों के लिये विशेष आकर्षण एवं बम्बई वासियों के लिये दिन भर का पूर्ण मनोरंजन व साहस भरने वाला पार्क। 'एसेलवर्ल्ड' के एक क्लब के उद्घाटन निमित्त श्री शरद पवार अपनी धर्मपत्नी तथा श्री सुभाष गोयल और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला गोयल के साथ हैलिकॉप्टर द्वारा पार्क 'एसेलवर्ल्ड' जो बम्बई के गोराई स्थित बना है, वहां पर उतरे। उनके हैलिकॉप्टर से उनरते ही भाई लक्ष्मी गोयल ने पुष्पमालार्पण कर मुख्यमन्त्री का स्वागत किया। द्वारचार हेतु गोराई गांव की कोली महिलाओं ने मंगल-कलश तथा अक्षतपुष्प पंखुडियां उन पर बरसाकर स्वागत किया। द्वार पर खड़ी एसेलवर्ल्ड की ट्रेन में अतिथियों को बिठा कर पार्क की सैर करायी गई। कई झूलों और खेलों को दिखाते हुए क्लब के शिलान्यास का आवरण श्री शरद पवार के कर-कमलों द्वारा हटाया गया। क्षेत्रीय संसद सदस्य श्री राम नाईक समारोह अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे। स्वागत हेतु कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम रखे गये। जिसमें स्वागत गीत, कोली नृत्य व मणिपुर नृत्य के पश्चात् श्री सुभाष गोयल ने महाराजा अग्रसेन के आशीर्वाद को लेते हुए उनके चित्र को पुष्पमाला पहना कर महमानों का स्वागत किया और पार्क की योजना, कल्पना पर अपने विचार प्रकट किये। मराठी में उन्होंने अपने भाषण के प्रारंभ में कहा कि 'मैं मराठी बोलने का अभ्यास कर रहा हूँ, परन्तु आज का भाषण मैं मराठी में नहीं बोल सकूंगा, इसका मुझे दु ख है।

क्षेत्रीय संसद सदस्य श्री राम नईक ने अपने अध्यक्षीव भाषण में पार्क के विरोध का (जब पार्क का कार्य प्रारम्भ हुआ था, तब नाईक ने गांव की असुविधाओं को बताते हुये पार्क बनाने के लिये विरोध व्यक्त किया था) स्पष्टीकरण देते हुए सरकार से मांग की कि नये प्रोजेक्ट को ध्यान में रखते हुए मनोरंजन टैक्स की छूट दी जाये। विशेष अतिथि श्री शरद पवार ने अपने वक्तव्य में पार्क को अद्वितीय बताया।

श्री सुभाष गोयल ने स्मृति चिह्न के रूप में श्री शरद पवार को तथा श्री नाईक को मिमी की प्रतिमा भेंट की तथा आये हुए सभी अतिथियों को एवं पत्रकारों को मिमी प्रतिमा भेंट की। उन्होंने आने वाले वर्ष में पार्क जनता को समर्पित करने की घोषणा भी की। इस कार्यक्रम का संचालन श्री स्वरूपचन्द गोयल (मन्त्री-अग्रोहा विकास ट्रस्ट) ने किया। कार्यक्रम के पश्चात् सह-भोज का सुन्दर आयोजन हुआ।

आवश्यक सूचना

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन का राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक २८, २९ अप्रैल १९९० को बम्बई महानगर में आयोजित होने जा रहा है। इस अवसर पर सम्मेलन के १५ वर्ष की विकास-यात्रा स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है। सभी समाज बन्धु सादर आमंत्रित हैं।

अधिक जानकारी हेतु अ. भा. अग्रवाल सम्मेलन के महामंत्री श्री प्रदीप मित्तल डी-५७, साउथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली-४९ पर सम्पर्क करें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :

दूरभाष : 251 1674

भारत अलंकार भंडार

1191, कूंचा महाजनी, चांदनी चौक,
दिल्ली - 110 006

सभी प्रकार के चांदी जेवरात व फैंसी बर्तन
के थोक विक्रेता

जयनारायण खण्डेलवाल (मेठी)
फोन-निवास 5715293, 5729492

With best compliments from :

Offi. 512403, 514741, 520647
Phones : Fac. 51 11 10 77 84 51
Resi. 5471034, 5471064

JINDAL PLASTIC ENTERPRISE

Manufacturers and Suppliers of :

All types of PVC, Polypropylene, H. M. Polythene, Films,
Tubings, Sheetings, Bags, Sutli, Strips, Novelties,
Screen and Flexo Prints, PVC Rigid and TV Covers

6127/2, Nabi Karim, Jhandewalan Road,
New Delhi-110055

JAI BHAGWAN JINDAL

सुदृढ़ संगठन ही समस्या का हल

—विष्णु चन्द्र गुप्त, दिल्ली

वैश्य समाज भारत की जनसंख्या में लगभग १० करोड़ जनसंख्या का योगदान रखता है, फिर भी उपेक्षित है। लोक सभा चुनाव में ५२९ सीटों के चुनाव में केवल ९ संसद सदस्य, सर्वश्री धर्मपाल सिंह गुप्ता, कमल नाथ, प्यारे लाल खण्डेलवाल, रमेश वैश्य व श्रीमती सुमित्रा महाजन (सभी मध्यप्रवेश से), श्री मुरली देवराजी (महाराष्ट्र), श्री गूमनमल लोढा (राजस्थान), श्री जनकराज गुप्ता (जम्मू) व श्री जयप्रकाश अग्रवाल (दिल्ली), चुनकर आये हैं। इसी प्रकार विधानसभा के चुनावों में केवल १० विधायक सर्वश्री बसंतलाल गुप्ता, कृष्ण कुमार नवमान, नरेश अग्रवाल, परमात्मा शरण गुप्ता, पवन ऐरन, राजेश्वर बंसल, रविकान्त गर्ग, सुरेन्द्र गोयल, सत्य प्रकाश विकल, सोमान्स प्रकाश व योगेन्द्र कुमार अग्रवाल (सभी उत्तर प्रवेश से) चुन कर आये हैं। राजकीय सम्मान पद्मश्री व पद्मभूषण आदि में भी वैश्य समाज उपेक्षित है। बम्बई के डॉ० बालकिशन गोयल को केवल पदमभूषण प्राप्त हुआ है। राज्यपालों की सूची देखें तो कोई भी इस योय नहीं ठहराया गया। इसी तरह आगामी ८ राज्यों में होने वाले विधान सभा चुनावों में विभिन्न दलों की ओर से जो प्रत्याशी खड़े किये गये हैं, उसमें वैश्य बन्धुओं की संख्या प्रायः नगण्य हैं। सिर्फ भाजपा ने अन्य दलों से कुछ अधिक वैश्य बन्धुओं को अपना प्रत्याशी बनाया है। लेकिन संख्या भी २०-२५ के बीच तक ही लगती है।

उपर्युक्त सारे विश्लेषण का अभिप्राय यह है कि आज वैश्य समाज संख्या में अधिक होने पर, आर्थिक दृष्टि से देश को समृद्धि प्रदान करने वाला वर्ग होने पर, औद्योगिक विकास में अग्रणी रहने पर, शिक्षा के क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ने पर, व्यवसायिक निपुणता प्राप्त करने पर तथा सामाजिक श्रेष्ठता प्रदर्शित करते रहने पर भी उपेक्षित क्यों है ? तिरस्कृत क्यों है ? यह बात हमारे लिए विचारणीय है। कहावत प्रसिद्ध है कि 'सात मामाओं का भांजा भूखा ही रह जाये' अर्थात् जिसके सब होते हैं, वह किसी का नहीं होता और जो सबका होता हैं, उसको कोई नहीं पूंछता। आज हमारी स्थिति यही है कि हम विभिन्न दलों के साथ ताल-मेल बैठाते हुए व चन्दा देते हुए उनको मजबूत बनाने के चक्कर में किसी के भी नहीं बन पाये। हरेक पार्टी ने हर प्रकार से वैश्य समाज की उपेक्षा ही की है।

आज के युग में वोट बैंक का अपना महत्व है। उसी के दबाव में टिकटें दीं जाती हैं, पुरस्कृत किये जाते हैं और नियुक्तियां की जाती हैं। अतः वैश्य समाज को अपने संगठन को राष्ट्रव्यापी सुदृढ़ स्वरूप प्रदान करना होगा। अपने में से योग्य बन्धुओं का मान-सम्मान तथा उनकी प्रतिभा को प्रोत्साहन एवं प्रकाशित करना होगा। बिल्कुल सीमित और संयमित होने से काम नहीं चलने वाला। हमें सर्प की तरह विषैला बनकर किसी को डसने या हानि पहुंचाने की कभी भी चाह नहीं रही तो इसका अभिप्राय यह तो नहीं कि हमारे अस्तित्व को ही नकार दिया जाये। अस्तित्व की रक्षा के लिये यह आवश्यक है कि हम समय-मम्य पर फुंकारते तो अवश्य रहें। निरन्तर देते रहने के स्थान पर अपनी मांगें व्यवसाय के हित में, नौकरी के हित में, राजनीति में तथा सम्मान आदि अवसरों पर प्रतिनिधित्व पाने के लिए करते रहें। बिना रोये तो मां भी बच्चे को दूध नहीं पिलाती। अतएव अपनी शक्ति, सामर्थ और प्रतिभा का बोध कराते रहने की आवश्यकता है।

With Compliments from

For better living always use

Royale 'Touche'

LUXURY LAMINATES

TOUCH WOOD

DECORATIVE LAMINATES

For all your furniture work
and Panelling Job

*

WHOLESALERS FOR NORTHERN INDIA

Ganga Sales Corporation

Residence :

48, Model Basti,
New Delhi-110005
Tel. : 52 08 77

Office :

4/2, D. B. Gupta Road,
Paharganj, New Delhi-55
Phone : 518164, 770557
Gram : 'GANGASALES'

INDRAJ SINGH AGGARWAL

Vaish International Pariwar (Ragd.)

Report by-Lakshmi Narain Agarwal, Sansthapak

Respected Brother,

In the Working Committee meeting of the Institution held on 1-1-1990 the activites of the institution during the last 3 Years i. e. 1987, 1988 and 1989, were reviewed. The following report was approved and it is circulated for your kind information.

Vaish International Pariwar was set up in December 1986 with a view to forge greater unity amongst the members of vaish Community. It was granted registration by the Registrar of societies, Delhi in 1987.

In Ouest of Unity :

The Founder-Director of the Institution, Agarbandhu Lakshmi Narain Aggarwal and its Hon'ble Member L. Nand Kishore Gupta, undertook a tour of India. The entire Eastern belt from Calcutta to Nagaland, the Southern Belt from Madras to Kanya Kumari, Haryana, parts of U. P. and Rajasthan, entire Madhya Pradesh and Orissa were covered by their tour in the years 1986 and 1987. The Founder-Director toured South East Asia; Singapore, Bangkok and Pattays in Feb. 1988 and seven countries of Europe is Italy, Switzerland, W. Germany, Netherlands, Belgium, France and U. K. in May-June 1988. The Executive Director Shri Shiv Dutt Gupta, visited Indonesia, Mauritious and Europe in March, April and Sep. 1989 respectively. One of our members, L. Khushi Ramji is in Canada.

It was observed that there are Vaish/Aggarwal Organisation all over India, except in some Parts of South India. There is a Vaish Sabha in Singapore and one in London. It was also observed that the existing organisations were doing appreciable social work of providing shelter and relief to the needy and the poor and are awakening the Vaish Community to the existing social problems and their removal etc., but little attention was paid to the much needed process of unity, except by the the All India Aggarwal Sammelan and the All India Vaish Federation. It was also observed that a large section of our Community people, who, due to passage of time, have become Bengali, Assamese, Gorkhas in East and similar others in South are not associated with these existing organisations.

The institution has appealed that for greater unity, all the sections of our people, particularly the weaker sections in North India, the Bengalies, Assamese, Gorkhas and Nagas in East and the Southern people must be taken along and form a part and percel of our activities. The existing organisation should be established where there is none. No individual/organisation should be settled by mutual deliberation.

Agarsen Jayanti/Agarsen-ki-Baoli :

The institution since its inception has been celebrating Agarsen Jayanti at Agarsen-ki-Baoli with a veiw to focuss attention of our people, on the Baoli. On 24-9-87 (i.e. 1987 Jayanti) a peace march was organised from Rajghat to the Baoli. Meetings were held on 11-10-88 and 30-9-89 (in 1988 and 1989 Jayanti Day).

Agarsen-ki-Baoli is situated at the crossing of Kasturba Gandhi Marg & Haily Road, New Delhi (Near 1, Haily Road).

शुभ कामनाओं सहित :

सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने के लिए
यदि स्वयं का एवं सगे-सम्बन्धियों का
बलिदान भी करना पड़े
तो पीछे नहीं हटना चाहिये

—'महाभारत'

रतन लाल गर्ग

संरक्षक—वैश्य सभा, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली
फाउण्डर ट्रस्टी—श्री राधा कृष्ण मन्दिर ट्रस्ट, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली
उप-प्रधान—डिवाइन लाइट मिशन, हरिद्वार
फाउण्डर सदस्य—अग्रोहा डेवलपमेंट बोर्ड, हरयाणा सरकार, अग्रोहा (हरियाणा)

R-7, नेहरू एन्क्लेव, (AC-7 कालका जी)
नई दिल्ली - 110 019
फोन : 6435220, 6430284

शुभ कामनाओं सहित :

धार्मिक पुस्तकें जैसे—
हनुमान चालीसा, दुर्गा चालीसा, श्री कृष्णायन

रामायण मनका १०८

इत्यादि ।

मुफ्त प्राप्त करने के लिए कृपया पधारें—

श्याम प्रेस

4678, डिप्टी गंज, सदर बाजार
दिल्ली - 110006
फोन : 523926, 773969

श्याम सुन्दर गुप्ता

This ancient monument was builty by our ancester, Maharaja Agarsen. It is now a centrally protected monument, under the charge of Archaeological Survey of India, but completely neglected. A part of the Baoli area has aleary disappeared. A big, influential building agent is bent upon to construct a multi-storeyed structure at 1, Hailey Road, in violation of the Rules and the authorities are sleeping. This instritution demands that the Baoli be handed over to us for its security, protection, preservation, beautification and maintenance. The institution appeals to all the Vaish Organisations in India and abroad to press for this demand and to focuss all their activities regarding Agarsen Jayanti towards this end. Agarsen Jayanti should be celebrated on the Jayanti Day alone and the Central Govt. be urged to declare this day as a Public Holiday. This year the Jayanti falls on **Wednesday, the 19th September, 1990**

The institution observes 16th Dec., the day on which it was formerly set up, as a 'CHETNA DIWAS', to draw the Communitys' attention to the durning topics of the day.

Elections to Haryana Assembly were held on 17-6-87. Our community leaders from Haryana, actively participated in the 'Sanghars Samiti' of Ch. Devi Lal (Lokdal 'B') but oniy one ticket of MLA was given to Shri B. D. Gupta. This question was the subject of discussion on the Chetna Diwas in 1987. In the subsequent year in 1988, it was impressed that our representation in the Govt. is diminishing and we should have greater participation in politics. In the year 1989, Loksabha elections were held on 22-11-1989. The National Front/Janta Dal did not give even a single ticket to a Vaish. This situation and the ensuing Assembly Elections in March 1990 in some States were considered on the Chetna Diwas on 16-12-89.

Your suggestions are always welcome. The Institution wishes you a Happy New year.

With kind regards, □

अग्रोहा भ्रमण

दिल्ली—वैश्य इन्टर नैशनल परिवार (रजि०) के तत्वावधान में एक शिष्ट मंडल 4 फरवरी ~~89~~ 90 को अग्रोहा दर्शन के लिये दिल्ली से अग्रोहा गया। इसमें संस्था के संस्थापक अग्रबन्धु लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, एक्जीक्युटिव डायरेक्टर श्री शिवदत्त गुप्ता, मन्त्री श्री चन्द्रमोहन गुप्ता, सदस्य श्री जय भगवान जी, श्री पुरुषोत्तम गर्ग, श्री ऋषि प्रकाश गुप्ता, श्री हंसराज गुप्ता, श्री महेन्द्र कुमार महेश्वरी, श्री नन्द किशोर गुप्ता एवं मास्टर पुनीत तथा मास्टर पवन गुप्ता थे। सर्व प्रथम हिसार में श्री बलवन्त राय तायल जी ने अपने निवास स्थान पर हमारा स्वागत किया। उसके बाद अग्रोहा धाम पहुंचने पर श्री नन्दकिशोर गोयनका जी ने सभी का स्वागत किया। और निर्माणाधीन मन्दिर व शक्ति सरोवर का निरिक्षण करवाया। अग्रसेन मन्दिर परिसर व शक्ति सरोवर के निर्माण की सभी ने सराहना की। श्री शिवदत्त गुप्ता जी ने सरोवर पर बन रहे कमरों हेतु 33333/- रु० की राशि का अनुदान देकर समाज का गौरव बढ़ाया। भोजन करने के उपरान्त टीलों को देखा तथा खुदाई में निकली दीवारों आदि का निरीक्षण भी किया। तत्पश्चात अग्रोहा विकास संस्थान (बम्बई) द्वारा निर्माणाधीन सती शीला की मढ़ी पर विशाल मन्दिर देखा। मन्दिर की नक्काशी के कार्य ने सभी का मन मोह लिया। इसके उपरान्त मेडीकल कालेज बनाने हेतु भूमि पूजन वाली जगह देखा। फिर महाराजा अग्रसेन के जयकारे के साथ अग्रोहा से दिल्ली आ गये।

With best compliments from :

Gram : BANSALKEM *Telex : 031-78112 RGA IN*

Ramkishore Chemical Co. Pvt. Ltd.

R. K. ASSOCIATES

235, Katra Peran, Tilak Bazar
Delhi-110006

Phone : Offi. 2912682

शुभ कामनाओं सहित :

N. R. C. BHATTA CO.

एन० आर० सी० भट्टा कम्पनी

FD-52 विशाखा एन्क्लेव, पीतमपुरा,
दिल्ली - 1 1 0 0 3 4
फोन : 7125341

बृज मोहन गुप्ता

अग्रवाल समाज को गौरव—

श्रीमती सन्तोष आनन्द गोयल

५ सितम्बर १९८९ को महामहिम राष्ट्रपति भारत सरकार से राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त करने वाली जींद की प्रथम महिला शिक्षक श्रीमती सन्तोष आनन्द गोयल हैप्पी सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल जींद में प्रधानाचार्य पद पर कार्यरत है। ये अपने छात्र जीवन से ही मेधावी छात्रा रही है, जहां इनकी शैक्षणिक योग्यता एम० ए० (लोक प्रशासन, रा. शास्त्र), बी-एड० है। वहां इन्होंने एम० ए० (रा. शास्त्र) में विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

अंग्रेजी विषय के शिक्षक के रूप में अपने विषय की पारंगता एवं विलक्षण तरीके से पढ़ाने की कला के परिणामस्वरूप इनके व्यक्तिगत परीक्षा परिणाम सदैव शत-प्रतिशत एवं गुणात्मक दृष्टि से भी उत्कृष्ट रहे हैं। गत १२ वर्षों में ५६० विद्यार्थी योग्यता सूचि में आये हैं, विद्यालय परिणाम सदैव लगभग शत-प्रतिशत रहे हैं।

जब इन्होंने वर्तमान विद्यालय में पदार्पण किया तब यह १७० विद्यार्थियों वाला माध्यमिक विद्यालय था, जिसमें केवल ७ कमरे थे। आपके अथक प्रयास व प्रबंध समिति अभिभावक छात्र परिषद के सहयोग के फल-स्वरूप अब यह विद्यालय तीन मंजिल में तीन भवनों में लगता है, इनमें सभी आधुनिक शिक्षण सुविधाओं सहित ५३ नये कमरे जोड़े गये हैं, केवल सीनियर सेकेण्डरी कक्षाओं के विभिन्न वर्गों (विज्ञान, मानिकी व वाणिज्य) में ९० छात्राएं हैं जबकि कुल छात्र संख्या लगभग तीन हजार हैं।

विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास इनके शिक्षण का मुख्य ध्येय है। पढ़ाई के अतिरिक्त खेलकूद में राष्ट्रीय स्तर तक विद्यार्थियों ने भाग लिया है। विज्ञान प्रतियोगिता, पेंटिंग, चित्रकला, भाषण एवं कविता प्रतियोगिताओं में भाग लेना, ऐतिहासिक भ्रमण, विद्यालय पत्रिका के माध्यम से वार्षिक उत्सव आयोजन आपके एक अनुकरणीय शिक्षक होने का द्योतक है।

विद्यालय के उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम, राष्ट्रीय बचत योजना, संचायिका स्कीम, रक्तदान परिवार नियोजन, वृक्षारोपण, विद्यालय खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों हेतु इन्हें समय-समय पर हरियाणा विद्यालय बोर्ड, जिला प्रशासन, रोटरी क्लब, इनर व्हील क्लब, भारत विकास परिषद व हरियाणा राज्य शिक्षा पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित :

राजेश प्रकाशन का उत्कृष्ट प्रकाशन 1978 से प्रकाशित
अकाट्य, सीधे सटीक सम्पर्क के लिये
मुद्रण तकनीक एवं सम्बन्धित उद्योगों व व्यवसाइयों की
भारत की प्रथम व एकमात्र हिन्दी पत्रिका

मुद्रण परिवार

(Mudran Parivar)

पाठक—शासन, प्रशासन, सार्वजनिक व निजी सभी क्षेत्रों में
सम्पादक : **एन. सी. जैन**
(लेखक—लैटर प्रेस, तकनीक, स्क्रीन प्रिंटिंग गाइड परीक्षा कला)
शुल्क : राजेश प्रकाशन के नाम देय 250/- संरक्षक 1001/-

1203/81, त्रिनगर, दिल्ली110 035

With best compliments from :

Maruti Chemical Company

Dealers in Chemicals and Solvents

★

PARKASH OIL

Distributors of :

Hindustan Petrolium Corporation Limited

Dealers in :

Quality Pertolium Products

1855, Khari Baoli, Delhi-110006

Phones : Offi. 2526540, 2511848

Parvin Kumar Gupta

With best compliments from :

Mahavira Properties

Builders, Contractor and Finance Adviser

Sector 8, Pocket F-17, Plot No. 176

Rohini, Delhi-110034

Phones : Offi. 7272319

V. K. Jain	Shanshah	Rajesh Goel
Resi. 7221987	7271656	7125461

अपील

अग्रोहा की पुरातत्व ऐतिहासिक वस्तुओं को सुरक्षित रखना अग्रवाल बन्धुओं का परमकर्तव्य है। इसी कर्तव्य एवं भावना को सामने रखकर अखिल भारतीय महाराजा अग्रसेन वंश इतिहास शोध संस्थान की स्थापना की गई थी और पुरातत्व की महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह किया गया। इस दुर्लभ सामग्री को सुरक्षित रखने और प्रदर्शन हेतु अग्रोहा में पुरातत्व वस्तुओं के लिए संग्रहालय भवन निर्माण योजना माता शीला शक्ति मन्दिर के प्रांगण में करने की बनायी गयी है। इस योजना की पूर्ति हेतु सरकार द्वारा ८०-जी का प्रमाण-पत्र नं० सी. आई. टी. ८०-जी/२२० (५० ए) २८५६-९० दिनांक १-४-८९ से ३१-३-९२ तक का प्राप्त हो गया है। इस संग्रहालय में पुरातत्व वस्तुओं के अतिरिक्त भगवान सूर्य, भगवान राम, सम्राट विक्रमादित्य शालीवाहन, तान, श्री वल्लभ, अग्रसेनजी की युवा अवस्था उनके पुत्रों व अन्य अग्रवाल पूर्वजों की मूर्तियां भी बनवा कर रखी जाने की योजना है। बहुत से पूर्वजों की मूर्तियां, जो कि प्राचीन गुफाओं में अंकित थी, चित्र प्राप्त कर लिये गये हैं। कृपया इस कार्य की पूर्ति हेतु अग्रवाल बन्धु अधिक से अधिक अनुदान व सहयोग देने की कृपा करें। अनुदान की राशि का ड्राफ्ट अग्रोहा बैंक का बनवा कर जींद के पते पर भेजें। उपरोक्त महत्वपूर्ण सामग्री के आधार पर अग्रवाल इतिहास शोध ग्रन्थ लिखा जाकर उसके दो संस्करण बिना शुल्क संस्थान की ओर से वितरण हो चुके है। इस इतिहास को महाराष्ट्र व अन्य प्रान्तों के अनेक इतिहासकार विद्वानों ने प्रमाणित और अनुमोदित किया है। महाराष्ट्र एवं गुजरात राज्य सरकारों ने अपने पुस्तकालयों में रखने हेतु मंगवाये हैं।

निवेदक : **शशि पाल गर्ग** (महामन्त्री)
अखिल भारतीय महाराजा अग्रसेन वंश इतिहास शोध संस्थान
सफीदों रोड, जींद (हरियाणा)

शुभ कामनाओं सहित :

अच्छे व सभ्य नागरिक बनने के लिए
भाषा, भोजन और वेशभूषा में
भारतीयता का परिचय देकर गर्व अनुभव करें।

निवेदक :
पुरुषोत्तम गर्ग, अध्यक्ष
अखिल भारतीय अग्रवाल पंचायत
सी-4/7 मॉडल टाउन, दिल्ली-9

मोलु राम कपुर चन्द

ग्रेन मर्चेन्टस एण्ड कमीशन एजेन्ट

४०८२, नया बाजार, दिल्ली-११०००६

दूरभाष—कार्यालय : 2922768, 2926479 निवास : 7128283, 7123330

With best compliments from :

MAHALAXMI SALES CORPORATION

Authorised Dealers :

Mahalaxmi and ISI Norco Electrical Wires and Cables

Hard Drawn Copper Wires Bright Annealed Copper Hard and Soft ALLUMINIUM Wires in all Sizes according to ISI Specification and Polythene warpping Paper and General Order Suppliers

1502, Ram Gali, Bhagirath Palace,
Chandni Chowk, Delhi-110006

Phones :

Offi. 233479 Resi. 525483, 522718

Prop. BISHAN DAYAL GOYAL

With best compliments from :

MITTAL METAL WORKS

Manufacturers and Suppliers of :

High Class Brass and Aluminium Eyelets,
Web Fitting and Tent Components etc.

64, Model Basti, New Delhi-110005

★

Model Hosiery Industries

Manufacturers of :

High Class Cotton Niwar, Wed & Tape of all sizes

Factory :

A-92, Group Industrial Area,
Wazirpur, Delhi-110 052
Phones : Offi. 526548, 519157 Fac. 7119248

अग्रवाल सामूहिक विवाह सम्मेलन

भोपाल—आपको सूचित करते हुये अत्यन्त प्रसन्नता है कि **'अग्रवाल नवयुवक मण्डल'** भोपाल द्वारा भोपाल नगर की सभी अग्रवाल संस्थाओं के सहयोग से भोपाल में **अग्रवाल सामूहिक विवाह सम्मेलन** दिनांक 27 अप्रैल 90 शुक्रवार (बैसाख सुदी 3, अक्षय तृतीया) को आयोजित किया जा रहा है।

सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने और समय, श्रम व धन की बचत के लिये ऐसे सम्मेलन समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। अत: आपसे अनुरोध है कि आप अपने क्षेत्र के विवाह योग्य युवक/युवतियों के अभिभावकों को इस आयोजन में सम्मिलित होने की प्रेरणा दें तथा आयोजन को सफल बनाने के लिये भोपाल अवश्य ही पधारें।

प्रत्येक वर एवं वधु के साथ उनके परिवार के सदस्यों सहित 25-25 सदस्यों के ठहरने एवं भोजन की उचित व्यवस्थायें समिति की ओर से होगी। आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि आपका सहयोग हमें प्राप्त होगा। अधिक जानकारी हेतु प्रचार मन्त्री श्री कैलाश मंगल से निम्न पते पर पत्राचार करें :—

पता—होटल रतन, 81-मारवाड़ी रोड, भोपाल (म. प्र.) फोन-543163

फार्म-४

(नियम ८ देखिये)

प्रकाशन स्थान	—21/33 शक्तिनगर, दिल्ली-7
प्रकाशन अवधि	—मासिक
मुद्रक का नाम	—पवनदीप प्रिंटर्स
क्या भारत का नागरिक है ?	—भारतीय
पता	—21/33 शक्तिनगर, दिल्ली-7
प्रकाशक का नाम	—चन्द्र मोहन गुप्ता
क्या भारत का नागरिक है ?	—भारतीय
पता	—21/33 शक्ति नगर, दिल्ली-7
सम्पादक का नाम	—चन्द्रमोहन गुप्ता
क्या भारत का नागरिक है ?	—भारतीय
पता	—4421 नई सड़क, दिल्ली-6
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	—चन्द्र मोहन गुप्ता

मैं चन्द्र मोहन गुप्ता एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

चन्द्र मोहन गुप्ता

दिनांक 28-2-90

प्रकाशक के हस्ताक्षर

With best compliments from :

STOREX

WATER TANKS

Ramdhari Ramphal

Head Office :
3470, Gali Bajrang Bali,
Chawri Bazar, Delhi-110006
Phones : 266553, 3276801

Branch Office :
3840, Arya Samaj Road,
Karol Bagh, New Delhi-110005
Phones : 5711376 Resi. 5718317

Authorised Distributor of :

* Hindustan Fleshwell ISI Marked Cisterns
* Parshuram, Khodiar Sanitary Wares and Tiles
* Johnson Tiles and Sanitary Wares
* Secco C. P. Bath Room Fittings
* ISI CI Pipes and Fitting Main Hole Covers
* Storex and Sintex Water Storage Tanks

With best Compliments from :

Sandeep Chemical Corporation

Dealers in :

All Kinds of Chemical and Solvents

239, Katra Peran, Tilak Bazar, Delhi-110006

Phones:

Offi. 237185, 2920222, 2920333 Resi. 7226007

□

Associate :

361, Vakil Building, Samual Street,
Bombay-400 003 (B. R.)

Phones : Off. 323100 Resi. 6723348

M. P. GUPTA

With best compliments from :

PARKASH LUBE & CHEMICALS

Dealing in :— All Kinds of Lubricating Oils & Chemicals

POST BOX NO. 1555
1853, KHARI BAOLI, DELHI - 110 006

PLEASE — DIAL

Off. :	Res. :	Gown . :
2514275	2521027	2528645
2527554	2523532-33-34	593575

OTHER SISTER CONCERNS :

PARKASH OIL MARKETING,
1853, KHARI BAOLI, DELHI - 6

●

PARKASH COMMERCIAL ASSOCIATES,
1853, KHARI BAOLI, DELHI - 1100 006.

●

PARKASH SONS (INDIA),
BHOLA RAM MARKET, MORI GATE, DELHI - 110 006.

●

PARKASH MARKETING COMPANY,
GOEL TRACTOR MARKET,
MORI GATE, DELHI - 110 006.

●

QUEEN'S ROAD SERVICE STATION,
I.O.C. PETROL PUMP, KAURIA PUL, DELHI - 110 006.

D (DN) 275 RN/16412/68

With best compliments from :

शिक्षा शास्त्र प्रवीण सुधी साहित्य प्रचारक,
लेखक, वक्ता, नेता, चेता, विस विचारक।
निस्पृह सेवक कर्मनिष्ठ गुरु, हिन्दी पंडित,
विनय, स्नेह, सुचिता, ऋजुता गुण गरिमा मंडित।
समता रही सदैव कथन में और कर्म में,
सत सेवा वृत धार रमे शिक्षा सेवा में।
विष्णु चन्द्र ने नित समाज सेवा अपनाई,
इसीलिये तो कीर्ति कौमुदी चहु दिशा छाई।

– स्व. वैद्य निरजंन लाल गौतम
(8-11-1981)

FOTO-ME

The 5-minute color photo Solt-machine

B.L. & Co. (Regd.) Chemists

50/1, Yusaf Sarai Market,
New Delhi - 16

Tel. : 668511, 666819

(TUESDAY CLOSED)

'अग्रोहातीर्थ' के सम्पादक व प्रकाशक चन्द्रमोहन गुप्ता द्वारा पवनदीप प्रिन्टर्स, 21/33, शक्ति नगर, दिल्ली-7 से मुद्रित कराकर अपने कार्यालय 4421, नई सड़क, दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।